21वीं सदी के चुनिंदा उपन्यासों में किन्नर चेतना

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

ईशिता प्रदीप मयेकर

अनुक्रमांक: 22P0140016

PR Number: 201802535

मार्गदर्शक

स्वेता प्रसाद गोवेकर

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक: श्वेता प्रसाद गोवेकर

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, "21vin sadi ke chuninda upanyason mein kinnar chetana" is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Ms. Sweta Prasad Govekar and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Ishita Pradeep Mayekar
22P0140016

Date:16th April 2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "21vin sadi ke chuninda upanyason mein kinnar chetan" is a bonafide work carried out by Ms. Ishita Pradeep Mayekar under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Sweta Prasad govekar

Date: 16th April 2024

Signature of Prof. Anuradha wagle

Dean, SGSLL, Goa University

GOA UNIVERSITY SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE TALEIGAON PLATEAU

School Stamp

Date:16th April 2024

Place: Goa University

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgments	II & III
	अनुक्रम	IV
	भूमिका और कृतज्ञता	V & VIII
१	**प्रथम अध्याय: किन्नर: एक परिचय** 1.1 किन्नर: अवधारणा एवं स्वरूप 1.2 न्यायालय द्वारा किन्नरों के अधिकार पौराणिक काल से वर्तमान तक किन्नरों का संदर्भ	1-21
२	**द्वितीय अध्याय: इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किन्नर चेतना** 2.1 हिंदी उपन्यास: अवधारणा एवं स्वरूप 2.2 चेतना का अर्थ एवं स्वरूप 2.3 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किन्नर चेतना	22-48
३	**तृतीय अध्याय: नीरजा माधव तथा प्रदीप सौरभ द्वारा लिखित उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन** 3.1 नीरजा माधव लिखित 'यमदीप' उपन्यास की समीक्षा 3.2 प्रदीप सौरभ लिखित 'तीसरी ताली' उपन्यास की समीक्षा	49-74
४	**चतुर्थ अध्याय: 21 वीं सदी के चुनिंदा उपन्यासों में किन्नर चेतना** 4. परिचय 4.1 'यमदीप' उपन्यास में किन्नर चेतना 4.1.1 किन्नर समुदाय में उत्पन्न चेतना 4.1.2 पात्र मानवी द्वारा उत्पन्न चेतना 4.2 'तीसरी ताली' उपन्यास में किन्नर चेतना 4.2.1 हिजड़ा समुदाय की चेतना 4.2ए.2 समलैंगिक समुदाय की चेतना	75-90
५	**उपसंहार**	91-93
६	**संदर्भ सूची**	94-96

७	**परिशिष्ट** मिलन बिश्नोई का साक्षात्कार	**97-103**
८	**Library Certificate**	**104**
९	**Attendance Certificate**	**105**

कृतज्ञता

किन्नर समुदाय पर आधारित विषय '21 वीं सदी के चुनिंदा उपन्यासों में किन्नर चेतना' स्वीकृत नहीं हो पाता तो मेरा यह लघु शोध प्रबंध नहीं संभव ही नहीं था । इस विषय को लेकर आगे बढ़ने के लिए, प्रोत्साहित करने के लिए मैं मेरी शोध निर्देशक सहायक प्राध्यापिका श्वेता प्रसाद गोवेकर का आभार व्यक्त करती हूँ। उन्होंने अपनी किताबें देकर तथा अन्य पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के नाम बताकर मुझे इस शोध प्रबंध को पूरा करने में काफ़ी सहायता की।

इस शोध प्रबंध को पूरा करने में शणै गोंयबाब भाषा एवं साहित्य संकाय के सभी प्राध्यापकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। सभी प्राध्यापक जैसे उप-अधिष्ठाता प्रो. वृषाली मांद्रेकर ने प्रोत्साहित किया, हिन्दी अध्ययन शाखा के निदेशक डॉ. बिपिन तिवारी ने मुझे किन्नर प्रोफ़ेसर से बात करने की सलाह दी। विभाग के अन्य प्राध्यापक गण सहायक प्राध्यापक आदित्य सिनाय भांगी, दीपक वरक, ममता वेर्लेकर और मनीषा गावडे ने मार्गदर्शन करने के कारण मैं उन सभी का तहे दिल से ऋणी हूँ। मेरी महाविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ. विभा लाड की मैं आभारी हूँ। उन्होंने अपनी किताबों दी जो मेरे शोध प्रबंध के लिए काफ़ी महत्वपूर्ण साबित हुई।

साथ ही मेरे विषय से संबंधित साक्षात्कार देने के लिए मैं डॉ. मिलन बिश्नोई का भी तहे दिल से आभारी हूँ। गोवा विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल तथा कर्मचारियों का भी जिन्होंने किताबें ढूँढकर देने के लिए आभार व्यक्त करती हूँ। साथ ही मेरे स्नातकोत्तर कला हिन्दी के मित्रों द्वारा किए गए मदद के लिए मैं उनकी भी आभारी हूँ।

भूमिका

साहित्य सदा समाज की घटनाओं को पूरे यथार्थपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करता आया है। प्राचीन काल में काव्य के माध्यम से मानव जीवन में घटित सभी घटनाओं का चित्रण किया जाता था किन्तु आधुनिक काल में गद्य के माध्यम से मानव जीवन के यथार्थ का चित्रण लिखा जाने लगा। इस विधा में उपन्यास विधा को बड़ा महत्व मिला है। स्वतंत्रतापूर्व उपन्यासों में केवल मनोरंजन, तिलस्मी, जासूसी, अय्यारी, ऐतिहासिक आदि उपन्यास लिखे गए, किन्तु आजादी के पश्चात उपन्यासों में समाज में उपस्थित संघर्ष एवं समस्याओं का चित्रण मिलता गया। कहना न होगा कि समाज के हाशिये पर रहते समुदायों की अस्मिता तथा उनके संघर्ष को दिखाने के लिए कई विमर्शों की शुरुआत की है।

21वीं सदी के प्रारंभ में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, विकलांग विमर्श, वृद्ध विमर्श एवं किन्नर विमर्श की शुरुआत हुई हैं। ऐसे तमाम विमर्शों के माध्यम से इसके तहत आने वाले लोगों ने अपने अस्तित्व तथा अस्मिता के लिए आवाज उठाया है। उपन्यासों के माध्यम से उनकी संवेदनाओं एवं समस्याओं का चित्रण किया गया है। इन विमर्शों के माध्यम से राष्ट्र चेतना एवं लोगों के बीच जागरूकता लाने का प्रयास किया गया है। आलोच्य शोध प्रबंध में सदियों पुराने किन्नर समुदाय के इतिहास से लेकर वर्तमान समय में उसके स्थान एवं स्थिति को दर्शाया गया है। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि प्राचीन

समय से लेकर अब तक समाज में उनके बदलते स्थान एवं स्थिति पर भी विचार किया गया है।

इस प्रबंध में मैंने शोध मार्गदर्शक की सहायता से नीरजा माधव का 'यमदीप' उपन्यास और प्रदीप सौरभ द्वारा कृत 'तीसरी ताली' उपन्यास का समीक्षात्मक विश्लेषण किया है। इस लघु शोध प्रबंध में थर्ड जेंडर समुदाय में उत्पन्न चेतना पर ज़्यादा जोर दिया गया है। हिजड़ों को रामायण में भगवान श्री राम ने वरदान दिया था जिसका पालन वे आज तक अपने जीवन को जीने के लिए करते हैं, किन्तु ऐसे भी हिजड़े है जो अपने जीवन में गलत मार्ग को चुनते हैं।

नीरजा माधव के उपन्यास 'यमदीप' में थर्ड जेंडर नाज़बीबी के संघर्ष को दिखाते हुये समाज द्वारा प्रताड़ित पागल के बच्चे को अपनाकर, उसकी पूरी ज़िम्मेदारी लेने की चेतना को इस प्रबंध में दिखाया है। उपन्यास की प्रमुख पात्र मानवी किन्नर समुदाय एवं स्त्रियों में जागरूकता एवं चेतना का निर्माण करती है।

प्रदीप सौरभ का लिखित उपन्यास 'तीसरी ताली' में किन्नरों की संस्कृति, उनके रीति-रिवाज, नैतिकता एवं अनैतिक भावों का चित्रण बड़े सुलभता से किया गया है। इसमें किन्नर समुदाय ने समलैंगिक लोगों से मिलकर अपने अधिकारों की माँग को कोर्ट तक ले जाकर चेतना का निर्माण किया है। 'किन्नर विमर्श' पर वैसे कई शोध कार्य किए गए हैं, किन्तु मैंने '21वीं सदी के चुनिंदा उपन्यासों में किन्नर चेतना' विषय पर लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है।

इस शोध प्रबंध को मैंने चार अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय में 'किन्नर: एक परिचय' में किन्नर की अवधारणा एवं स्वरूप को बताया है। न्यायालय द्वारा दिए अधिकारों को स्पष्ट किया है और प्राचीन काल से वर्तमान समय तक किन्नरों के अस्तित्व पर बात की है।

द्वितीय अध्याय में 'इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किन्नर चेतना' शीर्षक के अंतर्गत स्वतंत्रतापूर्व एवं स्वतंत्रोत्तर हिंदी उपन्यासों पर चर्चा की है। इसी के साथ चेतना के अवधारणा एवं स्वरूप को स्पष्ट किया है। हिंदी के अन्य उपन्यासों में चित्रित किन्नर चेतना पर बात की है।

तृतीय अध्याय में 'नीरजा माधव तथा प्रदीप सौरभ द्वारा लिखित उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन' के अंतर्गत नीरजा माधव के 'यमदीप' और प्रदीप सौरभ के 'तीसरी ताली' उपन्यास की समीक्षा की है।

चतुर्थ अध्याय में '21वीं सदी के चुनिंदा उपन्यासों में किन्नर चेतना' इस शीर्षक के अंतर्गत नीरजा माधव के उपन्यास यमदीप और प्रदीप सौरभ के उपन्यास तीसरी ताली को ध्यान में रखते हुए इन उपन्यासों के पत्रों द्वारा उत्पन्न चेतना को स्पष्ट किया है।

अंत में उपसंहार,संदर्भ सूची और परिशिष्ट में मिलन बिश्नोई का साक्षात्कार दिया है।

इस शोध का यही उद्देश्य रहा है कि किन्नर समुदाय के लोगों की वर्तमान स्थिति को दिखाना। किन्नरों के प्रति पाठकों का दृष्टिकोण बदलना तथा मुख्यधारा में उन्हें आदरपूर्वक स्थान प्रस्तुत करना ही इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

प्रथम अध्याय

किन्नर: एक परिचय

प्रथम अध्याय

किन्नर: एक परिचय

1.1 किन्नर: अवधारणा एवं स्वरूप

हम जिस समाज में रहते है वहाँ प्राचीन समय से केवल 'स्त्री' और 'पुरुष' वर्ग को ही अपनाया गया है। भले ही समाज में तीसरी योनि के लोग भी मौजूद हो किंतु आज भी समाज द्वारा उन्हें अपनाया नहीं जाता है। समाज में रहने वाले लोग उनकी वेशभूषा, पहनावा, आवाज, ताली बजाना आदि देखकर उनको समाज से बहिष्कृत करते हैं। भारत भर में अगर किसी व्यक्ति की पहचान करनी होती है तो हम सर्वप्रथम उसके लिंग के आधार पर करते हैं। किन्नर ऐसे व्यक्ति है जो स्वतंत्र पुरुष या स्त्री के लिंग में पैदा नहीं होते है। इसी कारण उन्हें समाज मुख्यधारा में नहीं रखते हैं। हम देख सकते हैं कि समाज में 'सेक्स' और 'लिंग' की बात की जाती हैं। 'सेक्स' याने मनुष्य की जैविकता की ओर संकेत करता है, वही 'लिंग' याने मानव की बाहरी संरचना जिससे मनुष्य का वर्ग यानी स्त्री या पुरुष के रूप में उसका अस्तित्व पता चलता है।

'लिंग' शब्द 'जीन्स' से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ वंश या प्रकार है।"[1] इस कथन से इस बात का पता चलता है कि हमारे समाज में प्राचीन काल से लिंग के आधार पर ही मनुष्य की पहचान करते आए हैं। समाज में जिसका लिंग स्पष्ट है उसे ही अपनाया जाता है और उन्हीं के प्रति संवेदना रखी जाती है।

समाज में सभी प्राणियों के प्रति संवेदनाएं जगाई जाती है किंतु 'हिजड़ा समुदाय' को आज भी पूरे संसार भर में बुरी नज़र से देखा जाता है। ऐसे लोगों का हर जगह अपमान किया जाता है। इसके पीछे का कारण यह है कि 'किन्नर समुदाय' अलिंगी देह से पैदा होता है और समाज में सिर्फ़ जिस प्राणी का लिंग स्पष्ट होता है उसे ही अपनाया जाता है। उनके अपने माँ बाप ही उन्हें बहिष्कृत करते हैं। इसी कारण वे आजीवन अपनी अस्मिता को बनाने के लिए संघर्ष

करते हैं। उदाहरण स्वरूप मैंने यहाँ 'मैं पायल' उपन्यास का एक गीत लिया है, जो किन्नरों की सामाजिक स्थिति को दर्शाता है।

'अधूरी देह क्यों मुझको बनाया।
बता ईश्वर तुझे यह क्या सुहाया।
किसी का प्यार हूँ न वास्ता हूँ।
न तो मंजिल हूँ मैं न रास्ता हूँ।
कि अनुभव पूर्णता का हो न पाया।
अजब खेल यह रह-रह धूप छाया।'[2]

इन पंक्तियों को पढ़कर हम यह पाते हैं कि किन्नर भगवान से पूछते हैं कि क्यों उन्हें इस प्रकार का जीवन दिया है। उपर्युक्त पंक्तियों से उनका दर्द झलकता है। इस गीत को किन्नर गुरु 'पायल' ने किन्नरों के यथार्थ एवं उनकी पीड़ा को दर्शाया है।

यहाँ तक कि जब वे अपने व्यवसाय के लिए गली मोहल्ले में जाता है तो उन्हें हीन नजरों से देखा जाता है। जो कोई उन्हें आते देखता है वह डरकर घर के अंदर भाग जाता है। समाज में ऐसे कई लोग है जो शारीरिक रूप से विकलांग पैदा होते हैं। उनके अपने परिवार वाले उन्हें अपनाने से इनकार करते हैं और समाज में उनकी बिलकुल भी इज्जत नहीं होती है। उन्हें अपने ही परिवार को छोड़कर दूसरी जगह जाना पड़ता है। जीवन जीने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। ऐसे में वे ही लोग उनका सहारा बनते हैं जो उसी प्रकार का जीवन जीने के लिए मज़बूर है। 'ट्रान्सजेंडर समुदाय' में अपनी जगह बना लेते हैं और यही उनका पूरा परिवार तथा सुख दुख का साथी बन जाता है।

1.1.1 .किन्नर शब्द का अर्थ

समाज में जो जिसका लिंग स्पष्ट नहीं होता है उसे किन्नर कहते हैं। 'किन्नर' शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है किम् +नर = किन्नर अर्थात् विकृत पुरुष, पुराणोक्त पुरुष जिसका सिर घोड़े का हो तथा शेष शरीर मनुष्य का हो। नर को इस संसार में पुंसत्व से युक्त माना

गया है तथा किम् का शब्दार्थ हुआ- 'क्या वो भी नर है क्या?' जिसका पुंसत्व पर प्रश्न चिह्न है, इसी अवधारणा से समाज में 'किन्नर' शब्द प्रचलित हुआ।"[3]

किन्नरों को न ही स्त्री का दर्जा मिला है और न ही पुरुष का। " 'किन्नर' शब्द का देश में प्रचलित अर्थ देखें तो हिमाचल में निवास करने वाले वे पहाड़ी लोग हैं जिनकी भाषा कन्नौरी , गलचा , लाहौली आदि बोलियों के परिवार की हैं।"[4]

'किन्नर' शब्द को हिमाचल के निवासियों को कहा जाता है। इस कारण वहां के रहने वाले लोग किन्नर शब्द को हिजड़ा समुदाय के लोगों को रखना उचित नहीं मानते हैं। वे इसका विरोध करते हैं। अगर हम किन्नौर प्रदेश के इतिहास पर प्रकाश डाले तो किन्नौर की आदिम जाति का

इसी बात पर ज़ोर डालते हुए नीरजा माधव अपनी पुस्तक में लिखती है:- "अपने उपन्यास में 'किन्नर' शब्द का प्रयोग न करने के कारण मेरा ध्यान स्वभावतः: उधर की ओर गया। शब्दकोशों में ढूंढा, राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक "किन्नर देश में" पढ़ा, बचपन में रटी हुई कविता "यदि होता किन्नर नरेश में....." याद आई। कई भी हिजड़ों के लिए यह शब्द प्रयुक्त नहीं था। वास्तव में किन्नर एक अलग जाति है।"[5] नीरजा माधव का यह जो उद्धरण है, उससे भी यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि 'किन्नर' शब्द 'हिजड़ा' शब्द का पर्याय शब्द नहीं हैं, बल्कि वह एक समाज में रहने वाली जाति हैं।

महा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने अपने 'किन्नर देश में' पुस्तक में यह उल्लेख किया है कि किन्नर या किंपुरुष देवयोनि हैं।[6] इस वाक्य से यह पता चलता हैं कि वे किन्नरों को देवयोनि की पीढ़ी मानते हैं।" किन्नर या किन्नर पुरुष देवताओं की एक योनि मानी जाती है अतः किन्नर देव योनियों की श्रेणी में प्रतिष्ठित हुए हैं जिनके अनेक उदाहरण मौजूद हैं।

किन्नौर को दूसरे नामों किनौर, कनावर, कुनावर तथा कनौरिड से भी जाना जाता है"।[7] इस कथन में कहीं भी तीसरी योनि का जिक्र नहीं आया है। इस बात से यह पता चलता है कि हिमाचल प्रदेश के जो लोग है उन्हें प्राचीन काल से ही किन्नर नाम से जाना जाता है।

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी विश्वकोश' जो 12 खण्डों में प्रकाशित है उसके 3 खण्ड में किन्नर के बारे में बताया गया है। यहाँ वे प्राचीन काल से किन्नरों के उल्लेख के बारे में बताते हैं कि ब्रह्मा के पैर के अंगूठे से उत्पन्न हुए तथा हिमाचल पर्वत के पवित्र शिखर पर वे भगवान शिव की सेवा करने का भी उल्लेख मिला है।

किन्नर प्रदेश के बारे में यहाँ जो जानकारी दी गयी है इससे तो यह साबित होता है कि हिजड़ों को किन्नर कहना उचित नहीं माना जा सकता है। इस बात का आज तक पता नहीं चला कि हिजड़ों को किन्नर कैसे और कब से कहना प्रचलन में आया।

सन् 2008 में हिजड़ा समुदाय की विधायक शबनम मौसी और उनके बाद इस समुदाय के लोगों का राजनीति में आना जैसे ही शुरू हुआ तब से ही बुध्दिजीवी किन्नर समुदाय को किन्नर नाम से संबोधित करने लगे। किन्तु किन्नर शब्द उन समुदाय के लोगों के लिए काफ़ी अपमानजनक महसूस होने लगा। इसका कारण यह है कि किन्नर को पूर्ण मनुष्य नहीं माना जाता है।

किन्नरों को यह एक प्रकार का श्राप ही होगा जहाँ वे अपने आप को कोसते हैं, वे भलेही पुरुष एवं स्त्री के वेषभूषा में रहे लेकिन लैंगिक रूप से विकलांग होने के कारण अंदर से अपने आप को स्त्री समझने लगते हैं। है।

1.1.2 किन्नर शब्द की परिभाषा

किन्नर शब्द को कई सारे अर्थों से परिभाषित किया गया है। 'किन्नर' शब्द का अर्थ कई शब्दकोशों में अलग-अलग मिलता है।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर में "किन्नर" शब्द का अर्थ लिखा है- (1) एक प्रकार के देवयोनि में माने जाने वाले प्राणी जिसका मुख घोड़े के समान होता है। (2) गाने बजने का एक पेशा करने वाली एक जाति।"[8] हिजड़े अपना पेट

पालने के लिए नाचते गाते हैं। जिससे यह जो नाम उन्हें दिया गया है वह इसी के द्वारा दिया होगा।

मराठी 'अमरकोश' में 'किन्नर' शब्द का यह अर्थ मिलता है- **1)** स्वर्गातील एक उपदेव यांचे तोंड घोडया सारखे असते. **2**) नाचगाण्याचा पेशा असलेली एक जाती. इस अर्थ का जिक्र हमें हिंदी शब्दकोषों में भी मिलता है, जिससे यह साबित होता है कि किन्नर को दूसरे भाषाओं में समान रूप से जाना जाता है।

1.1.3. राजनीतिशास्त्र विद्वानों ने भी किन्नर की परिभाषा दी है-

1) (**Williams 1986**):- **"who have male bodies, a social position closer to those women than of men, and great spiritual power."**[9] अर्थात् यह कहा है कि किन्नर समुदाय के लोग न तो स्त्री होते हैं और न ही पुरुष उनकी संरचना के बारे में यह कहा है कि वे बाहर से तो पुरुष दिखते हैं किन्तु उनके ज्यादातर हावभाव स्त्रियों के समान होते हैं।

2) (**Parker 1991**):- **"The one who penetrates maintains his masculinity, while the one who is penetrated is no longer exactly a man, though may also not regard herself/ himself as fully a woman."**[10] अर्थात् जो अपनी मर्दानगी बनाए रखना चाहता है पर वास्तव में वह पुरुष नहीं होता है हालाँकि वे खुद अपने आप को एक स्त्री भी नहीं मान सकते हैं।

1.1.4. अँग्रेजी शब्दकोश

अँग्रेजी के **'oxford English mini dictionary'** में किन्नर को **'transsexual'** (**or transsexual**) यह संज्ञा दी गयी है। इस शब्द को इस तरह से समझाया गया है- **"a**

person who emotionally and psychologically feels that they belong to the opposite sex.''[11] इसका अर्थ यह है कि हिजड़ा समुदाय अपने आपको भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से स्त्री और पुरुष इन दोनों से अलग मानता है।

जब भी किसी घर में शारीरिक रूप से विकलांग बच्चा पैदा होता है तो उसका उस घर में अच्छे से पालन पोषण किया जाता है। उसे समाज द्वारा धिक्कारा नहीं जाता है। वही अगर एक बच्चा लैंगिक असमानता से पैदा होता हैं तो उसे उसके खुद के घर से बेदखल किया जाता है। ऐसे जो बच्चे होते हैं उन्हें कही सारे नामों से संबोधित किया जाता है।

'किन्नर समुदाय' को पारिभाषिक शब्दावली में **THIRD GENDER** (थर्डजेंडर) नाम दिया गया है। इसी तरह अन्य भाषाओं में भी अलग अलग नामों से संबोधित किया है जैसे "उर्दू और हिंदी में 'हिजड़ा' शब्द है। उर्दू में ख्वाजासरा कहा जाता है। हिजड़ों को हिंदी में 'किन्नर' कहते हैं। मराठी में 'हिजड़ा' और 'छक्का' ये शब्द प्रचलित हैं। गुजराती भाषा में उन्हें 'पावैया' कहते हैं तो पंजाबी भाषा में 'खुस्रा' या 'ज़नख़ा' कहते हैं। तेलुगू में 'नपुंसकुडु' ,'कोज्जा', 'मादा' कहा जाता है तो तमिल में 'शिरुरनान गाई', 'अली', 'अरावनी', 'अरुवनी' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है।"[12] ऐसे कई सारी भाषाओं में उन्हें अलग-अलग नामों से संबोधित किया है।

लेखिका मिलन बिश्नोई ने यह कहा है कि "हिजड़ों को रोमन में 'यूनक' (**Eunuch**) कहा जाता है। 'यूनक' का उल्लेख बाइबिल में मिलता है। । भारत में कभी किन्नरों को सन्मान नहीं दिया गया। जब की उन्हें हमेशा नकारा गया। '**Eunuch**' का अर्थ लिंग-परिवर्तन के बाद 'पुरुष' से बनी हुई 'स्त्री' है"।[13] अर्थात् इससे यह स्पष्ट होता है कि किन्नर का उल्लेख धार्मिक ग्रंथो में भी पाया जाता है।

1.1.5 स्वरूप

प्राचीन काल में भलेही उन्हें स्वीकार किया गया था किन्तु आज के वर्तमान समय में उन्हें सिर्फ़ धिक्कारा जाता है। इसके पीछे का कारण भारत की सुप्रसिद्ध किन्नर लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ने अपनी आत्मकथा "मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी" में बताया है कि किन्नर स्वयं ही सामान्य लोगों से हटकर रहता है। वे उनके साथ घुल मिलना नहीं चाहते हैं।

नीरजा माधव अपने 'किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय' इस किताब में लिखती है- "अपनी कर्कश, बेसुरी आवाज़ में जीवन को एक लय देने की असफल कोशिश करने वाले इस समुदाय से पूरा भारतीय समाज परिचित होते हुए भी 21वीं सदी के प्रारम्भ तक कम से कम एक अपरिचित का भाव तो रखता ही रहा।"[14] इस वाक्य से हमें यह पता चलता है कि भलेही यह तृतीय लिंगी समुदाय समाज में अपने पहचान बनाने की कोशिश करता है लेकिन उसे समाज द्वारा नज़र अंदाज किया जाता हैं।

कई जगहों पर हम देखते हैं कि वे अपना पेट पालने के लिए काम करना चाहते हैं, पर उस समुदाय के लोगों को घर में लेने से भी कई सारे लोग हिचकिचाते हैं। वे घर का काम भी करना चाहते हैं किन्तु उन्हें समाज नहीं अपनाता है। लेकिन "पारिवारिक मांगलिक कार्यों, पर्वों, उत्सवों पर इनकी उपस्थिति को प्रायः संदिग्ध दृष्टि से देखा जाता है। ट्रेनों, बसों, बाज़ारों में भी देखा जा सकता है जो मुख्य रूप से वसूली करते हुए पाए जाते हैं"।[15] यही मानसिकता समाज ने हिजड़ा समुदाय के प्रति बनाई है। वे भलेही स्वाभिमानी बनना चाहते हैं, पढ़ लिखकर काम करना चाहते हैं, मेहनत करना चाहते हैं किन्तु उनके सामने एक ही पर्याय बच जाता है और वह है भीख माँगना।

आज के समय में ऐसे कई सारे किन्नर पाये जाते हैं जो अपने पैरों पर खड़े हो गये हैं। जैसे कि के.प्रिथीका याशिनी यह तमिलनाडू की पहली ट्रान्सजेंडर पुलिस अफसर है, लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी जो कि यू.एन में एशिया पैसिफिक का प्रतिनिधित्व करने वाली पहली किन्नर है, मधु बाई किन्नर भारत के छत्तीसगढ़ में रायगढ़ नगरपालिका की मेयर चुनी गयी थी, मनबी

बंदोपाध्याय भारत की प्रथम ट्रान्सजेंडर प्रोफेसर है और पी.एच.डी भी है, पद्मिनी प्रकाश भारत की पहली ट्रान्सजेंडर है जो न्यूज़ रीडर है, रोज़ वेंकटेसन चेन्नई तमिलनाडु में स्थित एक भारतीय टॉक शो होस्ट के नाम से जानी जाती है। इसी तरह भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्वभर में ऐसे कई किन्नर उच्च पद पर पाए जाते हैं, वे कई ऐसे उच्च पद पर नौकरी कर रहे हैं। भारत सरकार द्वारा कई सारे अधिकार उन्हें दिये गए हैं, लेकिन समाज के नजरिए से देखा जाए तो आज भी समाज द्वारा उन्हें अपनाया नहीं जा रहा है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि भारत देश में आज भी लोगों की पहचान उनके लिंग के आधार पर होती है। आज भी अगर हिजड़ा हमें नज़र आता है तो हमारा उनके तरफ देखने का नजरिया काफ़ी संकुचित बन जाता है।

1.2 न्यायालय द्वारा किन्नरों के अधिकार

सदियों से भारत भर में हिजड़े रहते हैं । उनके अधिकार के बारे में कभी नहीं सोचा गया था। थर्ड जेंडर को समाज द्वारा न अपनाने के कारण 'किन्नर समुदाय' ने अपना स्वयं का एक समूह बनाया जिसमें वे अपने समुदाय के लोगों के हक के लिए लड़ सकें। यह समुदाय बिना किसी गलत मार्ग को अपनाए बिना एक दूसरे का सहारा बना रहे हैं। किन्नर समुदाय को विश्व के विभिन्न देशों में अलग-अलग समय में उनके संवैधानिक हक दिलाये गए।

" दक्षिण एशिया में 'हिजड़ा', थाईलैंड में 'कैथोय' और मैक्सिको में मक्स नाम से उन्हें जाना जाता है। वर्तमान समय में 'LGBTQ' से ताल्लुक रखने वालों को लगभग 175 देशों में थर्डजेंडर और ट्रान्सजेंडर के रूप में स्वीकार्यता प्राप्त है"।[16] एल.जी.बी.टी.क्यू के अंतर्गत मिले अधिकार के कारण वे समाज के मुख्यधारा को जो अधिकार प्राप्त हुए है उसी तरह के अधिकार भी उन्हें मिले हैं किन्तु सिर्फ़ शादी करने का अधिकार अब तक नहीं दिया गया है।

किन्नर समुदाय को 21वीं सदी के उपरांत कही मानवाधिकार संगठनों के माँग करने के बाद उन्हें हक देने के बारे में सोचा गया। "15 अप्रैल, 2014 को माननीय उच्चतम न्यायालय ने किन्नरों को स्त्री और पुरुष से अलग तीसरे लैंगिक समूह की तरह मान्यता देने का ऐतिहासिक फैसला दिया है,…"[17] इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उन्हें समाज में समान अधिकार प्राप्त किए जाने की कोशिश की गयी। यह जो माँग थी उसका मुख्य कारण यही है कि किन्नरों के बारे में जो सामाजिक रुढ़िया बनी है उसे तोड़ने का प्रयास यहाँ किया गया हैं। किन्नर धीरे- धीरे समाज में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

ऐतिहासिक काल में भलेही किन्नरों को कोई हक नहीं दिया गया था किन्तु आज के समय में इसमें बदलाव दिखाई देता है। "न्यायालय ने अपने एक ऐतिहासिक निर्णय के द्वारा इस समुदाय को न केवल 'तृतीय लिंग' की पहचान देने बल्कि उन्हें सभी विधिक और 'संवैधानिक- अधिकार' भी प्रदान करने का निर्देश केंद्र सरकार एवं देश कि राज्य सरकारों को दिया"।[18] स्पष्ट है कि किन्नर समुदाय का जिक्र इतिहास में भी है पर इन्हें समाज में लगबग सन् 2014 से थोड़े अधिकार दिये गए हैं। "किन्नर को जन्म प्रमाण पत्र, राशन कार्ड, पासपोर्ट और ड्राइविंग लाइसेंस में तीसरे लिंग के तौर पर पहचान हासिल करने का अधिकार भी मिल गया। वे बच्चों को गोद ले सकते हैं और उन्हें उत्तराधिकार कानून के तहत वारिस होने एवं अन्य अधिकार भी मिल गए।"।[19] इतने सारे अधिकार तो किन्नर समुदाय को प्राप्त करवाए हैं लेकिन आज भी किन्नरों को हिन नजरिए से ही देखा जाता है। विधेयक के अनुसार अगर कोई भी व्यक्ति 'किन्नर समुदाय' को उत्पीड़ित या प्रताड़ित करता है तो उस व्यक्ति को छः महीने की जेल हो सकती है और यह सजा कुछ वर्षों के लिए आगे बढ़ सकती है।

1.2.1. न्यायालय द्वारा किन्नरों को दिये गए अधिकार।

किन्नरों को भी समाज कि मुख्यधारा में सामान्य लोगों जैसा ही अधिकार प्राप्त होने के लिए न्यायालय ने संविधान के अनुच्छेद **14**,15,16,19 एवं **21** के अंतर्गत देश के सामान्य

व्यक्तियों को जो मानवाधिकार प्राप्त है उसे किन्नरों के पक्ष में भी विस्तारित करते हुए निम्नलिखित निर्णय दिये है।

1) “In April 15, when the Rajya Sabha passed a private members, Bill protecting and right for transgender person, it looked like a welcome anniversary celebrating of the landmark. NALDA judgement or the national legal services authority is Union of India Judgement.”[20]
2) (1) This act may be called the transgender persons (protection of rights) Oct, 2016. (2) it shall come into force on such date as the central government may be notification in the official gazette, appoint.”[21]
3) “All the education institutions funded or recognized by appropriate government shall provide inclusive education and opportunities. for sports, recreation and leisure activities without discrimination on an equal basis with others.
4) The appropriate government shall formulate welfare schemes and programmes to facilitates and support livelihood for transgender persons including their vocational training and self-employment.
5) The appropriate government shall take the following measures in relation to the transgender persons, namely-(a) a separate human immunodeficiency virus sero-surellance center’s;

(b) To provide for medical care facility including sex reassignment surgery and hormonal therapy;

(c) bring out a health manual related to sex reassignment surgery in accordance with the world profession association for transgender health guidelines;

(d) Review of medical curriculum and research for doctor’s to address to their specific health issues.”[22]

इन सभी अधिकारों से किन्नरों को समाज के मुख्यधारा के जो लोग थे उन्हीं के समान सभी अधिकार प्राप्त करवाएँ गए हैं। "तमिलनाडु राज्य देश का पहला प्रदेश है जहाँ की सरकार किन्नरों में यथोचित स्थान प्रदान किया गया है।"[23] इस कथन से यह तात्पर्य है कि तमिलनाडु सरकार ने किन्नरों के समाज में हक के लिए हिजड़ों को बीपीएल सूची में शामिल किया है और उनके खाने के लिए अनाज की ज़रूरत होती है इसी कारण उन्हें उनके राशन कार्ड दिये गए हैं।

"सुप्रीम कोर्ट तृतीय लिंगी को सामाजिक और शैक्षिक पिछड़े वर्ग रूप में मानते हुए सरकारी भर्तियों और शैक्षणिक संस्थाओं में आरक्षण देने के निर्देश के निर्देश दिये हैं। संविधान कि धारा 14, 16 और 21 का हवाला देते हुए थर्ड जेंडर को सामान्य नागरिक अधिकार देने के निर्देश जारी किए गए"।[24] इन सभी अनुच्छेदों द्वारा किन्नरों को भी समाज के मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य किया गया है। "अनुच्छेद 21 के अंतर्गत सम्मान पूर्वक जीवन जीने के अधिकार एवं स्वास्थ्य के अधिकारों को उसी में शामिल किया गया है। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक उत्थान करने के लिए अधिकार मिला"।[25]

इससे यह स्पष्ट हो जाता कि भारत सरकार ने किन्नरों को सभी अधिकार प्राप्त किए गए हैं। उन्हें शादी करने और बच्चे तक गोद लेने का पूरा अधिकार प्राप्त है। तृतीय लिंगी समुदाय का उल्लेख हमारे प्राचीन काल से उल्लेखनीय है।

1.3 पौराणिक काल से वर्तमान तक किन्नरों का संदर्भ

समाज में किन्नरों के मिथकीय सत्य प्राप्त होते हैं और इसका संदर्भ तथ्यों के आधार पर मिलता है। "सर्वप्रथम किन्नरों का उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है जिसके अंतर्गत "शतपथ बाह्मण" में अश्वमुखी मानव शरीर वाले किन्नर का उल्लेख मिलता है।"[26] पुराणों में किन्नरों का संदर्भ मिलता है। पुराणों का क्रम जो भी हो किन्तु हमारा प्रयास किन्नरों के

बारे में जानना है। " ऋग्वेद में किन्नरों का उल्लेख मिलता है जब इंद्र स्वयं को स्त्री रूप में परिवर्तित कर लेते हैं। "[27]

सबसे पहले 'ब्रह्म पुराण' से शुरुआत करते हैं। किन्नरों के संबंधित यह धारणा मिलती है कि उनकी उत्पत्ति ब्रह्मा जी के छाया से हुयी है इसके अतिरिक्त यह भी मान्यता है कि अरिष्टा और कश्यप ऋषि से भी किन्नरों की उत्पत्ति मानी जाती है।

"वात्स्यायन कृत 'कामसूत्र' में किन्नरों को तृतीय प्रकृति कहा गया है जिसके नवां अध्याय में किंपुरुष एवं किंपुरुष इसका उल्लेख मिलता हैं:-

"द्विविधा तृतीया प्रकृतिः स्त्रिरूपिणी पुरुषरूपिणी चः"। [28]

अर्थात् तृतीय प्रकृति दो प्रकार की होती है। एक स्त्री रूप में दूसरी पुरुष रूप में।"[29] इस संदर्भ से यह स्पष्ट होता है कि किन्नरों में भी प्राचीन काल से ही दो रूप पाये जाते हैं।

इसी के साथ प्राचीन समय के प्रसिद्ध भाषाविधान पाणिनी कृत 'अष्टाध्यायी' में लिंगानुशासन के बारे में बताया है। इस निम्न लिखित श्लोक में स्त्री, पुरुष और किन्नर में अंतर बताया गया है-

"स्तनकेशवती स्त्री स्यालांशः पुरूषः स्मृतः
उभयोन्तरः यच्च नपुंसकः"[30]

इस श्लोक के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि जिसे स्तन और केश होते हैं वह स्त्री कहलाती है और वहीं मूँछों वाला मनुष्य पुरुष होता है, इनमें से दोनों का अभाव जिसमें होता है वह 'किन्नर' कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त भी स्त्री, पुरुष के साथ किन्नर संतान की उत्पत्ति का जिक्र महायोगी श्री गोरक्षनाथ द्वारा लिखित 'सिद्ध-सिद्धांत' पद्धति में वर्णित किया गया है। इसी के साथ ऋग्वेद के 'पुरुष सुक्त' में ऋषि नारायण द्वारा रचित स्लोख में यह मिलता है।

शुकराधिकेषु पुरुष रक्ताधिका कान्यका
समशुक्र रक्ताभ्यां नपुंसकः[31]

इस श्लोक में यह बताया है कि अगर स्त्री और पुरुष के संभोग के द्वारा पुरुष का वीर्य मात्र में सिंचित हो तो पुत्र की उत्पत्ति होती है और स्त्री में रज अधिक मात्रा में सिंचित होता है तो पुत्री पैदा होती है। इस बात को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित किया गया है। जब स्त्री और पुरुष का समान रूप से वीर्य और रज की मात्रा सम्मिलित होती है तब किन्नर संतान की उत्पत्ति मानी गयी है।

महर्षि मनु ने अपनी पुस्तक 'मनुस्मृति' में भी यह लिखा है-'शारीरिक शक्तियों को तीन सेक्स में विभाजित किया जाता है। पहला पुरुष-बीज की प्रधानता से पुरुष शिशु की उत्पत्ति होती है, स्त्री बीज की प्रधानता से स्त्री शिशु होता है। जिसमें स्त्री-पुरुष समान रूप से बीज हो तो किन्नर उत्पन्न होता है।"[32] इन श्लोकों में किन्नरों के जन्म कैसे होता है उसका उल्लेख देखने मिलता है।

'बौद्ध' एवं 'जैन' धर्म के साहित्य में भी किन्नरों के उल्लेख किया है। जहाँ जैन धर्म में मनुष्य की आत्मा को नौ-दुष्प्रवृत्तियाँ के बंधन में डाला है, जिसमें स्त्री पुरुष और किन्नर के कर्म के आधार पर परस्पर संबंध बताए है। बौद्धों की रचना 'सुत्तपिटक' के अंतर्गत कहा है- "चंद्रभागानदी तीरे- अहोसी किन्नरी अर्थात् पर्वतीय क्षेत्र में चिनाब नदी के तटवर्ती स्थान पर किन्नरों का निवास था।"[33] यह सभी संदर्भ मिलते है और इसी तरह हमारे प्राचीन ग्रन्थों में भी किन्नरों का उल्लेख किया गया है।

विश्व भर में वेदों को प्राचीनतम ज्ञान का स्रोत माना जाता है। इनकी प्राचीनता लगभग 1500 बीसवीं से 500 बीसवीं तक मानी जाती है। इन वेदों में भी तृतीय लिंगी समुदाय का उल्लेख मिलता है। "वैदिक साहित्य में मानव लिंग व्यवस्था को प्रकृति के अनुरूप तीन भागों में विभाजित किया है, प्रथम पुरुष द्वितीय स्त्री तथा तीसरा तृतीय प्रकृति। (स्वेतवस्त्र उपनिषद, गल्वा 108) तृतीय प्रकृति के लोगों को व्यापक रूप में नपुंसक लिंग के रूप में नामित किया गया।"[34]

इस संदर्भ से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल से किन्नरों का उल्लेख मिलता है इसी तरह भरतमुनी ने ब्रहमाजी से अर्जित किए नाट्यवेदों को जब उनके सौ पुत्रों एवं शिष्यों को नाट्यकला सिखाई तथा अभिनय को अभ्यस्त कराया इनमें से एक नाम 'शण्ड' उल्लेखनीय है। "यह 'शण्ड' नामधारी नर्तक व व्यक्ति विशेष नहीं, प्रत्युत तृतीयलिंगी हो सकती है।"[35] इसी कथन से कहा जा सकता है कि भले ही किन्नर समुदाय को आधुनिक काल में उतना सम्मान नहीं दिया जाता था किन्तु आदिकाल एवं भक्तिकाल में सम्मान के साथ एक स्थान भी दिया गया था।

हमारे बचपन से हम कई पौराणिक कथाएँ सुनते आ रहे हैं 'रामायण' और 'महाभारत' , जैसे इन ग्रंथों में भी हमें किन्नरों का उल्लेख मिलता है।

वाल्मीकि कृत 'रामायण' में किन्नरों की उत्पत्ति का काफ़ी बारीकी से वर्णन मिलता है। यह बहुत साल पहले प्रजापति कर्दम के पुत्र 'इल' जो कि काफ़ी धर्मात्मा राजा थे। वह एक बार अपने सैनिकों के साथ वन में शिकार करने गया था। शिकार करते करते वह एक पर्वत पर आ पहुँचा जहाँ शिव पार्वती के साथ रति क्रीडा कर रहे थे। वे पार्वती को प्रसन्न करने के लिए स्वयं स्त्री का रूप धारण किया था जिसके कारण वन में उपस्थित सभी जीव जंतु और वृक्ष जो पुंलिंग थे वे स्त्रीलिंग बन गए थे। इसी कारण वश राजा इल और उसके सैनिक भी स्त्री बन जाते हैं। राजा इल भगवान शिव के पास जाता है किन्तु वे उन्हें पुरुषत्व का वरदान छोड़ और कुछ भी मांगने कहते है। वे निराश होकर देवी पार्वती से वर माँगते हैं पर देवी उसे अर्ध पुरुष का ही रूप देती है और अर्ध स्त्री। इसी का उल्लेख हमें प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। 'रामायण' की इस पंक्ति में भी किन्नरों का उल्लेख मिलता है-

"अत्र किंपुरुषीभूत्वा शैलीरोधसी वत्स्तथ आवामस्तु

गिरावस्मिन मीनाक्षी शीघ्रमेव विधीयताम |" [36]

इन पंक्तियों से यह पता चलता है कि आदिकवि वाल्मीकि के 'रामायण' में किन्नरों का उल्लेख मिलता है।

मध्यकाल के कवि गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' में भी किन्नरों का एक अलग रूप प्रकट किया हैं। यहाँ वे किन्नरों का भगवान श्री राम के प्रति भक्ति का सजीव चित्रण करते हैं। "तुलसीदास कृत रामचरित मानस में किन्नर शब्द का छब्बीस बार प्रयोग किया है। किन्नरों की भक्ति को दर्शाया है।" [37]

इस प्रसंग का उल्लेख मानस में तुलसी कराते हैं –

जथा जोगु करि विनय प्रणाम।

विदा किए तब सानुज रामा।

नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे,

सब सनमामि कृपानिधि फेरे ||[38]

"उत्तरकाण्ड में तुलसीदास जी कहते हैं कि मेरे रघुनाथ की भक्ति में लिन नारी निस्वार्थ और निश्चल भक्ति देख मेरे अंदर भी भाव विभोर हो गये। करुणसागर के मन में तरंगे उठने लगी। तब श्रीराम ने उनको वरदान दिया कि कलयुग में तुम्हारा राज्य होगा और तुम लोग जिनको भी आशीर्वाद दोगे उसका कभी अनिष्ट नहीं होगा"।[39] इसी वरदान के आधार पर उनका कलयुग में एक स्थान बना हुआ है।

रामचरित मानस में किन्नरों का राम की प्रति भक्ति के बारे में कहा गया है-

पुरुष नपुंसक नारि वा, **जीव चराचर कोई**

सर्व भाव नाज कपट तजि, **मोहि परम प्रिय सोई। (उत्तरकाण्ड ,**87(**क))**[40]

जब प्रभु श्री राम चौदह वर्ष के वनवास के लिए गए थे तब वह स्त्री, पुरुष और नपुंसक भी आए थे किन्तु श्रीराम जी ने सिर्फ़ नारी और पुरुष को जाने के लिए कहा। वे तृतीय प्रकृति के सभी लोग वही उसी तट पर उनकी राह देखते हुए अपने चौदह साल श्रीराम के विरह में जिए जब प्रभु राम वनवास से आए तब वे आश्चर्यचकित हो कर उन्हें पूछा, आप सभी को कैसे पता चला तब उन्होंने कहा कि वे बिना नींद लिए उनकी राह देख रहे थे। "गोस्वामी

तुलसीदास जी ने 'किन्नर समाज' की वंदना की। गोस्वामी जी को किन्नर समाज भी श्रीराम की तरह प्रिय थे।"[41] यह जो सम्मान है वह किन्नरों का हमें प्राचीन कल में दिखाई देता है। "'महाभारत' में शिखंडी और बृहनल्ला का स्थान विशेष है शिखंडी एक किन्नर थी, जो विद्या, बुद्धि और बल में अपराजिता थी।"[42] शिखंडी के जन्म के बारे में महाभारत में यह उल्लेख मिलता हैं:-

शिखंडिनं तमासाद्य भरतानां पितामह।

अवर्यतज्ज संग्राम स्त्रीत्व तस्यसात्रुसंस्मरन।[43]

महाभारत में जब पांडव और कौरवों के युद्ध चल रहा था तब यह कुल नौ दिनों तक चला था। यहाँ के बिकट परिस्थिति को संभालने के लिए द्रौपति का भाई शिखंडी को भीष्म पितामह को मारने के लिए बुलाया गया। उसके जन्म होते ही उसके पिता को कहा गया था कि वह भीष्म पितामह के मृत्यु का कारण बनेगी। इसी के संदर्भ में महाभारत में इसका उल्लेख स्वयं भीष्म ने कहा है कि मुझे युध्द में शिखंडी ही पराजित कर सकती है-

शिखंडी समरारामर्षी सूरश्व स्रमिति अजयः|

यथा भावत्स्त्री पूर्व पश्चात् पुंस्तवं समागत || [44]

यह कहते हुए शिखंडी रूपी किन्नर को भीष्म पितामह ने बार बार प्रणाम किया। यहाँ शिखंडी अर्जुन के पीछे रहने के कारण वे युद्ध में भीष्म को पराजित कर पाये। हिंदी के आलोचक डॉ॰ प्रभाकर श्रोत्रिय अपनी किताब 'भारत में महाभारत' में लिखते हैं जब भीष्म के प्राण निकलने वाले थे तब आकाश में अंधेरा छा गया और सूरी फीका पड़ गया और पृथ्वी ने भयानक रूप धारण कर लिया-

खं तमः संवृतमभूद् आसीद्भानुर्गतप्रभः।

ररास पृथिवी चैव भीष्मे शान्तनवे हते।।[45] भीष्म 20/12

जब भीष्म की मृत्यु होती है तब उसकी माँ गंगा को, जिसको अपने पुत्र पर गर्व था, परंतु वे इस बात से आहत हुई कि भीष्म जैसे अप्रतिम महावीर की मृत्यु शिखण्डी के हाथों हुई।

उनका क्षोभ तब हलका हुआ जब कृष्ण ने बताया कि नहीं, शिखण्डी के हाथों नहीं, पितामह की मृत्यु अर्जुन के हाथों हुई।"[46] इस संदर्भ से यह ज्ञात होता है की शिखंडी को अर्जुन ने अपनी ढाल की तरह उपयोग करके भीष्म पितामह को अपने तीरों से छलनी कर दी। यहाँ उनके हाथों कोई गलत कार्य नहीं करवाया है।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि किन्नरों कि उत्पत्ति पर अब तक कई सारे पौराणिक तथ्यों के आधार पर संदर्भ मिलते हैं। 'महाभारत' जैसे ग्रंथ मैं भी किन्नरों का सहारा लिया गया किन्तु उनके हाथों कोई भी गलत कार्य नहीं करवाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है की प्राचीन काल से ही किन्नर भलाई का ही कार्य करते आ रहे हैं। किन्नर समुदाय के लोगों के बारे में जो गलत धारणा बनाई है उसे तोड़ना चाहिए। किन्नरों को जैसे प्राचीन समय में एक स्थान दिया गया था उसी समान आज के वर्तमान समय में भी वैसा ही आदर मिलना चाहिए तभी वे मुख्यधारा में अपनी जगह बना पाएंगे।

संदर्भ सूची

1. Sulaiman T.K transition from homosociality sub culture to gay politics, lambert publication,2017,pg-28
2. भीष्म महेंद्र, मैं पायल,अमन प्रकाशन,(2016),पृ.1
3. पी.सनोज. इक्कीसवीं शती की हिंदी कहानियों में किन्नर विमर्श, हिंदी विभाग कलिकट विश्वविद्यालय, 2022, पृ.55
4. सांकृत्यायन राहुल, किन्नर देश में, किताब महल, प्र.सं. 1948, पृ.1
5. माधव नीरजा,किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय,ए.बी.एस. पब्लिकेशन वाराणसी-221007,प्रथम संस्करण:-2019, पृ.15
6. वही, पृ. 16

7. शोधार्थी प्रीती राजौरिया,2. डॉ. वाजपेयी रजिति, किन्नर शब्द को लेकर मतभेदतायें, राजनीति विज्ञान, जीवजी विश्वविद्यालय ग्वालियर,IJNRD.ORG, volume 7,issue 6 june,2022
8. माधव नीरजा, किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय, ए.बी.एस। पब्लिकेशन, वाराणसी, (2019), पृ.16
9. Connell Raewyn, Gender in world perspective, second edition, bolity press, first publication in 2009, pg.109
10. वही, पृ.109
11. Oxford English mini dictionary, oxford university press, pg.592
12. लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, अनुवादक डॉ.राय शशिकला, बनकर सुरेखा, मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी, वाणी प्रकाशन,प्रथम संस्करण -2015 पृ.157
13. बिश्नोई मिलन, 21वीं सदी के हिंदी कथा-साहित्य में किन्नर विमर्श, Department of Hindi, school of social science and humanities, central university of Tamil Nadu, Thirduvarur 610005 – 2022 पृ.43
14. माधव नीरजा, किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय, ए.बी.एस पब्लिकेशन, वाराणसी, संस्करण 2019, पृ.20
15. शर्मा दिवाकर, क्रांतिदूत पत्रिका,2017 दिसम्बर,पृ.4
16. बिश्नोई मिलन, 21वीं सदी के हिंदी कथा-साहित्य में किन्नर विमर्श,(2022) पृ.40
17. मेहरा दीलिप, हिंदी साहित्य में किन्नर जीवन, वाणी प्रकाशन,प्रथम संस्करण-2019, पृ.12
18. डॉ. गुप्ता कुमार आशीष, डॉ. प्रकाश चन्द्र,डॉ. "मेवादेव" गुप्ता बृजेश किमर,किन्नर हाशिए का जीवन, सन्मति पब्लिकेसन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स , प्रथम संस्करण:-2020 पृ.81

19. बिश्नोई मिलन, मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी में किन्नर-विमर्श, विद्या प्रकाशन, प्र.संस्करण-2018, पृ. 47

20. The Transgender persons (protection of right) Bill 2016

21. -वही-

22. -वही-

23. बिश्नोई मिलन, मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी में किन्नर-विमर्श, विद्या प्रकाशन, प्र.संस्करण-2018, पृ.48

24. जनकृति पत्रका अंतर्राष्ट्रिय पत्रिका, थर्ड जेंडर विशेषांक, कुमार गौरव मिश्रा, पृ. 18-19

25. बिश्नोई मिलन, मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी में किन्नर-विमर्श, विद्या प्रकाशन, प्र.संस्करण-2018, पृ.49

26. शतपथ बाहमण, 3.4.18

27. ऋग्वेद , 1.51.13

28. Research journey, special issue-158, समकालीन साहित्य में विविध विमर्श , 2019, पृ. 56

29. Editor. डॉ.बैरागी मोहन, chief editor डॉ. शर्मा शैलेन्द्रकुमार, रामचरित मानस में 'किन्नर शब्द', अक्षरवर्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका (मासिक)

30. लिंगानुशासन, महर्षि पाणिनी, अनुवादक- दुर्गा सिंह, पृ- 88

31. भारद्वाज (ऋषि), वेदाध्ययन पुस्तक भाग १ by neducation.com (पुरुष सुक्त: ऋग्वेद) पृ. **165**

32. सं. डॉ. रामशेखर तिवारी, शब्दर्णव पत्रिका, जुलाई- दिसम्बर 2018, पृ. 61

33. Research journey, special issue-158, समकालीन साहित्य में विविध विमर्श , 2019, पृ.41

34. सिंह वीरेंद्र प्रताप, वैदिक साहित्य और तृतीयलिंगी, सबलोग , राष्ट्रीय **मासिक संपादक**: **किशन कालजयी**, (22/7/2019)

35. Editor. डॉ.बैरागी मोहन, chief editor डॉ. शर्मा शैलेन्द्रकुमार, रामचरित मानस में 'किन्नर शब्द', अक्षरवर्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका (मासिक)

36. वाल्मीकि कृत रामायण, 99 वाँ सर्ग, श्लोक-22

37. बैरागी मोहन, C.E शर्मा शैलेन्द्रकुमार, रामचरित मानस में किन्नर शब्द, अक्षरवर्ता अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

38. तुलसीदास गोस्वामी, रामचरित मानस, आयोध्याकाण्ड – ३९८/४

39. बैरागी मोहन, C.E शर्मा शैलेन्द्रकुमार, रामचरित मानस में किन्नर शब्द, अक्षरवर्ता अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

40. तुलसीदास गोस्वामी, रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड-87-(क)

41. बैरागी मोहन, C.E शर्मा शैलेन्द्रकुमार, रामचरित मानस में किन्नर शब्द, अक्षरवर्ता अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

42. -वहीं-

43. -वहीं-

44. महाभारत भीष्म पर्व (उनहत्तरवाँ सर्ग), पृ.453, श्लोक 29, भावानुवाद सहित, ऋषिकुमार (सनातन ध्यार्म यंत्रालय)

45. श्रोत्रिय प्रभाकर, भारत में महाभारत, भारतीय ज्ञानपीठ, दूसरा सं-2015, पृ. 539

46. -वहीं -

<u>द्वितीय अध्याय</u>

<u>इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किन्नर चेतना</u>

द्वितीय अध्याय : इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किन्नर चेतना

2.1 हिंदी उपन्यास : अवधारणा एवं स्वरूप

साहित्य दो रूपों में लिखा जाता है; पद्य और गद्य। पद्य के अंतर्गत काव्य और गद्य के अंतर्गत अनेक विधाएँ आती है जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध, संस्मरण, आत्मकथा और जीवनी इन सब विधाओं में जीवन की व्याख्या प्राप्त होती है। कई बार पाठकों में यह समस्या आती है कि जो किताब मोटी होती है वह उपन्यास और जो छोटी किताब होती है वह लंबी कहानी मानी जाती है। साधारण रूप से देखा जाए तो कहानी को ज़्यादा लंबी बनाने की भी एक मर्यादा होती है, धीरे धीरे एक कथाओं में कई अंर्तकथाएँ जोड़ने लगे, इस कहानी के विकसित रूप को उपन्यास कहते हैं। हिंदी साहित्य की शुरुआत आदिकाल, मध्यकाल, रीतिकाल एवं आधुनिक काल से हुआ है। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में पद्य के साथ साथ हिंदी गद्य का भी विकास हमें देखने मिलता है।

आधुनिक काल के पूर्ववर्ती जो काल थे वहाँ सिर्फ हमें पद्य एवं चंपू रूप में साहित्य उपलब्ध था। आधुनिक काल में गद्य का विकास हमें दिखाई देता है। "इस काल में गद्य की अधिकता को ध्यान में रखकर ही आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे 'गद्यकाल' की संज्ञा से विभूषित किया था"।[1] इस नामकरण से यह स्पष्ट होता है कि इस काल में अधिकतम गद्य का विकास हुआ है। सारांशतः : कहा जा सकता है कि साहित्य के अन्य विधाओं में भी जीवन कि अभिव्यक्ति

होती है किन्तु उपन्यास में वह यथार्थ छिपा होता है जिसे पाठक पढ़ने काफ़ी अच्छे से आस्वाद लेता है।

2.1.1 उपन्यास की अवधारणा: अर्थ एवं परिभाषा

उपन्यास में समाज में घटित वह सब पहलू होते हैं, जिसे एक रचनाकार अपने शब्दों एवं भाषा शैली का इस्तेमाल करते हुए अपने निजी अनुभवों से एक दीर्घ कहानी के रूप में प्रस्तुत करता है।

"उपन्यास्येत इति उपन्यास:" उपन्यास शब्द का अर्थ होता है सामने रखना "उपन्यास प्रसादनम" उपन्यास का अर्थ है किसी वस्तु को इस प्रकार से संजोकर रखना जिससे दूसरे उसे देखकर प्रसन्न हों"[2] उपन्यास वर्तमान समय में काफ़ी लोकप्रिय विधा है, क्योंकि यह एक ऐसी विधा है जो काल्पनिक होते हुए भी समाज के असली चेहरे को सभी के सामने लाती है।

उपन्यास जीवन की बहुमुखी छवि को सबके सामने लाने का कार्य करता है।" हिन्दी में 'उपन्यास' को अंग्रेजी के 'नॉवेल' शब्द का पर्याय माना जाता है।"[3] वहीं मराठी में 'कादम्बरी, कहा जाता है। उपन्यास समाज के मनोरंजन के लिए लिखा जाता है साथ ही समाज के जीवन का व्यापक चित्रण भी किया जाता है। उपन्यास में उन सभी घटनाओं या किस्सों के बारे में बताया जाता है जो हमारे समाज में घटित होता है।

हिन्दी साहित्य के अन्य साहित्य के प्रणेता के रूप में भारतेन्दु जी को देखा जाता है, इन्हीं के समय में हिन्दी उपन्यासों का भी सूत्रपात हुआ था। इस समय के उपन्यास ज़्यादातर बंगला, अँग्रेजी से अनूदित उपन्यास मिलते हैं।

"सन् १८७२ के लगभग रचे गये श्रद्धाराम फुल्लौरी के 'भाग्यवती' को भी कुछ विद्वानों ने हिन्दी का पहला उपन्यास माना, लेकिन औपन्यासिक तत्वों का इसमें अभाव है। शुक्ल जी ने अपने 'इतिहास' में 'परीक्षा गुरु' को प्रथम उपन्यास माना है, उधर हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भारतेन्दु के 'पूर्ण प्रकाश' और 'चंद्रप्रभा' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास स्वीकार किया है। भारतेन्दु का 'राजसिंह' उपन्यास भी मिलता है किन्तु इन दोनों उपन्यासों में क्रमशः मराठी और बंगला उपन्यास की छाया है, अतः इन्हें मौलिक उपन्यास कहने में संकोच होता है।"[4] इन्हीं मतभेदों पर अब तक निर्णय नहीं हो पाया। उपन्यास को कई सारे विद्वानों ने अपने तरीके से परिभाषित किया है।

2.1.2 उपन्यासों की परिभाषा

हिन्दी साहित्य की लोकप्रिय विधा उपन्यास है जिसे ज़्यादातर पाठक पढ़ना पसंद करते हैं। उपन्यास को किसी सीमित क्षेत्र तक नहीं रखा जाता बल्कि यह विधा काफ़ी व्यापक मानी जाती है। उपन्याओं का उल्लेख हमारे पुराणों से मिलता है जैसे वेद-उपनिषद, स्कन्द पुराण तथा मनुस्मृति आदि। इस जमाने में 'उपन्यास' विधा का सृजन ही नहीं हुआ था। उपन्यास को परिभाषित करने का प्रयास कई सारे विद्वानों ने किया है।

भारतीय विद्वानों में उपन्याससम्राट मुंशी प्रेमचंद कहते है-" मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों का उद्घाटन करना ही इसका ध्येय है।"[5] प्रेमचंद का यह मन्तव्य अपर्याप्त होता है। यह तो समस्त साहित्य का कम है।[6] अर्थात् इस परिभाषा के माध्यम से मानव के चरित्र पर प्रकाश डालना और उनके रहस्यों को सामने लाना ही उपन्यास होता है।

डॉ॰ श्यामसुंदर दास ने लिखा है, कि "उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।"[7] यहाँ उनका कहना है कि उपन्यास में वास्तविकता की कल्पना होती है, जसे वास्तविकता से सीधे नहीं जोड़ा जा सकता है।

डॉक्टर भागीरथ मिश्र के अनुसार –"युग की गातिशील पृष्टभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण झाँकी प्रस्तुत करने वाला गद्य, उपन्यास कहलाता है।"[8] उपन्यास शब्द का प्रयोग केवल संस्कृत भाषा मे ही नहीं अपितु भारत के समस्त भाषाओं में किया जाता है, जैसे तेलुगु, कन्नड़, मलयालम तथा मराठी आदि दक्षिण की भाषाओं में इसका प्रयोग होता है, भलेही उसका प्रयोग अलग अर्थ में किया जाता है। उदाहरण व्याख्यान, भाषण एवं निबंध इन अर्थों में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। पाश्चात्य विद्वानों के भी मतों में काफ़ी भिन्नता है।

पाश्चात्य विद्वान राल्फ फॉक्स के अनुसार –"उपन्यास केवल काल्पनिक गद्य नहीं है, यह मानव जीवन का गद्य है।"[9] अर्थात यहाँ उपन्यास को केवल काल्पनिक न मानकर उसका संबंध मानव जीवन से भी जोड़ा है।

दूसरी ओर फील्डिंग ने कहा है " उपन्यास एक मनोरंजन पूर्ण गद्य महाकाव्य है।"[10] अर्थात उपन्यास मनोरंजन करने वाला महाकाव्य कहा है।

बेकर का यह कहना है कि "उपन्यास वह रचना है जिसमें किसी कल्पित गद्य कथा के द्वारा मानव जीवन की व्याख्या की गयी हो।"[11]

इन परिभाषाओं से उनके विचारों में थोड़ी बहुत समानता है जैसे दोनों विद्वानों का कहना है कि उपन्यास काल्पनिक नहीं है उसमें जीवन व्याख्या काल्पनिक ढंग से प्रस्तुत की जाती है। इसमें दूसरी परिभाषा काफ़ी भिन्न है जो कि उपन्यास को मनोरंजन का गद्य महाकाव्य माना गया है।

2.1.3 उपन्यासों का स्वरूप

गद्य की मूल शुरुआत आधुनिक काल से ही मानी जाती है। भारत का इतिहास 19 वीं शताब्दी के आधुनिक काल से प्रारम्भ होता है। इसके शुरुआत के बारे में किसी साल का जिक्र नहीं किया जाता है बल्कि यह धीरे धीरे फैलता गया। "एस. सी. सरकार के अनुसार सन् 1757 में बंगाल में आधुनिक काल का उदय और मध्य काल का अन्त होता है। इसी वर्ष प्लासी में युद्ध में अंग्रेजों की विजय और बंगाल के नवाब की पराजय होती है। यद्यापि अभी बंगाल को अंग्रेजी राज्य में मिलाया नहीं गया था किन्तु उस पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित हो गया।"[12] इस कथन से यह स्पष्ट होता है की आधुनिक कल की शुरुआत बंगाल

से हुई थी। आधुनिक कल में उपन्यास लिखने की शुरुआत भलेही भारतेन्दु हरिश्चंद्र से मानी जाती है किन्तु उपन्यासों के सम्राट प्रेमचंद को ही माना जाता है। "

हिन्दी साहित्य के उपन्यास का वास्तविक स्वरूप पहले-पहल प्रेमचंद के उपन्यासों में ही दिखाई पड़ता है या हिन्दी उपन्यासों का वास्तविक विकास प्रेमचंद से ही मानना चाहिए।"[13] इस उद्धरण से यह साबित होता है। इसी कारण इसके काल विभाजन भी प्रेमचंद के नाम से रखा गया है। प्रेमचंद पूर्व , प्रेमचंद युगीन और प्रेमचंदोत्तर इस प्रकार से काल विभाजन किया है।

उपन्यासों को दो भागों में बाटा जा सकता है- स्वतंत्रतापूर्व हिंदी उपन्यास और स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास।

2.1.4 स्वतंत्रतापूर्व हिंदी उपन्यास

स्वतंत्रतापूर्व युग में भारतेन्दु और द्विवेदी युग के उपन्यास आते हैं। इस युग में तिलस्मी, अय्यारी, जासूसी, अद्भुत घटना प्रधान , ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यासों की रचना की गई है। पूर्व हिंदी उपन्यास काल को उद्भव काल माना जाता है। ऐतिहासिक उपन्यासों की कथावस्तु प्राय: मुस्लिम काल से ली गयी है। इस युग के उपन्यासकारों में से देवकीनंदन खत्री(सन् १८६१-१९१३) "इनके उपन्यासों में घटना-बाहुल्य, तिलस्म और ऐय्यारी की बातों की अधिकता है। ये उपन्यास किसी दूसरी भाषा में अनूदित नहीं है।"[15] अर्थात् देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों में केवल मनोरंजन की बाते मिलती हैं। इनके उपन्यास है- 'चंद्रकांता',

'चंद्रकांता सन्तति', 'गुप्त गोदना' आदि। इसी प्रकार अन्य लेखक गोपालदास गहमरी के जासूर उपन्यास है, किशोरीलाल गोस्वामी ने जनता की रुचि के अनुकूल उपन्यास लिखे हैं जैसे 'कुसुम हमारी', 'लवंफलता', 'लखनऊ की कब्र' आदि। बाबू ब्रजनंदन सहाय के उपन्यासों में भावावेश की मात्रा अधिक मिलती है। अतः यह देखा जा सकता है कि इस युग में केवल मनोरंजन के लिए उपन्यास लिखे जाते थे, किन्तु स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में बदलाव दिखाई देता है।

2.1.5 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में प्रेमचंद का काफ़ी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। "हिंदी उपन्यास का वास्तविक और क्रमबद्ध विकास प्रेमचंद के साहित्य में आगमन के बाद ही संभव हुआ है। इससे पूर्व हिन्दी में उपन्यास या तो बंगला, मराठी, अंग्रेजी कृतियों के अनुवाद या छायानुवाद थे या मात्र मनोरंजन के लिए लिखे तिलस्मी या अय्यारी की घटनाओं का सिलसिला, या फिर प्रेम और वासना के रंगीन लोक की काल्पनिक उड़ान भर थे।"[16] इस युग की विशेषता यह थी कि सिर्फ़ मनोरंजन करना ही उनका उद्देश नहीं था बल्कि मानवीय जीवन और उनके सरोकारों को स्थापित करना इस युग में संभव हुआ। इनके उपन्यासों में राजनैतिक आंदोलन तथा गांधीजी के नेतृत्व में हो रहे समाज-सुधार की झलक मिलती है। जयशंकर प्रसाद को भी यहाँ मुख्य श्रेय जाता है। इनके उपन्यासों में की अपेक्षा यथार्थ का समावेश देखने मिलता है। "हिंदी में यशपाल, उग्र आदि के द्वारा जी यथार्थवादी धारा को

विकसित किया गया, उस धारा की वास्तविक शुरुआत 'कंकाल' से मानी जाती है।" [17] भले ही प्रसाद जी के केवल दो उपन्यास 'कंकाल' और 'तितली' प्रकाशित हो पाए किन्तु उनका अपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास 'इरावती' से भी आचार्य चतुरसेन शास्त्री, वृंदावनलाल वर्मा आदि लेखक इस उपन्यास से ही मानते हैं।

प्रेमचंद्रोत्तर युग में हिन्दी उपन्यासों में नई- नई दिशाओं में बढ़ते गए। इस युग में प्रेमचन्द के आभामंडल में सुदर्शन, कौशिक, जैनेन्द्र तो थे ही किन्तु इसी से प्रभावित यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय आदि ने युगीन परिधि से हटकर नए विषयों की ओर बढ़े हैं। गांधीवाद का अभीष्ट प्रभाव तो स्वयं प्रेमचन्द और उनके युग के लेखकों पर देखने मिलता है, बाद में मार्क्स, फ्रायड आदि के प्रभावस्वरूप प्रगतिवादी और मनोविश्लेषणवादी विचारधारा के अनुकूल उपन्यास भी लिखे जाने लगे। इस ऐतिहासिक फ्रेम में ही नारी-नियति को परिभाषित करते हुए यह टिप्पणी करते है कि –" बड़े करुणाजनक संयोगों के बीच से मैंने यह अनुभव किया कि स्त्री के दुःख इतने गंभीर होते हैं। उसके शब्द उसका दशमांश भी नहीं बता सकते। सहानुभूति के द्वारा ही उस मर्म-वेदना का किंचित् अभ्यास पाया जाता है।"[18] इससे हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने 'बालभट्ट की आत्मकथा' में ऐतिहासिकता के साथ नारी के करुणा को भी निहारा। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्त्री के चरित्र पर सम्मानजनक अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

महिला लेखिकाओं ने भी अपनी लेखनी चलानी शुरू की थी जिसमें- "मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, शिवानी, उषा प्रियवंदा, रजनी पन्निकर, महरुन्निसा परवेज, विजय चौहान आदि कहानी लेखिकाओं का अपना संसार है; जो किसी सीमा तक पुरुषों के संसार से अलग है। समान्यतः स्त्रियों का संसार पुरुष-संसार से किंचित् भिन्न होता है, किंतु इन लेखिकाओं ने इस भिन्नता को कुछ कम करने की चेष्टा की है।"[19] ज़्यादातर महिला लेखिकायें दाम्पत्य जीवन में तनाव, पारिवारिक समस्या, सामाजिक स्थितियां और नारी के मनोवैज्ञानिकता के आधार पर लिखा है। नासिरा शर्मा जैसी लेखिका ने समाज, देश और राष्ट्र की समस्याओं पर अपने कृतियाँ लिखी है। इस के उपरांत अन्य सभी सामाजिक समस्याओं का उल्लेख उपन्यासों में होने लगा।

2.1.6 21वीं सदी के हिंदी उपन्यास

21 वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में आधुनिक उन सभी विसंगतियों का उल्लेख किया गया है, जो इसके पहले नहीं किया था। स्वतंत्रता के उपरांत भारतीय समाज में काफ़ी विसंगतियाँ, भ्रष्टाचार, आर्थिक शोषण, नैतिक मूल्यों का परिवर्तन, आधुनिकता का आकर्षण, सामाजिक संघर्ष, परंपरा और रूढ़िवाद के प्रति विद्रोह आदि ऐसे कई सारे विषयों का उगम होने लगा। इसी के साथ 20 वीं सदी के उत्तरार्द्ध और 21वीं सदी के प्रारम्भ में ही विमर्शों की शुरुआत होने लगी।

समकालीन हिन्दी साहित्य में 'विमर्श' की शुरुआत 1960 के बाद ही लेखन में आयी। इसके दौरान कई सारे आंदोलन छेड़े गए जिससे जनता के मन में विद्रोह का भाव उत्पन्न हुआ। विमर्श को समझाते हुए दलित रचनाकार श्योराज बेचैन अपने शब्दों में कहते हैं कि-"विमर्श एका नापी क्रिया नहीं है। किसी भी विमर्श के लिए दो या दो से अधिक पक्षों, विचारों या सामाजिक श्रेणियों का होना आवश्यक है, परंतु यह कतई आवश्यक नहीं है कि वे विचार पक्ष परस्पर एक- दूसरे के समर्थक ही हो।"[20] इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि विचार विनिमय करते हुए कई सारे विचारों की आवश्यकता होती है।

इसी विचार पर गौर करें तो अनेक विमर्शों की शुरुआत हुई जैसे कि स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, किसान विमर्श, वृद्ध विमर्श, पर्यावरण विमर्श, दिव्यांग विमर्श आदि। इस समय जन आंदोलन, शिक्षा, सामाजिक विकास इन सभी कारणों के वजह से लोक चेतना एवं लोग जागृत होने लगे। इससे कई सारे साहित्यकार भी प्रभावित हुए। विमर्श के उद्घाटन का संपूर्ण श्रेय हंस पत्रिका के संपादक और प्रसिद्ध लेखक राजेंद्र यादव को जाता है। जिन्होंने स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श और आदिवासी विमर्श को साहित्य के केंद्र में लाने का बड़ा योगदान है।

उपेक्षित जन समुदाय को वाणी देना ही इन विमर्शों का कार्य है। उपेक्षित समुदाय की समस्याओं को वाणी देना हिंदी साहित्य का कार्य रहा है। इस हाशिया परक समुदाय में ऐसा

समुदाय है जिसे कई न कई आज भी उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। इस समुदाय को 'तृतीय पंथी समाज' कहा जाता है। इन समाज पर कई सारे लेखकों ने अपनी लेखनी चलायी। इसी विमर्शों के कारण इस हाशियेपरक समुदाय में एक चेतना का निर्माण हुआ। अगर विमर्श की स्थापना नहीं होती तो इन हाशिया परक समुदाय में चेतना पैदा ही नहीं होती।

2.2 चेतना का अर्थ एवं स्वरूप

'चेतना' को गहराई से जानने के लिए उसके अर्थ को जानना आवश्यक है। "चेतना शब्द 'चित्' संज्ञा धातु से निष्पन्न होता है।'चेतना' लैटिन शब्द के 'कोन्सीएंटिया' से बना है जिसका अर्थ "दूसरों के साथ साझा किया गया ज्ञान। इसी से अंग्रेजी शब्द बना है, 'consciousness' कहते हैं। इसके विविध अर्थ हैं- चैतन्य, वेदन, अनुभव, अन्तः संज्ञा, बोध, अंतर्बोध, ज्ञान, चित्ताभोग, मनस्कार, अहंकार, चिदात्मक, प्रमा, (Internal Consciousness) अन्तश्चैतन्य (Consciousness of pleasure) सुखानुभव, सुख-वेदन आदि।"[21] मानव को अपने सुख- दुःख की अनुभूति भी इसी चेतना के कारण होती है।

चेतना शब्द का अर्थ अनेक शब्दकोशों में बताया गया है 'राजपाल हिन्दी शब्दकोश' में "चेतना-चेतनता – 'चेतना' का प्रयोग 'प्रबोध' के अर्थ में होता है। 'सामाजिक चेतना', 'राजनीतिक चेतना' आदि।"(पृ.945) इस अर्थ से यह स्पष्ट होता है कि किसी भी चीज़ का यथार्थज्ञान होना।

अंग्रेजी के ‘Oxford English Mini Dictionary’ **में** ‘conscious’ **का अर्थ** “adj.1 awake and responsible. 2. Aware 3.intentional” (pg.113) **अंग्रेजी शब्दकोश में भी** ‘चेतना’ शब्द को जागृक होना और जिम्मेदार बनाना, किसी भी परेशानी का सामना करने के लिए जागरूक होना ही चेतना कहलाता है।

‘चेतना’ के अर्थ को ‘डिक्शनरी ऑफ फिलोसॉफी’ में “चेतना वस्तुनिष्ठ यथार्थ पर चिंतन का सर्वोच्च स्वरूप है, जो केवल मनुष्य में पायी जाती है। चेतना उन सभी मानसिक क्रियाओं का योग है जो सक्रिय रूप में सहायक होती है। ‘चेतना’ का जन्म मनुष्य की सामाजिक उत्पादन प्रक्रिया में होता है और यह भाषा से जुड़ी होती है। मनुष्य एक ऐसे संसार में जन्म लेता है जहां उसके पूर्वजों द्वारा अनेक वस्तूओं का निर्माण किया गया है। मनुष्य इन वस्तुओं का एक विशिष्ट उद्देश के लिए प्रयोग करता है। इसके प्रयोग के लिए मनुष्य अपनी समाझ को विकसित करता है। इसी के साथ मनुष्य में चेतना का भी पानी के प्रवाह से लुढ़कता रहता है। मनुष्य के भीतर चेतना होने कारण ही वह अन्य प्राणियों से भिन्न माना जाता है।”

‘पद्मचंद्रकोश’ के प्रथम भाग में धर्मेन्द्रनाथ गुप्ता ने संस्कृत-हिंदी शब्दकोश में चेतना शब्द का विग्रह करते हुए व्युत्पत्तिपरक अर्थ इस प्रकार बताया है, चित+यूच+टाप इसका अर्थ बुद्धि, समझ, सजीवता, चेतना होता है।” [22] अर्थात् मनुष्य द्वारा उत्पन्न चेतना उसे

कहा जाता है, जिसे वह अपने सोच-विचार के सहारे ही अपने कार्य करता है। ‘चेतना’ का अर्थ अलग-अलग तरह से स्पष्ट किया जा सकता है।

‘नालंदा विशाल’ शब्दसागर में चेतना का अर्थ ‘विकास’ होता है।” (पृ.82) अर्थात् मानव जीवन में चेतना मनुष्य के विकास में महत्वपूर्ण साबित हो जाती है।

मराठी के ‘विस्तारित शब्दरत्नाकर’ शब्दकोश में ‘चेतना’ शब्द के अनेक पर्यायवाची शब्द मिलते हैं जैसे ‘जाणीव’-जाणण्याची शक्ति, ज्ञान, बुद्धि. (पृ.230) इस शब्द का अर्थ यही है कि किसी भी बात को समझना और उसपर गहराई से विचार करना। इसी तरह ‘शुद्ध’ यानी इसका भी मतलब शुद्धि, चेतना और देहभान होता है।(पृ.703) इसी से यह साबित होता है कि मराठी में भी ‘चेतना’ शब्द का उपयोग होता है।

गोवा की भाषा कोंकणी में भी चेतना शब्द के कई पर्यायवाची शब्द शब्दकोशों में समाहित है।

‘कोंकणी -इंग्लिश’ शब्दकोश में ‘देहभान’ शब्द को ‘consciousness’ कहा है। (पृ.275) मराठी और कोंकणी भाषा में चेतना के लिए इसी शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसी के साथ ‘जाण’ शब्द का भी अर्थ knowledge, realization, consciousness. इन शब्दों के लिए प्रयोग किया जाता है।(पृ.186)

‘चेतना’ शब्द का अर्थ अमेरीका के दार्शनिक और मनोविज्ञानी विलियम्स जेम्स ने ‘Consciousness’ बताया है। Consciousness शब्द को Conscious या Conscire से

माना जाता है। जिसका अर्थ 'सचेत' या 'अभिज्ञ' होता है। Consciousness का Awareness को पर्यायवाची शब्द माना जाता है। यहाँ चेतना शब्द का वे प्रयोग जागरूकता से करते हैं जिसके कारण मनुष्य अपने निर्णय आसानी से ले सकता है।

चेतना मनुष्य के मस्तिष्क की वह शक्ति है जो उसे निरंतर अपने अच्छे बुरे का निर्णय लेने के लिए चैतन्य प्रदान करती है। चेतना के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक यह तीन त्रिविध स्वरूप होते हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि अगर मनुष्य किसी सुंदर फूल को देखता है तो उसके ज्ञान द्वारा वह उसे देखता है । इसके उपरांत उसमें उस फूल के प्रति अच्छे भाव पैदा होते हैं। इसके बाद वह क्रिया के द्वारा उसके पास जाता है या उसे तोड़ता है।

चेतना को अलग-अलग क्षेत्र में अलग तरह से परिभाषित किया जाता है। इसी संदर्भ में अनुराग सागर में यह कहा गया है-"मनोविज्ञान, धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म में चेतना की विविध परिभाषाएं दी जाती है।"[23] मनोविज्ञान के क्षेत्र में चेतना का संबंध 'मन' से जोड़ा जाता है। धर्म के क्षेत्र में 'सदाचार' एवं 'आत्म-चेतना' पर बल दिया जाता है। दर्शन या अध्यात्म के क्षेत्र में चेतना का संबंध 'आत्म-बोध' से जोड़ा जाता है।

मनुष्य में अगर चेतना नहीं होगी तो वह उस पत्थर के रोड़े की तरह हो जाएगा जो किसी एक जगह पर नहीं रहता बल्कि हवा और पानी के प्रभाव से लुढ़कता रहता है। 'नालंदा विशाल शब्दसागर' में 'चेतना' का अर्थ कुछ इस प्रकार मिलता है- "बुद्धि, मनोवृत्ति, स्मृति, सुधि, चेतना, होश।"[24] इसी से यह कहा जा सकता है कि मानव की चेतना का संबंध उसकी

आंतरिक बुद्धि से जोड़ी जाती है। जब मानव सचेत, होश और जागरूक होकर जो भी निर्णय लेता है उसे चेतना की संज्ञा दी जाती है। चेतना का संबंध आँखों से न होकर सीधा बुद्धि से होता है।

मानव के आंतरिक शक्ति को चेतना कहा जाता है। चेतना हमें बाहर से नहीं दिखाई देती है, चेतना अमूर्त होती है। वह कई सारे अनुभवों के साथ ही समक्ष आती है। चेतना को भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अपनी दृष्टि से परिभाषित किया है। चेतना को मनोविज्ञान से जोड़ा जाता है।

आधुनिक मनोविज्ञान के जनक सिगमंड फ्रायड ने मनोविश्लेषण संबंधी कई संकल्पनाओं की व्याख्या की है; उनके अनुसार-" मानव क्रिया व्यापार, व्यवहार से संबन्धित है। जो प्रतिक्रियाएँ विचार गम्य है, सामाजिक नियम परंपरा से बंधी है, नीति-अनीति भाव से संचालित है वे इस सिद्धांत से परिचालित होती है।"[25] मानव समाज में रहकर उन सभी क्रियाओं को करता है जो शारीरिक और मानसिक क्रिया है, किन्तु मनोविज्ञान के द्वारा चेतना सिर्फ़ उसी क्रिया को माना जा सकता है जो मानव मस्तिष्क के द्वारा करता है। चेतना वह शक्ति है जो सृष्टि को क्रियाशील बनती है। चेतना का संबंध मन या फिर बुद्धि से होता है।

इसी के संदर्भ में लेखिका अर्चना जैन ने लिखा है- " चेतना सभी प्रकार के मानसिक अनुभवों का संग्रहालय है।"[26] अर्थात् चेतना मानव मस्तिष्क में परंपरा से चलती आती है। मानव व्यक्तित्व की चेतना के जुड़ाव में समाज, परिवार आदि का अहम योगदान होता है।

जो मनुष्य समाज से काफ़ी जुड़ा रहता है, उसकी चेतना में उतनी ही बढ़ोत्तरी होती है। उदाहरण के लिए जैसे जो शहरी लोगों में यह काफ़ी विकसित पाया जाता है, वहीं आदिवासी लोग जो समाज से हटकर रहते हैं उनमें उतनी चेतना का विकास हमें नहीं दिखाई देता है। डॉ. नगेंद्र का यह कहना है कि-"चेतना मन का छोटा सा द्वीप समझा जाने लगा, जिसमें मन की तुलना बड़े सागर से की है। जिसमें चेतना एक छोटा सा द्वीप है। चेतना विचारशील है, तर्क युक्त है और नीति-अनीति का भाव इसमें सदा रहा है, इसकी इच्छाएं, आकांक्षाएँ, अनुभूतियाँ विचारगम्य होती है।" [27] अर्थात् मनुष्य की चेतना को छोटे से द्वीप की तरह समाज है जो सागर रूपी बड़े मन में पैदा होता है। जिसमें सभी भावों को विचारगम्य बनाने की ताकत होती है।

मनुष्य ऐसी कई सारी बातों पर ध्यान डालता है किन्तु वह जिस बात पर गौर करता है उसी बात पर विचार और तर्क लगाता है। इसी चेतना को हमें किन्नर समुदाय जिसे हाशियाकृत समाज के अंतर्गत रखा जाता है। उनकी चेतना का अध्ययन 21वीं सदी के किन्नर समुदाय पर लिखे उपन्यासों के माध्यम से करेंगे।

2.3 21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में किन्नर चेतना

21वीं सदी के प्रारंभ में ही सभी विमर्शों की शुरुआत हुई। इसके अंतर्गत जो भी समाज आता है उसे हाशियाकृत समाज कहा जाता है। इस समाज के यथार्थ को सामने लाने का कार्य उपन्यासकार अपने उपन्यास के माध्यम से पहुँचता है। साहित्य और समाज का आपस में एक मेल होता है। यह इस लिए कहना ठीक है क्योंकि जो हमारे समाज में अत्याचार इन शोषित, दमित एवं कुचले हुए समुदाय पर होता है, यहीं सब साहित्य में चित्रित किया जाता है। आगे बढ़ते बढ़ते किन्नर समुदाय में भी अपने आप में बदलाव लाने के लिए अपने आप में चेतना का निर्माण किया है। जिस तरह से एक मनुष्य में अपने अच्छे बुरे के प्रति सोचने की चेतना होती है उसी प्रकार किन्नर समुदाय के लोगों में भी यह चेतना होती है। यहाँ वे अपने को दोयम दर्जे का नहीं समझते। वे अपने हक के लिए आवाज़ उठाते हैं।

2.3.1 उपन्यासों में किन्नर चेतना

21वीं सदी में कई सारे 'किन्नर समुदाय' पर उपन्यास लिखे गए। जिस तरह स्त्री चेतना, दलित चेतना पर कई लोगों ने सोचा है; तो क्या किन्नरों की भी अपनी चेतना नहीं होगी? हमने प्रथम अध्याय में किन्नरों के संवैधानिक अधिकारों पर बात की है। भले ही उन्हें वह अधिकार प्राप्त करवाएँ गए हैं किन्तु वे अपने हक के लिए आज भी लड़ते हैं। समाज द्वारा उन्हें स्वीकार नहीं किया जाता इसका कारण यह कहा जा सकता है कि आज का समाज अपने वंश को बढ़ाना चाहता है। वह या तो 'पुरुष' को स्वीकारते हैं या तो 'स्त्री' को किन्तु एक हिजड़ा जब किसी परिवार में पैदा होता है तब उसे समाज से ही नहीं बल्कि परिवार से भी बहिष्कृत किया जाता है।

इस विषय की चर्चा डॉ. अनुसूया त्यागी ने अपने उपन्यास 'मैं भी औरत हूँ'(2005) में किया है। इस उपन्यास में दो जुड़वाँ बहनों रोशन-मंजुला का जन्म होता है किन्तु उनकी शारीरिक संरचना सामान्य लड़की नहीं बल्कि किन्नर है। यह उनकी परिवार से लंबे समय तक छिपी रहती है। इन दोनों बहनों का ऑपरेशन करवाकर, उन्हें पूरी तरह से स्त्री बनाया जाता है। जिनमें से एक पूर्णतः स्त्री बन जाती है किन्तु रोशनी के शरीर में गर्भाशय नहीं होने के कारण वह किन्नर बन जाती है। वह जब निराश होती है, तब उसके माता-पिता और उसका प्रेमी ओंकार उसे उसके किन्नर होने का अहसास नहीं कराते- "रोशनी, इस नियति ने तुम्हारे साथ बहुत क्रूर मजाक किया है पर फिर भी भगवान को धन्यवाद दो कि उन्होंने तुम्हें अच्छा दिमाग, इतना सुंदर चेहरा व इतना सुंदर दिल दिया है। अरे! क्या हुआ तुम्हें गर्भाशय नहीं दिया। हम उस समस्या को आसानी से हल कर सकते हैं फिर तुम जो कहोगी, मैं करने को तैयार हूँ।"[28] यहाँ उसके प्रेमी का उसे काफ़ी हिम्मत दी गयी है।

इसी संदर्भ में देखे तो भारत की ट्रांसजेंडर सोशल वर्कर गौरी सावंत ने अपने साक्षात्कार में कहा हैं कि 'माँ कोई भी हो सकती है, वह स्त्री माँ बन सकती है; पिता माँ हो सकता है; और एक ट्रांसजेंडर भी माँ बन सकती है।' इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि वे किन्नरों में भी माँ बनने की चेतना को पैदा करती है, क्योंकि वह स्वयं एक लड़की को गोद लेती है। इस उपन्यास में रोशनी अपने आप में चेतना को जागृत करती है। यहाँ वह पढ़ लिखकर एक बड़े कंपनी में सीईओ बन जाती है। वह शादी भी करती है और समाज में अपनी एक जगह बनती है।

महेंद्र भीष्म अपने उपन्यास 'किन्नर कथा' में शाही राज घराणे में भी किन्नर बच्चे को न अपनाने पर लिखते हैं। चार वर्षों तक दाई और उसकी माँ द्वारा उसकी सच्चाई को छिपाया जाता है। जब उसके पिता राजा जगतसिंह को बेटी की सच्चाई पता चलती है, तब वह उसे समाज के नजरों से दूर करने के किए दीवान से कहकर उसे मारने का फैसला सुनाता है। इसी बात पर पति और पत्नी में काफ़ी विवाद हो जाता है। उसे दीवान पंचम सिंह को सौंपा जाता है किन्तु वह कहता है- "सच महाराज सोलह आने सच कह रहा हूँ, अपनी इस किन्नर संतान का पता लगते ही एक पल भारी पड़ा दायजू को। मौजे इस बच्ची को खत्म कर देने का हुक्म मिला है। मैंने अपने इन हाथों से पता नहीं कितने निर्दोषों का कत्ल किया है…, कत्ल करते ये हाथ कभी नहीं कांपे, पर ई बित्ता भर कि मोड़ी, हां मैं न मार पाओ।"[29] इस बात से यह साबित होता है कि दीवान उस बच्ची को नहीं मारता बल्कि किन्नर गुरु तारा को सौंप देता है।

इस उपन्यास में किन्नर गुरु तारा सोना को एक नया जीवन देती है। सोना का पालन तारा और मातिन करते हैं। तारा उसका नाम सोना से चंदा रखती है। वह उसे बहुत अच्छी नृत्यांगना बनती है और उसका ऑपरेशन करवा कर एक स्त्री बनाने में भी सक्षम रहती है। इसी चेतना के साथ वह आगे बढ़कर उसे पालती है किन्तु समाज के बारे में नहीं सोचती है। चंदा का प्रेमी मनीष भी यहाँ काफ़ी मायने रखता है। तारा के डेरे के सभी किन्नरों के लिए वह कृष्ण की तरह है। "उन्हें लगता जैसे मनीष उस समाज का प्रतिनिधि है, जो सदियों से उनकी बिरादरी वालों को हुए और त्याज्य दृष्टि से देखता चला आ रहा है और अब मनीष के

रूप में वही समाज उन्हें अपनाने जा रहा है।"[30] इस कथन से ही यह स्पष्ट होता है कि उनमें अपने सामाजिक हक के लिए चेतना का निर्माण होते दिखाई दे रहा है। वे बेहतरीन जीवन जीने के लिए माँग करते हैं।

ऐसे ही महेंद्र भीष्म द्वारा लिखित उपन्यास 'मैं पायल' में उपन्यासकार ने जीवनीपरक शैली में उपन्यास की नायिका पायल के संघर्ष का चित्रण काफ़ी अच्छे से प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास वास्तविक जीवन की पायल सिंह पर केन्द्रित है। पायल उर्फ जुगनी को उसका ही घर छोड़ना पड़ता है। उसके पिता और भाई के द्वारा काफ़ी अत्याचार सहती है, साथ ही उसके साथ रेलवे स्टेशन पर यौन शोषण किया जाता है। उसका पिता उसे मारता था, जब वह बड़ी हुई तब उसने अपने पिता से यह सुना-" जब कभी पिताजी दारू के नशे में कोसते, गाली देते, यह योगिनी, हम क्षत्रिय के वंश में कलंक पैदा हुई है, साली हिजड़ा है.... आदि जाने क्या क्या बकते रहते थे।"[31] इस संवाद से यह स्पष्ट होता है कि समाज का डर तो होता ही है किन्तु उनके वंश में भी पैदा होने के कारण वे उसे धिक्कारते हैं।

महेंद्र भीष्म ने इस उपन्यास के द्वारा किन्नर समुदाय के किन्नर अगर लगन और मेहनत से किसी क्षेत्र में कार्य करेंगे तो उन्हें भी सफलता प्राप्त होती है यह वे पायल की चेतना के द्वारा वर्णित करते हैं। पायल अपने दम पर जीती है। जैसे वह पहले पंडित जी के यहाँ काम करती है, बाद में सिनेमा हॉल, वह अपने बल पर गेटकीपर से प्रोजेक्टर रूम ऑपरेटर बन जाती है। वह अपनी कला के माध्यम से मिमिक्री और गायन की योग्यता से लखनऊ में

अपना कैरियर बनाती है। इसी चेतना के बल पर वह अपने आप को आगे बढ़ती गयी। इसी योग्यता के कारण वह प्रसिद्धि और काफ़ी सारा धन दोनों कमाती है।

प्रसिद्ध लेखिका चित्रा मुद्गल ने अपने किन्नर पर आधारित उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' में मुख्य पात्र विनोद के संघर्ष का चित्रण किया। विनोद अपनी माँ का लाड़ला और होशियार बच्चा था जिसे वह किन्नरों को नहीं देना चाहती थी । किन्नर बार-बार आकर उसे ले जाना चाहते हैं उसे के पश्चात् वे उसे ले जाते हैं। विनोद के मन में यह चेतन पैदा हुई कि वह एक लड़का नहीं बल्कि एक किन्नर है। इसी कारण वह अपने लिए विनोद, अपनी माँ के लिए बिन्नी और किन्नरों के लिए बिमली बन जाता है। वह चाहता है कि किन्नर समुदाय भी पढ़े लिखे, अपना कुछ करें। किन्तु व्यवस्था के कारण वे आगे नहीं बढ़ पाते हैं। उसे जबर्दस्ती किन्नर टोली द्वारा ले जाया जाता है। वह दिल्ली में भेजा जाता है। एक किन्नर बच्चे के सपने को यहाँ दिखाया है, वह बचपन से ही पढ़ाई लिखाई में तेज था जो बड़ा होकर गणित विषय में पीएच.डी करने के बाद प्रोफ़ेसर बनाना चाहता था।

चित्रा जी ने बिन्नी की व्यथा को दर्शाया है-" कभी-कभी मैं अजीब सी अंधेरे बंद चमगादड़ों में अटी सुरंग में स्वयं को घुटता हुआ पता हूँ। बाहर निकलने को छटपटाता मैं मनुष्य तो हूं न! कुछ कमी है मुझमें, इसकी इतनी बड़ी सजा।"[32] इसी कथन से यह स्पष्ट होता है कि हिजड़ा पैदा होने के कारण वे खुद अपने आप को कोसते है। विनोद भलेही किन्नरों के साथ रहता है किन्तु वह उनके द्वारा नाच-गाने को अपनाना नहीं चाहता है। वह मेहनत मजदूरी

करना चाहता है यही चेतना एक किन्नर होने के बावजूद भी वह रखता है। वह राजनीति के क्षेत्र में आ जाता है। यहाँ उसकी लगन के कारण वह पंजाब के किन्नरों को चुनाव का प्रचार करके जीतता है और उन्हें आरक्षण ही नहीं बल्कि समाज में स्त्री और पुरुषों के समान दर्ज़ा दिलाने की अपने आप में चेतना निर्माण करता है। वह उनके नाम को अदर्स, जीरो और थर्ड जेंडर ऐसे कॉलमों से हटाकर समाज की मुख्यधारा में समान दर्ज़ा दिलाने की कोशिश करता है।

वह ट्रेनों में तालियाँ नहीं पीटता है बल्कि सुबह उठकर गाडियाँ धोता है। उसे सामान्य लोगों से भी कम पैसे मिलते हैं वह यह कहता है कि- "जरूरत है सोच बदलने की। संवेदनशील बनाने की। सोच बदलेगी, तभी जब अभिभावक अपने लिंग दोषी बच्चों को कलंक मन किन्नरों के हवाले नहीं करेंगे। उन्हें घूरे में नहीं फेकेंगे। ट्रान्सजेंडर के खांचे में नहीं ढकेलेंगे। यह पहचान जब उन्हें किन्नरों के रूप में जीने नहीं दे रही समाज में तो सरकारी मान्यता मिल जाने के बाद जीने देगी? किन्नरों के रूप में समाज ने उन्हें उस खांचे में सदियों पूर्व ढकेल कर रखा हुआ है। उसी रूप में उन्हें आरक्षित करके सरकार अभिभावकों को अपराधमुक्त कर खुली छूट दे रही है। पैदा होते ही वह लिंग दोषी बच्चों को ट्रांसजेंडर जमात के हवाले कर दें। छुट्टी ले अपनी ज़िम्मेदारी से।"[33] यहाँ उसकी मानसिक चेतना को दर्शाया गया है। विनोद के द्वारा राजनैतिक पहलू पर भी चित्रा मुद्गल ने प्रकाश डाला है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आधुनिक काल से उपन्यास विधा की शुरुआत मानी जाती है जहाँ शुरुआती उपन्यासों को केवल मनोरंजन के लिए पढ़ा जाता था किन्तु आगे

चलकर उनमें परिवर्तन होने लगा। जिसमें सामाजिक सभी कुरीतियाँ, भ्रष्टाचार, सामाजिक यथार्थ आदि विषयों पर रचनाएँ लिखी जाने लगी। 21 वीं सदी के आरंभिक काल में विमर्शों की शुरुआत हुई और इसे के साथ हाशियाकृत समाज के बारे में लिखा जाने लगा। किन्नर समुदाय को समाज से हटकर रखा जाता है। शारीरिक रूप से विकलांग बच्चे को समाज अपनाता है किन्तु लैंगिक रूप से विकलांग बच्चे को समाज एवं खुद के परिवार से ही बहिष्कृत किया जाता है। किन्नर साहित्य के द्वारा किन्नरों की चेतना के बारे में इस अध्याय में जाना है, जहाँ किन्नर अपनी चेतना के माध्यम से कई सारे कार्य करते हैं जो एक सामान्य मनुष्य काफ़ी आसानी से प्राप्त करता है। वे अपने पैरों पर खड़े रहते हैं और समाज में नाम कमाते हैं और आर्थिक रूप से भी सक्षम बन जाते हैं।

संदर्भ सूची

1. बंसाल राजीव, हिन्दी गद्य, एस.बी.पीडी पब्लिकेशन्स, आगरा, संस्करण:2023,बूक कोड:-0402, पृ.1
2. https://infosrf.com/blog-single.php?MnBv=1049 (उपन्यास का इतिहास एवं प्रमुख उपन्यासकार)
3. बंसाल राजीव, हिन्दी गद्य, एस.बी.पीडी पब्लिकेशन्स, आगरा, संस्करण:2023,बूक कोड:-0402, पृ.18

4. गुलाबराय बाबू, हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, संपा. प्रो. विश्वंभर 'अरुण', सं-2009-2010, पृ.140
5. प्रेमचंद 'कुछ विचार', बनारस, सं-1931, पृ.71
6. -वहीं-
7. "The Novel if it be anything is contemporary history on exact complete reproduction of the social surroundings of the age we live in."
8. वर्मा मनीष, उपन्यास के स्वरूप पर प्रकाश डालिए, जोश बाधाओं, सितंबर 3
9. -वहीं-
10. -वहीं-
11. - वहीं-
12. सिंह बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, सं. 2018, पृ.277
13. मिश्र रामदरश, हिन्दी उपन्यास का अंतर्यात्रा,राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.,प्र.सं.1968, पृ.15
14. डॉ.पाठक विनय कुमार, किन्नर विमर्श दशा, पृ. 52
15. गुलाबराय बाबू, हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, संपा. प्रो. विश्वंभर 'अरुण', सं-2009-2010, पृ.141

16. -वहीं-

17. वहीं, पृ.144

18. सं. डॉ. नगेंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स प्रकाशन, प्र.सं.1973, पृ.697

19. वहीं, पृ. 732

20. बेचैन सिंह श्योराज, उत्तर सदी के कथा साहित्य में दलित विमर्श, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, सं-2014, पृ. 46

21. S/R M. Monier William, dictionary English and Sanskrit

22. श्री. बिहारी युगलांद, संत कबीर एवं अनुरागसागर, http://www.dei.ac.in

23. धर्मेंद्र कुमार गुप्ता, संस्कृत हिन्दी शब्दकोश, पृ.1982

24. संपा. नवल, नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ. सं 388

25. संपा. डॉ. नगेंद्र, मानविकी परिभाषा कोश, (मनोविज्ञान खंड)

26. जैन अर्चना, प्रेमचंद निबंध साहित्य में सामाजिक चेतना, प्र.सं 1979, पृ सं.16

27. डॉ. नगेंद्र, मानवीकी पारिभाषिक कोश, पृ. सं.50

28. त्यागी अनुसूया, मैं भी औरत हूँ, मनोज प्रकाशन, (2019), पृ. 84

29. भीष्म महेंद्र, किन्नर कथा, अमन प्रकाशन, प्र.सं-2020, पृ.36

30. वहीं, पृ. -66-67

31. भीष्म महेंद्र, मैं पायल, अमन प्रकाशक, (2016), पृ. 44

32. मुद्गल चित्रा, पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा, सामयिक पेपर बैक्स, (2018), पृ. -30

33. वहीं, पृ.112

<u>तृतीय अध्याय</u>

<u>नीरजा माधव तथा प्रदीप सौरभ द्वारा लिखित उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन</u>

तृतीय अध्याय

नीरजा माधव तथा प्रदीप सौरभ द्वारा लिखित उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन

('यमदीप' और 'तीसरी ताली' के संदर्भ में)

3. परिचय

हिजड़ा समुदाय को समाज में पिछड़ा हुआ माना जाता है। उनकी सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक स्थिति काफ़ी दयनीय बनी हुई हैं। तृतीय पंथी समुदाय के लोगों में भी संवेदनाएं होती है। वे सामान्य मानवों से भी अधिक वे दूसरों की पीड़ा को गहराई से जानते हैं, साथी ही उनमें ममता का भी भाव होता है। हिजड़े की शारीरिक संरचना से भले ही माँ बनने के लिए सक्षम नहीं है किन्तु वे एक बच्चे का भी सामान्य लोगों की तरह परवरिश कर सकते हैं।

हिजड़ों के प्रति कई सारी बातें कई जाती है, जिसमें उनपर काफ़ी गलत इल्ज़ाम लगाए जाते हैं। वे अपने परिवार को छोड़कर उनके हिजड़ा समुदाय के गुरु के शरण में जाकर रहते तो हैं किन्तु क्या वे अपने आप को इस समुदाय में शामिल करने के बाद अपने माता-पिता को याद नहीं करते? उन्हें भी सामान्य लोगों की तरह अपना जीवन बिताना नहीं होता है? क्या उन्हें भी पढ़ाई कर एक अच्छा नागरिक बनने के सपने नहीं पैदा होते हैं? ऐसे कई सवालों को प्रसिद्ध महिला रचनाकार नीरजा माधव ने 'यमदीप' उपन्यास के माध्यम से हिजड़ा समुदाय के कटु सत्य को समाज के सामने लाने का काफ़ी सफल प्रयास किया है

'हिजड़ा समुदाय' पर सबसे पहले उपन्यास लिखने का प्रयास नीरजा माधव ने किया है। इस कथन पर बात करते हुए कहा जा सकता है कि हिन्दी का यह उपन्यास विधा में लिखा गया पहला उपन्यास है, इसका प्रकाशन सन् 2002 में 'सामयिक प्रकाशन' से हुआ था। इस उपन्यास के कई सारे संस्करण निकले हैं। 21वीं सदी में भलेही कई सारे हाशिए परक समुदाय

पर लेखकों ने अपनी लेखनी चलाई है, किन्तु नीरजा माधव ने ऐसे समुदाय पर लिखा जिसे समाज में तिरस्कृत नज़रों से देखा जाता है। इस तृतीय पंथी समुदाय पर लिखने की प्रेरणा कैसे मिली इसके बारे में बताती है - "तृतीय लिंगी समुदाय पर लिखने की प्रेरणा मेरे मन में सन् 1991 में ही आ गयी थी जब मेरी बेटी कुहू का जन्म हुआ और उस अवसर पर तृतीय प्रकृति (थर्ड- जेंडर) के लोग मेरे घर मंगल- गान करने और नेग लेने आये थे।"[1] इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि उनके मन में इस समुदाय के प्रति संवेदनशीलता पैदा होने के कारण ही वह इस उपन्यास को लिखने के बारे में सोच पायी।

तृतीय लिंगी इस समुदाय पर लिखने से पहले उन्होंने कई सारे तथ्यों को इकट्ठा किया। इनसे पहले किन्नरों का उल्लेख कई सारी साहित्यिक रचनाओं में था किन्तु इतना अच्छे से विस्तार केवल नीरजा माधव ही अपने उपन्यास के द्वारा उनके सभी निजी रहस्यों को समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। वे उनके खान-पान, रहन-सहन, उनके बस्ती की दयनीय हालत, उनका स्वभाव इन सब चीजों को वे समाज के आइने में लाने का प्रयास करती है। हिजड़ों से बात करते समय उन्हें उनके सांकेतिक शब्दों के बारे में पता चला। इसी शब्दों को उन्होंने अच्छे से जाना और अपने उपन्यास में इन शब्दों का प्रयोग करते हुए इन शब्दों का पद संदर्भ में स्पष्टीकरण दिया है।" क्या खिसनिपोरी कर रहे हो, बाबू। ऐसे ही तुम भी कभी किसी के भीतर से टेपका* भये होगे। जाओ जल्दी..."[2] इस वाक्य में टेपका का अर्थ उन्होंने नवजात शिशु के संदर्भ में कहा है।

समाज में किन्नरों को प्राचीन काल में अपनाया जाता था। उनका संदर्भ भी मिलता है किन्तु वे एक गौण पात्र के रूप में पाये गए हैं। यहाँ वर्तमान समय में नहीं अपनाया गया है वे उन्हें नकारात्मक एवं तिरस्कृत दृष्टि से देखते हैं। इसका संदर्भ निर्मल भुराड़िया के उपन्यास 'गुलाम मंडी' का एक पात्र अपने समाज में तिरस्कृत भाव को बताता है " और नहीं तो क्या दुत्कार-दुतकार के तो भगा देते हैं सब जगह से। लंगड़े-लूले को तो कोई नहीं दुत्कारता, अन्धे-काने से तो कोई नफरत नहीं करता। वैसे ही हमको खुदा ने बनाया, जैसे हैं और नहीं

तो क्या?”[3] यहाँ एक हिजड़ा अपने सामाजिक स्वीकृति का जिक्र करता है और समाज द्वारा न अपनाने पर दुःख भी प्रकट करता है।

3.1 नीरजा माधव: ‘यमदीप’ उपन्यास की समीक्षा

‘यमदीप’ उपन्यास की मुख्य पात्र थर्ड- जेंडर नाज़बीबी है और हिजड़ा गुरु मेहताब गुरु है। हिजड़ों के अन्य सदस्य जैसे छैलबिहारी (छैलू) एक पढ़ा- लिखा हिजड़ा है। अन्य हिजड़े जैसे मंजु, चमेली, शबनम आदि। मानवी नामक पात्र भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उसके द्वारा इस उपन्यास की कथा आगे बढ़ती है। यहाँ मानवी और नाज़बीबी का अंत में मुलाक़ात किन्नरों के साहस को उजागर करती है। इस उपन्यास में नाज़बीबी द्वारा किन्नर चेतना और मानवी द्वारा स्त्री चेतना का भी चित्रण मिलता है। उपन्यास को जानने से प्रथम उसके शीर्षक को समझना जरूरी है।

लेखिका नीरजा माधव ने ‘यमदीप’ उपन्यास के शीर्षक के बारे में बताया है कि ‘यमदीप याने वह दीपक जिसे दिपावली के एक रात पहले कूड़े-कचरे के पास जाकर यमराज के लिए जलाया जाता है जिसे लोग पलट कर भी नहीं देखते हैं।’[4] इससे वे यह बताना चाहती है कि जिस तरह किसी भी बच्चे को घर का कुल दीपक माना जाता है, किन्तु जो बच्चा थर्ड जेंडर पैदा होता है उसे उस यमराज के दीप की तरह माना जाता है। इसी यम के दीप से वे हिजड़ा जन्मे हुए बच्चे को मानती है। साथ ही सोना को भी इसी के अंतर्गत लिया जा सकता है जिसे एक पागल द्वारा जन्मे होने के कारण उसे लोग पलटकर भी नहीं देखते हैं। वही अगर एक सामान्य लिंग में पैदा हुआ बच्चा है तो उसे घर का कुलदीप माना जाता है। ऐसे बच्चों को उनके माता- पिता बड़े आनंद से अपनाते हैं। इसी कारण यह शीर्षक उपन्यास के लिए सार्थक माना जा सकता है। इसी संदर्भ में हिजड़े की तुलना यमदीप से की गयी है उसके बारे में प्रो. नीरू लिखती है- “ लेखिका ने ‘तीसरे लिंग’ की समूची त्रासदी को , उसके प्रति समाज की उपेक्षा और क्रूरता को, उस उपेक्षा से उपजे उसके दुःख , क्षोभ और आक्रोश को तथा इस

सबके बावजूट उसकी सदाशयता को, उसकी मानवीय करुणा को, उसके साहस को और उसकी निर्भिकता को व्यंजित करने के लिए एक बहुत सार्थक प्रतीक चुना है।"[5] इस कथन से वे यह स्पष्ट करती हैं कि यह यमदीप का प्रतीक लिया गया है वह एकदम सही चुनाव किया गया, क्योंकि उनके सभी व्यथा, दुःख, दर्द को इससे जोड़ने का सही तरीका साबित होता है। जिससे अपने परिवार से भी जानबुजकर अकेला छोड़ा जाता है।

उपन्यास की शुरुआत प्रसव पीढ़ा से तड़प रही एक पागल स्त्री से होती हैं जहाँ उपन्यास की मुख्य पात्र नाज़बीबी अपने साथी मंजू, चमेली, शबनम छैलू के साथ वह पहुंच जाती है। वह उस औरत को देखती है किन्तु कोई भी उसे मदद नहीं करता। वह सभी से मदत माँगती है परंतु उसे कोई भी मदद नहीं करता है। वहाँ के सभी लोग अपने घरों के खिड़कियों से यहाँ सब तमाशा देखते हैं। नाज़बीबी वह सब देखकर अपने साथियों से कहती है "अब को पूछनहार नहीं इसका तो क्या हम भी छोड़ जाएंगे? अरे हम हिजड़े हैं, हिजड़े...इनसान हैं क्या जो मुंह फेर लें। जा जल्दी कर।"[6] इस संवाद से लेखिका ने नाज़बीबी के मुँह से व्यंग्यात्मक रूप से समाज के मुख्यधारा के लोगों पर करारा व्यंग किया है। नाज़बीबी इस पात्र के माध्यम से उसकी संवेदनशीलता, करुणा, दया और मानवीयता को दर्शाया है। नाज़बीबी में मातृत्व की क्षमता न होते हुए भी वह उस बच्चे को स्वीकार करती है। वह उसे अपने साथ बस्ती के सभी सदस्यों से छिपाकर रखती है। वह उस बच्चे को डेरे पर लेकर आती है। हिजड़ों को अपने परिवार को छोड़कर हिजड़ों के साथ रहना पड़ता है। जहाँ उन्हें हिजड़ा गुरु द्वारा अपनाया जाता हैं।

हिजड़ा समुदाय अपना घर छोड़ने के बाद हिजड़ा गुरु के डेरे पर रहते हैं।"गुरुजी पूरे शहर के हिंजड़ों के गुरु हैं। हिंजड़ा समुदाय में उसकी ही बात चलती है। उसका अनुशासन ही सर्वोपरि है। उनका निर्णय सर्वमान्य है।"[7] इस बात से यह कहा जा सकता है कि नाज़बीबी को उस बच्ची के पालन पोषण के लिए अपने गुरु से बात करनी है। नाज़बीबी बच्ची को अपने पास रखकर उसकी एक माँ की तरह ख़्याल रखती हैं। उसी बच्ची को देखने हिजड़े आते हैं। वे

अपने आप को कोसते रहते हैं। यहाँ मेहताब गुरु के निर्णय काफ़ी महत्व रखते हैं। जब मेहताब गुरु उसे परवानगी देते हैं तब वह खुश हो जाती है। भलेही गुरु का आदेश सर्वोपरि माना जाता है, किन्तु गुरु ने हमेशा अपने डेरे के हिजड़ों के खुशी देखकर ही अपना निर्णय सुनाते है। वे उन्हें अपना परिवार मानते हैं।

यहाँ के सभी हिजड़ों को मजबूरन अपने परिवार से दूर होना पड़ता हैं। जब किसी अच्छे घर में एक बच्चा पैदा होता है, जिसकी शारीरिक संरचना एक पुरुषत्व को दिखलाती है किन्तु जब वह धीरे-धीरे बड़ा होता है उसमें स्त्री के भाव उत्पन्न होने लगते हैं। इसी तरह नंदरानी उर्फ़ नाज़बीबी पैदा एक लड़की के रूप में हुई थी पर जब वह बढ़ती गयी तब उसकी दाढ़ी मुछ भी आने लगी। वह इसी कारण स्कूल नहीं जा पायी वह भलेही पढ़ने में होशियार थी किन्तु वह अपनी पढ़ाई आठवीं कक्षा तक ही पूरी कर पायी। इसी तरह छैलू भी अपने परिवार से दूर भाग जाता है।

छैलू बीस-बाईस वर्ष का था, वह इलाहाबाद के अस्पताल में वार्डब्वाय था। इसे भी इतना अच्छा पद पर होते हुए भी अपने परिवार को छोड़कर हिजड़ा बस्ती में आना पड़ता हैं। वह समाज के डर से छैलबिहारी से छैलू बनकर हिजड़ों के डेरे में रहता हैं। यहाँ नाज़बीबी और छैलू समाज में अपने माता-पिता की इज्जत रखने के लिए अपने परिवार को छोड़ते हैं। छैलू भी नाज़बीबी को उस लड़की को पालने में काफ़ी मदद करता है। इन दोनों पात्रों के माध्यम से लेखिका ने हिजड़ों का उस नन्ही सी बच्ची के प्रति प्रेम, संवेदना, सहानुभूति आदि को दर्शाया है। छैलू के पुराने चिकित्सकीय अनुभव के कारण वह उस बच्ची को बचा सके, वह कहता है "पहले जल्दी से इसे थोड़ा-सा शहद-पानी मिलाकर रुई के फाहे से मुंह में टपकाओ। तीन घंटे तो हो ही गए होंगे पैदा हुए न?"[8] इसी वाक्य से यह स्पष्ट होता है कि एक हिजड़े का शिक्षित होने के कारण वे अपने ज्ञान से किसी भी परेशानी से बाहर निकल सकते हैं। इसी शिक्षा के कारण ही वे अपनी सभी जरूरतों को अपने आप से पूरा कर सकते हैं।

हिजड़ा समुदाय शिक्षित होने के कारण ही उस बच्ची के भविष्य का अच्छे से निर्णय ले पाते हैं। वे भलेही हिजड़ा समुदाय में आने से पहले किसी धर्म के हो किन्तु वे हिजड़ा समुदाय में आने के बाद एक ही धर्म को अपनाते हैं। वे मुर्गेवाली देवी की उपासना करते हैं। वह उस बच्ची को वे टेपकी (नवजात शिशु) कहते हैं जो उनकी किन्नरों की सांकेतिक भाषा है। वे उसका नामकरण करना चाहते हैं। इसी वक्त शबनम एक गंभीर प्रश्न सामने लाती है कि बच्ची का हिन्दू या मुसलमान नाम रखेंगे? महताब गुरु भी चिंतित हो गए किन्तु उन्होंने उस लड़की को किसी धर्म या जाति से नहीं जोड़ा बल्कि सभी धर्म एवं जाति में समान हक होने वाला नाम रखा। महताब गुरु कहते हैं " अरे, दुर रे धरम ! रात- बिरात एक पागल के साथ मुंह काला किया, धरम कि बात पर...थू है ऐसे धरम पर, और ऐसे धरंवालों पर। इसका नाम सोना रहेगा, सोना। सारे धरम में सोना, सोना होता है-कीमती, चमकदार।"[9] इस संवाद से हिजड़ों की मानसिकता का वर्णन लेखिका करती है। समाज के मुख्य धारा का अगर कोई मनुष्य होता तो उस लड़की को अपने ही धर्म का नाम रखता। हिजड़ा समुदाय के साथ भलेही भगवान ने कुदरती मज़ाक किया है किन्तु वे अपने आप को कोसते हैं। वे किसी भी सामान्य इनसान के बच्चे को अपने जैसे बनने नहीं कहते हैं।

यहाँ नाज़बीबी की आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नहीं थी जिससे वह सोना की परवरिश अच्छे से कर सके। वह सोना की वजह से अपने धंधे पर नहीं जा पाती थी। इसी करण उसके पास पैसे की कमतरता होती है। मंजू अपनी परेशानी को व्यक्त करते हुए कहती है, "यहाँ जजमान ही का भरोसा। कभी-कभार चोसा मिला तो ठीक, नहीं तो वीला (कंजूस) मिल गया तो बहुत होगा एक पानकी (दस रुपये का नोट) या आधा काटका (पचास रुपये का नोट) थमा देगा। हमारे पेट की सुध किसे है? न सरकार को, न जजमान को।"[10] इससे यह पता चलता है कि भलेही हिजड़ों के लिए संविधान में नियम लागू करवाएँ गए है किन्तु हिजड़ों के लिए उसका उपयोग कितना हो रहा है। हिजड़ों में भी उनके कुछ नियमों के पालन करने होते हैं।

महताब गुरु कभी भी उन्हें गलत काम करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते हैं, किन्तु ऐसी बदत्तर स्थिति के लिए वह नज़बीबी को गिरिया (रखैल पुरुष) रखने की इजाज़त देता है। वे कहते हैं "गिरिया बना ले किसी को, नाज़। मंजू ठीक कहती है कभी-कभार धंधे पर भी चली जाना।" [11] इस बात के पीछे भी उनकी आर्थिक कमजोरी दिखाई देती है और साथ ही कम से कम व्यक्ति के साथ संबंध बनाने के कारण उनका जीवन रोग ग्रस्त होने से तो बच जाए गा। इसी कारण वे इस परंपरा की शुरुआत करते हैं। आर्थिक कमजोरी उन्हें इसी लिए झेलनी पड़ती है। सोना को नाज़बीबी अच्छे स्कूल में पढ़ाना चाहती है।

सोना जब धीरे-धीरे बड़ी होने लगती है तब वह अपनी तोतली आवाज से सभी को मोह लेती है। नाज़ सोना का दाखिला अच्छे स्कूल में करना चाहती है। इसी समय वह काफ़ी कठिनाइयों से गुजरती है। एक हिजड़े के बच्चे को स्कूल में दाखिला देना याने उनके स्कूल का नाम बर्बाद होना। स्कूल के खर्च के लिए महताब गुरु उससे बिसरा माता को दिया जाने वाले हिस्से की छूट दे देते हैं। इससे हिजड़ों के उदात्त दृष्टिकोण को देख सकते हैं। इस उपन्यास के माध्यम से यह देखा जा सकता है कि नज़बीबी सोना को एक माँ की तरह ही पालती है। वह कई परेशानियों के बाद सोना का दाखिला अच्छे स्कूल में करवाती है। स्कूल की अध्यापिका उसका अपमान, मज़ाक और उपेक्षा के कारण उसे बहू दुःख होता है, किन्तु मुख्य समस्या स्कूल में माता- पिता का नाम, जाति, धर्म आदि का उल्लेख करना आवश्यक माना जाता है। वह इसी के बारे में सोचती है "मां के नाम की जगह वह अपना असली नाम 'नंदरानी' भरवा देगी। पिता का नाम कुछ भी...लेकिन...अच्छा, उसे स्वर्गवासी दिखा देगी। धर्म-हिन्दू, जाति अपनी पुरानी वाली यानी सोना रघुवंशी। पर सोना को भी सिखाना होगा। मम्मी का नाम नंदरानी, पूरा नाम सोना रघुवंशी।"[12] इससे यह स्पष्ट होता हैं कि हिजड़ा होने के कारण वह अपनी असली पहचान को छिपाती है और सोना को भी झूठ बोलने कहती है।

नाजबीबी समाज के डर से अपनी पहचान छिपाती आई है। वह अपने काम के बारे में सोना को भी कुछ नहीं बताती है। वह उसे झूठ बोलना सिखाती है क्योंकि अगर उसके स्कूल में

पता चला कि उसकी मम्मी हिजड़ा है तो उसका बच्चे मज़ाक उड़ायेंगे। नाज़ को सोना वह हर बात बताती जो स्कूल में उसके साथ होती थी। वह सुबह उठकर उसके लिए टिफ़िन बनाती थी। वह एकदम माँ की तरह खयाल रखने लगी थी। सोना को स्कूल में छैलू के साथ भेजती है। वह पुरुष का वेष धारण कर उसे स्कूल छोड़ आता। एक बार जब स्कूल में सोना को पासपोर्ट साइज़ फ़ोटो चाहिए था तब फोटोग्राफर के ताने सुनकर नज़बीबी गुस्सा होती है। इन प्रसंगों के माध्यम से हमें हिजड़ों के समाज के लोगों द्वारा किए अपमान को देखने मिलता है।

जब भी वह सोना के बचपन के किस्से देखती तब वह अपने अस्तित्व से जुड़ जाती। यहाँ उसका उसके परिवार के साथ संबंध को देखने मिलता है। उसके माता-पिता और उसकी बहन नंदिनी और भाई नन्दन उससे बहुत स्नेह करते थे। नंदरानी का बचपन से ही सपना था कि वह डॉक्टर बनकर अपने माता-पिता का नाम रोशन करेगी किन्तु उसकी आधी ही पढ़ाई हो पायी। जिसके कारण उसका सपना चूर हो गया। उसकी बड़ी बहन की शादी होने में भी दिक्कत होने लगी। एक हिजड़ा होने के कारण उसे परिवार में अकेला महसूस होने लगा। इसी अकेले पन के कारण वह अपना घर परिवार त्याग कर आती है। जब वह हिजड़ों के डेरे पर आती है तब वह अपने परिवार से छिप-छिपकर मिलती है। उसके माता-पिता भी उसे मिलने आते हैं। एक बार हिजड़ा समुदाय में जुड़ने के बाद उनका सम्पूर्ण परिवार हिजड़ा समुदाय ही बन जाता है, किन्तु नाज़बीबी इन सभी यादों से बाहर नहीं आ पाती है। जिसके कारण महताब गुरु उसे समझाते हैं "देखो अब यही तुम्हारी दुनिया है। आज से भूल जाओ कि तुम कहाँ पैदा हुई। कौन मां-बाप हैं। इसी में तुमारी भलाई है, उनकी भी। नहीं तो बदनामी और दुःख छोड़ कुछ नहीं मिलेगा। बेसरा माता की शरण में आ गई हो, अगला जनम सुधारो। अपना नाम तक भूल जाओ आज से। क्या नाम है तुम्हारा।"[13] महताब गुरु के इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिजड़े को समाज के इसी घटिया मानसिकता के कारण अपने

परिवार से बिछड़ना पड़ता है। वे उनके पहले के अस्तित्व को भूल कर अपने अगले जनम में इस तरह न बनने की प्रार्थना करते हैं।

इसी को ध्यान में रखकर वह उन लोगों के साथ घुलमिल जाती है और उनके साथ नेग माँगने जाती है। नाज़बीबी भलेही उनसे घुल मिल जाती है किन्तु अपने माता पिता से उतना ही लगाव रखती है। वह अपने माँ और पापा को फोन नहीं करती क्योंकि उसका भाई उसको उसके माँ और बाबा से बात नहीं करने देता है। इसी तरह एक बार वह अपने घर फोन तो लगाती है किन्तु अपनी पहचान छिपाकर वह बात करती है। उसके पिता से उनकी बात होती है तब उस पता चलता है कि उसकी माँ बहुत बीमार है। यह बात पता चलते ही वह तुरंत आपने माँ-बाप से मिलने वह सोना को डेरे पर ही रख उनके घर पहूँच जाती है। वहाँ उसकी भाभी उसे अपमानित करती है, वह उसे माँ की मृत्यु की बात बताते ही नाज़ शमशान पहुंच जाती है। वहाँ भी उसे उपेक्षित नजरों से देखा जाता है। इस संदर्भ से यह कहा जा सकता है कि हिजड़ा पैदा होने पर न ही उसे समाज में अपनाया जाता है और न ही उसके खुद के परिवार के सदस्य उसे अपनाना चाहते हैं। नाज़बीबी के वहाँ आने पर उसका भाई अपमानित महसूस करता है,सिवाय उसके पिता के।

इसी कहानी के समांतर लेखिका ने दूसरे पात्र मानवी जो पत्रकार है। उसी के साथ कही न कही समान व्यावहार होता है। वह भी अपने माता-पिता से बहुत प्यार करती है किन्तु समाज में एक स्त्री की भी हालत बदत्तर बना दी है। वह 'आधी शक्ति' नामक फीचर को समाचार पत्र में चलाती थी। जिसमें वह महिलाओं की विभिन्न समस्याओं को खत्म करने का कार्य करती थी। किन्तु समाज एक स्त्री को उच्च पद पर देखना स्वीकार नहीं करता। पत्रकारिता का कोर्स करते समय हरीन्द्र नामक गुंडा उसे अपने शारीरिक हवस का शिकार बनाता है। यह सब देख उसके घराने में काफ़ि हलचल मच जाती है। मानवी का बड़ा भाई इस हरकत के लिए मानवी को ही जिम्मेदार मानता है। इसी डर से मानवी अपने माँ बाप के साथ शहर आती है। यहाँ वह 'उध्दारगृह' के महिलाओं का साक्षात्कार लेती है। क्योंकि वह उन्हें उनके

परिवार से मिलाना चाहती है। इसी तरह उध्दारगृह के महिलाओं पर हुए शोषण को भी मानवी द्‌वारा दिखाया है।

उसे साक्षात्कार लेने के लिए नहीं दिया जाता पर डी.एम. आनंदकुमार के कारण वह साक्षात्कार ले पाती है।'नारी उध्दारगृह' की अध्यक्ष का मंत्री मन्नालाल से अच्छे संबंध कोने के कारण मानवी को गुंडे भेजकर धमकाया जाता है। इन गुंडों में हरीन्द्र जिसने उसके साथ गाँव में बत्तमीजी की थी, वह होने के कारण वह इसी सिलसिले में आनंदकुमार से अपने सुरक्षा के लिए एक अंगरक्षक ले लेती है।

देवता पांडे जो मानवी के साथ गलत व्यवहार करता है इसके बारे में लेखिका कहती है "उसने सरकती निगाह से देवता पांडेय को देखा। वह अपना शर्ट बेल्ट के नीचे पैंट में खोंस रहा था। इस भाव से मानो बैठे रहने से शर्ट बेतरतीब हो गयी थी। मानवी को एक बार फिर घृणा महसूस हुई। एक बुनियादी भावना के पीछे इतनी निर्लज्जता?"[13] यह संवाद महत्वपूर्ण है क्योंकि समाज में स्त्री अपने अंगरक्षक के साथ भी सुरक्षित नहीं महसूस कर सकती है। इसी कारण वह हरीन्द्र के डर से जीना तय करती है किन्तु ऐसे भक्षक जैसे सुरक्षा रक्षक को वह हटवा देती है। इस किस्से से लेखिका नाज़बीबी और मानवी के जीवन के संघर्ष को साथ साथ ही प्रस्तुत करती है। मानवी और नाज़बीबी एक दूसरे को जानते थे, जब वह उसके कॉलनी में नेग माँगने आई थी और बाद में अग्रवाल आंटी के यहाँ मिली किन्तु तब वह उससे बात नहीं कर पायी। नाज़बीबी मानवी से अपने पापा से बात करने फोन माँगती है।

मानवी ने उसकी उसके पिता से बात करवाई थी। तब वह उसे कहती है कि जरूरत पड़ने पर वह भी उसकी मदद करेगी। सोना बड़ी हो रही थी किन्तु नाज़ के मुहल्ले से कोई उसकी शिकायत करता है जिसके कारण नाज़बीबी के डेरे पर पुलिस आकर सोना को उनके हवाले करने की धमकी देते हैं। इसी डर से सोना को उद्‌धारगृह छोड़ना पड़ता है। एक दिन नारी उद्‌धारगृह की लड़की के गुम होने की खबर समाचार पत्र में आ जाती है तब सोना भी वही

होने के कारण छैलू अखबार में छपे नारी शोषण के बारे में बताता है-" वो एक लड़की किसी तरह से वहाँ से भाग निकली थी। उसी ने बयान दिया है कि वहाँ उन सबके साथ गलत धंधा करवाया जाता है। बड़े-बड़े लोग रोज आते हैं। उसमें से किसी को चाटकर ले जाते हैं और फिर पहुंचाया जाता है। जो लड़की विरोध करती है उसे मारा-पीटा जाता है। सिगरेट से जलाया जाता है। देखो, इस तस्वीर में इसकी पीठ की फोटो है। कितने दाग हैं इस पर।"[14] इसी संदर्भ से यह स्पष्ट होता है जिस तरह एक हिजड़े को मानसिक एवं शारीरिक पीड़ा का सामना करना पड़ता है उसी तरह एक स्त्री के साथ भी ऐसे शोषण किया जाता है। इस घटना में कामिनी के साथ अन्य कई लड़कियाँ भी इसकी शिकार बनी थी।

अंत में इस खबर को मन्नाबाबू और पुलिस वाले इस घटना को रफा दफा करना चाहते थे। इसका पर्दा फ़ाश करने के कारण जब मानवी वहाँ जाती है तब मन्नाबाबू के गुंडे उसे जान से मार डालना चाहते हैं । उसी समय नाज़बीबी और उसके हिजड़ा साथी उनसे लड़कर उसे उन गुंडों से बचाते हैं। मानवी की नाज़ से महताब गुरु से 'आधी शक्ति' फिचर के कारण साक्षात्कार के समय पहचान हुई थी। उसे अस्पताल लेकर जाते हैं। नाज़बीबी उसकी मन से सेवा करती है। मानवी को बचाते बचाते छैलू को गोली लग जाती है। इन दोनों की देखभाल नाज़ अकेले करती है। समाज में हिजड़े की मदद करने के लिए कोई हजार बार सोचेगा किन्तु इस उदाहरण के द्वारा लेखिका ने हिजड़ों के मानवीयता को समाज के सामने प्रस्तुत किया है। मानवी को किसी पुरुष ने मदद नहीं की बल्कि वे अपनी जान बचाकर भाग जाते हैं। इन्हीं पुरुषों का असली चेहरा नाज़बीबी समाज के सामने लाती है-"किसी तरह बचे थे बाबू भी भाग गए थे मेम साहब को छोड़कर? अरे, किस बात के मर्द बनते हो आप लोग। एक औरत जात को चार गुंडे मारना चाह रहे थे और आप लोग छोड़कर भाग गए।"[15] यहाँ इस संवाद द्वारा लेखिका समाज के सामने पुरुषों के उस सच को सामने लाने का प्रयत्न करती है जिसपर समाज द्वारा पर्दा डाला जाता है। नाज़बीबी एक हिजड़ा होते हुए मानवी की जान बचाती है।

जिससे यह साबित होता है कि पुरुषों से भी अच्छे हिजड़े किसी भी काम को संभाल सकते हैं।

मानवी को उसका सगा भाई भी मदद के लिए नहीं आता है किन्तु नाज़बीबी अपने हिजड़ा साथियों के साथ उसके माता-पिता को ढूंढ निकालने का भरोसा दिलाती है। यहाँ अंत में मानवी नाज़बीबी को यह कहती है कि तुम्हें अपने साथियों को सचेत करना चाहिए कि इन भ्रष्ट मंत्री के खिलाफ़ आवाज उठाकर जनता को उनका हक दिलाने का कार्य वे लोग ही कर सकते हैं। इसी बात को सकारात्मक तरीके से लेते हुए नाज़बीबी कहती है-" जैसा कहोगी, मेम साहब, वैसा ही होगा। जो भी काम होगा, मैं जनता की भलाई के लिए करूंगी, क्योंकि अपने तो आगे पीछे कोई नहीं है जिसके लिए दूसरों की रोटियां छीनूंगी और अपना घर भरूंगी। जरूरत पड़ी तो भ्रष्ट लोगों के खिलाफ हथियार भी उठाऊँगी। हर गंदगी को जड़ से साफ कर दूँगी। दुनिया में शांति रहे, और क्या चाहिए किसी को?"[16] नाजबीबी के इस कथन से ही हिजड़े समाज के मुख्यधार के लोगों से भी जनता के सभी समस्याओं को दूर कर सकते हैं। यहाँ नाजबीबी एक ऐसी पात्र है जो बिना किसी स्वार्थ के समाज में घटित दुराचार को समाप्त करना चाहती है।

इस उपन्यास का कथानक दो वातावरणों में लेखिका ने वर्णित किया है। मानवी की कथा शहरी परिवेश में चलती है और नाज़बीबी की कथा हुकुलगंज के बस्ती के निम्न वर्ग के लोगों की आबादी में चलती है। इस उपन्यास के सामाजिक वातावरण में सभी हिजड़ों का समाज की मुख्यधारा से हटकर रखा जाता है साथ ही एक सभ्य समाज के लोगों का प्रसव पीड़ा से तड़प रही पागल महिला को न स्वीकार ने द्वारा वहाँ लोगों की संवेदनहीनता भरा वातावरण वह उत्पन्न हुआ है। समाज में नपुंसक लोगों को ही नहीं बल्कि एक स्त्री को भी पुरुष से बचकर रहना पड़ता है। नेता मन्नाबाबू के द्वारा राजनैतिक वातावरण में हुए भ्रष्टाचार एवं स्त्रियों पर हुए शोषण का चित्रण किया गया है। इसी से हिजड़ों के रीति-रिवाज और उनकी

गुरु शिष्य के संबंधों को यहाँ उजागर किया है। हिजड़ों के परिवेश में जाकर लेखिका ने उनके भाषा पर गौर किया।

उपन्यास की भाषा को काफ़ी सरल और स्पष्ट भाषा में लिखी गयी है।'यमदीप' की कथा बनारस भूमि की कथा है जिसके कारण यहाँ 'अवधि' एवं 'भोजपुरी' भाषा के बोलियों का प्रयोग किया है। मुन्नी के द्वारा यह शब्द बोले गए है, जैसे 'बेना' (गेंहू की नरई से बना हुआ पंखा), 'दबंगई' (अकड़), 'टेटुआ' (गला) आदि। नीरजा माधव ने भलेही यह उपन्यास सबसे पहले लिखा हो किन्तु हिजड़ा समुदाय के सभी तथ्यों को इकट्ठा कर उनके सांकेतिक शब्दों का भी इस्तेमाल किया है जैसे 'छिबरी' (लिंग रहित हिजड़ों के लिए प्रयुक्त शब्द), 'टेपका' (नवजात शिशु), 'टेपकी' (नवजात लड़की), 'पुन्न'(पुण्य), 'सभागन'(शुश्रूषा), 'चोसा' (अच्छा), 'छिंदु' (हिंदू), 'डामारी' (ढोलक) आदि। इन शब्दों के बारे में लेखिका ने कहा था की जब उनके घर वे किसी अवसर पर आए थे तब उनकी सांकेतिक भाषा सुनी और बाद में उनपर तथ्य इकट्ठा किए है।

ग्रामीण शब्दों का इस्तेमाल किया है जैसे –जजमान, एबहीं, पनारा आदि। उर्दू शब्दों का प्रयोग जैसे- अल्लाह, दोज़ख आदि। अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है -कॉलम, कॉल, कैबिनेट, ऑफिस आदि। मुहावरें एवं लोकोक्तियों का भी इस्तेमाल किया है जैसे- पासा पलटना, थू थू करना, हाय तौबा करना आदि। मुहावरें जैसे 'साँप मर जाएँ लाटी भी न टूटे', 'जब जागे तब सबेरा' आदि।

उपन्यास में पूर्व दीप्ति शैली का प्रयोग किया है जैसे नाज़ के बचपन और परिवार की बात बताते हुए और साथ ही मानवी के साथ हुए गाँव वाले किस्से को बताते वक्त किया गया है। यहाँ कॉलम लिखते समय स्तंभ लेखन शैली का प्रयोग किया है। इस उपन्यास में लेखिका लोगों को अपनी भाषा से जैसे बांधकर रखती है।

'यमदीप' उपन्यास लिखने के पीछे का मुख्य उद्देश्य यह है कि तृतीय पंथी के लोगों को समाज के सभ्य लोगों से संबंध जोड़कर उनके बुनियादी अधिकार को मिलवाने का प्रयास किया गया है। सरकार द्वारा तृतीय लिंग समुदाय को भी अन्य वर्गों की तरह आरक्षण देने का उद्देश्य रहा है। तृतीय प्रकृति के लोगों पर लगे जो भी गलत अफ़वाए है उन्हें नीरजा माधव महताब गुरु द्वारा लोगों को उनकी सच्चाई बताती है। हिजड़ा समुदाय में आते हुए भी वे सामान्य मानवों से भी अधिक संवेदनशील होते हैं यह कई किस्सों द्वारा बताया है। हिजड़ा माँ बनने के सक्षम न होते हुए भी बच्चों की परवरिश एक माँ के समान कर सकते हैं। वे बिना अपने जान की परवाह न करते हुए मानवी की जान बचाते है। इन सब में वे अपने हित के बारे में नहीं सोचते हैं। लैंगिक विक्षमता से पैदा होने के कारण परिवार से बिछड़ने के दुःख को लोगों तक पहँचाने का कार्य किया है।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि नीरजा माधव ने 'यमदीप' उपन्यास के माध्यम से थर्ड जेंडर की संवेदनशीलता, मानवीयता, करुणा, निस्वार्थ भाव आदि सभी चीजों को समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। इस उपन्यास के पत्रों के संवाद ही कथानक को आगे बढ़ाने का कार्य करते हैं। हिजड़ों के साथ स्त्रियों की दुर्दशा एवं शोषण को बड़े बारीकी से चित्रित किया है। देखा जाएँ तो 'उद्धारगृह' की स्त्रियाँ और हिजड़ा समुदाय के पारिवारिक समस्या में कोई अंतर नहीं है दोनों को समाज के डर से अपने माता-पिता और परिवार के सदस्यों को छोड़कर रहना पड़ता है। उन्हें उनके परिवार द्वारा नहीं स्वीकारा जाता है। उसी प्रकार मानवी और नाज़बीबी में काफी समानता नज़र आती है। जिस प्रकार नाज़बीबी को समाज के सभी लोगों द्वारा उपेक्षित नजरों से देखा जाता है, उसी तरह जब हरीन्द्र मानवी पर हवस निकालता है तब समाज द्वारा उसे ही जिम्मेदार माना जाता है। दोनों के परिवारों में भी उनके भाइयों का उन दोनों को तिरस्कृत नजरों से देखा जाता है। इन सभी मुद्दों को देखते हुए यह कहाँ जा सकता है कि इस उपन्यास में किन्नरों की व्यथा के साथ परिवार से बेदखल स्त्रियों की भी व्यथा का विस्तारपूर्व चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

3.2 प्रदीप सौरभ: 'तीसरी ताली' उपन्यास की समीक्षा

उभयलिंगी सामाजिक दुनिया के असली चेहरे को समाज के सामने लाने का प्रयास किया ही साथ ही, समलैंगिकता का भी चित्रण किया है। इसी संदर्भ में सुधीर पचौरी उपन्यास पर लिखे मन्तव्य में यह कहते हैं- "समकालीन 'बहुसांस्कृतिक' दौर के 'गे' ,'लेस्बियन', 'ट्रांसजेंडर' अप्राकृत- यौनात्मक जीवन शैलियों के सीमित सांस्कृतिक स्वीकार में भी यह दुनिया अप्रिय, अकाम्य, अवांछिक और वर्जित दुनिया है।" [17] इस कथन से उभयलिंगी समुदाय के और समलैंगिक समुदाय के लोगों को समाज में अस्वीकारा जाने का चित्रण किया है।

प्रदीप सौरभ ने 'तीसरी ताली' उपन्यास में किन्नरों के निजी दुनिया में गहराई से झाँककर समाज को इनसे अवगत कराया है। इस उपन्यास में किन्नरों की गुरु-शिष्य परंपरा, रहन-सहन, देवी, रीति-रिवाज़, व्यवसाय, प्रेम प्रकरण आदि का चित्रण किया है। जन्मजात किन्नर और मजबूरी वश बने किन्नरों के जीवन की व्यथा को और जबर्दस्ती बनाए गए किन्नरों के भी पीछे के राज़ को यहाँ उजागर किया गया है। हिजड़ा पैदा होने के उपरांत भी ऐसे भी पात्र होते हैं जिन्हें हिजड़ों के रीति- रिवाज़ को नहीं अपनाना होता है। जिसके कारण वे आत्महत्या तक करते हैं। ऐसे भी हिजड़े है जो अपने पहले की पहचान छिपाने के लिए अपना धर्म परिवर्तन कर लेते हैं। हिजड़ों के एक दिन के सुहागन होने की प्रथा को भी यहाँ चित्रित किया है साथी इस उपन्यास के अंत में हिजड़ों के धार्मिक स्थल कुवागम मेले का भी बारीकिसे वर्णन इस उपन्यास में किया गया है।

इस उपन्यास को 2010 में 'वाणी प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित किया गया था। इस उपन्यास के माध्यम से किन्नरों के संस्कृति का वर्णन किया है; साथ ही हिजड़ा पैदा होने के कारण उनके जीवन की विडम्बना का सजीव चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में आधुनिकता और आंदोलनों के बावजूद भी हिजड़ों को तिरस्कृत भाव से देखा जाता है। हिजड़े प्रभु राम द्वारा दिये गए आशीर्वाद का ही पालन करते हैं। ऐसे भी किन्नरों का चित्रण किया है जो सिग्नलों

पर भीख माँगते हैं। जिन बच्चों को घर छोड़कर जाना पड़ा वे अपने दम पर अपना नाम कमाते हैं। किन्नरों के साथ जो समलैंगिकों के प्रेम सम्बन्धों के बारे में और किन्नरों के सभी रीति-रिवाज़ आदि को अच्छे से समाज के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उपन्यास का कथानक में कई सारे उप कथाओं का मिश्रण किया गया है।

उपन्यास का प्रारम्भ भारत की राजधानी दिल्ली शहर के सिद्धार्थ एनक्लेव सोसाइटी से होती है। कॉलनी के लोगों की रोज़मर्रा जिंदगी का वर्णन किया है। कोलनी में शांति थी पर ढोलक पर पड़ी थाप और बेसुरे संगीत के साथ खुले हाथों की तालियों से वहाँ के लोगों में हलचल पैदा की थी। यहाँ हिजड़ों को किसी खुशी के दीन ही शगुन दिया जाता है। उनका हिजड़ों के प्रति नजरियाँ ही गलत बना हुआ है। तीन बेटियों के बाद गौतम साहब के यहाँ लल्ला पैदा हुआ था किन्तु गौतम साहब दरवाजा नहीं खोलते। उन्हें शगुन नहीं दिया गया किन्तु इनकी सहानुभूति का चित्रण यहाँ किया गया है। इस प्रथम दृश्य में गौतम साहब द्वारा किए गए हिजड़ों के अपमान का चित्रण किया है। हिजड़ों की गुरु डिम्पल के स्वाभिमानी होने के कारण गलत काम जैसे सिग्नलों पर या दुकानों पर जाकर पैसे माँगने वालों से वह नफरत करती है।

हिजड़ों के प्रेम संबंध का चित्रण किया गया है जैसे सुनयना जो एक हिजड़ा होने पर भी शेरपा को चाहती है। सामान्य लड़का होने के कारण वह उसे नहीं चाहता है। इसी के साथी रानी इससे उसे बचनी चाहती है किन्तु राजा के एक गलती के कारण उसे रानी बनाया जाता है। यहाँ मंजु और राजा के यौन संबंधों के कारण मंजु गर्भवती बन जाती है। इसी कारण राजा को डिम्पल ज़बरदस्ती हिजड़ा बना देती है। वह अपनी इज्जत बचाने के लिए मंजु का गर्भपात करके बच्चादानी भी निकलती है। यहाँ डिम्पल मंजु को अपने स्वार्थ के लिए हिजड़े की तरह रखती है। यहाँ उसकी अनैतिकता के कारण राजा और मंजु एक दूसरे से अलग होते हैं। यहाँ उसपर राजा कांप्लेन कर पुलिस थाने भेजता है, किन्तु अंत में उसे अपने गलती का अहसास आजन्म महसूस होता है।

राजनैतिक लोगों का हिजड़ों के प्रति डर को दर्शाया है और हिजड़ों के प्रति जो अंधविश्वास है उसे फैलाया है। गौतम साहब और आनंदी आंटी उन माता-पिता में से है जिनके घर लैंगिक विकलांग बच्चा पैदा होता है। वे उन्हें पढ़ाने का कार्य तो करते हैं किन्तु स्कूल में भी उनका लिंग अस्पष्टता के कारण दाखिला होने में दिक्कत आती है। वे उन्हें समाज के आईने में नहीं लाते हैं। आनंदी आंटी की बेटी निकिता को जबर्दस्ती नीलम को सौंपती है। निकिता को हिजड़ों के रीति- रिवाजों एवं गिरियाँ रखने की प्रथा बिलकुल पसंद नहीं थी। हिजड़ा बनने की चुनरी रस्म से बचने के कारण निकिता आत्महत्या करती है। पैसे की आस में गोपाल जो एक सामान्य पुरुष था। वह गद्‌दी पर बैठने के लिए अपना पुरुषांग अस्पताल में जाकर काटता है, किन्तु हिजड़े उसे गुरु के रूप में नहीं अपनाते है, इसी लिए अन्ना मौसी उसका खून कर देती है ।

इसी के साथ लौंडेबाजों का भी शौक रखा जाता है। श्यामसुंदर सिंह का चहेता लौंडा ज्योति को गरीबी के कारण यह काम करना पड़ता है। यहाँ लौंडों पर बलात्कार किया जाता है। ज्योति जैसे लौंडे को मेहनत से काम करना होता है किन्तु वह दलित होने के कारण चाय की दुकान नहीं खोल पाता है। इसी अस्पृश्यता के कारण वे इसका शिकार बनते हैं। लौड़ेबाजी के साथ ही समलैंगिक सम्बन्धों का भी चित्रण किया गया है। सुविमल भाई को लड़कियों की गंध पसंद नहीं थी । वे रति से केवल समाज को दिखने के लिए शादी करते हैं। उनका अनिल के साथ संबंध बन जाता है। यहाँ भी उनमें अन्य ‘गे’ वैभव के आने से अनिल के संबंध टूट जाते हैं। हिजड़ों के पुरुषों के साथ संबंध दिखाया है। जहाँ सुनयना शेरपा को गिरिया बनाना चाहती है किन्तु वह सफल नहीं होती है। यास्मिन और ज़ुलेखा बचपन के दोस्त थी। वे दोनों लेस्बियन थी वे एक दूसरे को पसंद करती थी। वे भी सुविमल भाई जैसी थी जिस तरह उन्हें औरतों की गंध पसंद नहीं थी। उसी तरह इन्हें मर्दो से नफरत थी। यहाँ वे ‘नाज फ़ाउंडेशन’ द्‌वारा समलैंगिकता को अपनाने के लिए कोर्ट तक जाकर केस जीतते हैं।

विनीत उर्फ़ विनीता जो की परिवार में रहती तो है किन्तु समाज के डर से गौतम साहब उसे लड़का बनाकर रखते हैं। ऐसे व्यवहार के कारण वह जान बुझकर घर छोड़कर जाती है और अपने आप को पूरी तरह से आत्मनिर्भर बन जाती है । वह 'गेवर्ल्ड' ब्युटि पार्लर खोलती है जिसमें कई सारे फिल्मस्टार, फ़ैशन डिज़ाइनर आते हैं। वह अच्छे पद पर पहुंचने से लालची बन जाती है। जिससे वह सामान्य पुरुषों को दूसरे पार्लरों से ज्यादा पैसे देकर काम पर रखती। ऐसे रेखा चितकबरी जैसी भी गर्ल्स सप्लाइअर के यहाँ हिजड़ों और लौंडों की माँग बढ़ने के कारण सुनयना और पिंकी जैसे हिजड़े उसमें फस जाते हैं। यहाँ हिजड़ों को किसी भी कंपनी में वसूली करने भेजा जाता है। उनसे लोग घबराकर पैसे वसूलते हैं।

अंत में विजय फोटोग्राफर जिससे विनीता प्यार करती है, किन्तु विजय सिर्फ़ अपने शूट के लिए उससे नज़दीकियाँ बढ़ता है। इसी साथ मंजु को भी वह अपनी बातों में उलझाकर उसके स्विमिंगपूल में फोटो खिचता है। यहाँ वह अपने स्वार्थ के लिए उसे झूठा प्यार का नाटक करता है।

उपन्यास का अंत उनके धार्मिक स्थान कुवागम मेले के सभी धार्मिक विधियों की जानकारी दी है। यहाँ मंजु एक दिन के लिए सुहागन होने की रस्म को तो निभाती है किन्तु वह उनके रस्म के लिए नहीं बल्कि विजय को अपना पति मानकर वह रस्म पूर्ण करती है। वह वहाँ से भाग जाती है जिससे उनके रिवाज़ को वह तोड़ने का प्रयास करती है। प्रदीप सौरभ के उपन्यास के पात्र अपने आप में महत्वपूर्ण साबित होते हैं। जैसे किसी भी पात्र को समझने के लिए उनके संवाद काफ़ी महत्वपूर्ण साबित होते हैं। इसी संदर्भ में सुधीर पचौरी ने कहाँ है- " यहाँ जितने भी पात्र आते हैं वे सब नपुंसत्व या परलिंगी या अप्राकृत यौन वाले ही हैं।" [18] यहाँ उनका यह कहना है कि जिनकी लैंगिक संरचना अलग होती है और समलैंगिकता के ही पात्र यहाँ आये हैं। यहाँ अन्य सामान्य पात्रों का भी उतना ही महत्व है, जितना कि उभयलिंगी समुदाय के पात्रों के संवाद है। इस उपन्यास की यह एक विशेषता कही जा सकती है कि यहाँ पात्रों की प्रचुरता दिखाई देती है। यहाँ हर एक पात्र की अपनी

अलग कहानी है, किन्तु मुख्य पात्र डिम्पल, संत आशामई, सुनयना, रेखा चितकबरी(कॉलगर्ल्स रेकीट वाली), ज्योति, सुविमल, गौतम साहब , विनीत उर्फ़ विनीता, आनंदी आंटी, निकिता, राजा उर्फ़ रानी, गोपाल उर्फ बिन्दू, मंजु, फोटोग्राफर विजय आदि है।

उपन्यास की मुख्य पात्र हिजड़ा गुरु डिम्पल अपने शिष्यों को गलत रास्ते पर जाने से टोकती है। वह शुरुआत में अपने उसूलों के बारे में सुनयना को बताती है " हम हिजड़े जरूर हैं, पर हमारे भी कुछ उसूल हैं। हमारे पेट पर लात मारेगा तो भगवान भी इसे माफ नहीं करेगा।"[19] इस कथन से डिम्पल का अपने शिष्यों को सीधे मार्ग पर चलने की बात कही है। इससे यहाँ कहाँ जा सकता है कि उसकी भगवान के प्रति श्रद्धा दिखाई देती है। डिम्पल सिगनलों और दुकानों में जाकर पैसे माँगने वालों को छिछोरा कहती थी। वह सभी साथियों को प्रभु राम के संदेश का पालन करने कहती है। वह कला मौसी को समझती है, " अपने इलाके में नाच-गाकर पैसे कमा। भिखारियों की तरह सिगनल पर क्या भीख माँगती है! अपने साथ हम सबकी इज्जत का भी कचरा करती है।"[20] इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि वे भलेही हिजड़े हो किन्तु उनके लिए उनकी समाज में इज्जत काफ़ी मायने रखती है।

डिम्पल भलेही स्वाभिमानी हो किन्तु उसका स्वार्थी स्वभाव भी यहाँ दिखाया गया है। वह अपनी समाज में इज्जत को बचाने के लिए राजा का पुरुषांग काटती है। इसके द्वारा मंजु गर्भवती बनती है इसी कारण उसका बच्चा गिराकर उसकी बच्चादानी निकालने का स्वार्थी कार्य करती है। यहाँ हिजड़ों के गुरु संत आशाबाई कहती है " कुदरत से खिलवाड़ करने का किसी को हक नहीं है। अपने फायदे के लिए किसी को हिजड़ा बनाना पाप है। ऐसा करने पर हिजड़े को सौ बार हिजड़े का ही जनम लेना पड़ता है और फिर भी उसका पाप कम नहीं होता है।"[21] यह कथन से संत आशाबई हिजड़ों को भलाई के मार्ग पर जाने का संदेश देती है। डिम्पल यहाँ पापी साबित होती है।

मंजु एक सामान्य लड़की थी जिसे वह अपने बेटी की तरह पालती है। यहाँ हिजड़े के बेटी को कोई नहीं अपनायेगा इसी दर से वह उसे हिजड़े के वेश में बड़ा करती है। समाज में थर्ड जेंडर के प्रति मानसिकता काफ़ी संकुचित बन गयी है।

समाज में हिजड़ों का शुभ अवसरों पर नेग एवं शगुन देना समाज द्वारा शुभ माना जाता है। गौतम साहब जब उन्हें अंदर न लेते हुए बाहर से ही भेजते हैं। इसी लिए आनंदी आंटी कहती है, " पैसे नहीं थे तो मुझसे ले लेते! हिजड़ों को खाली हाथ लौटाने से अपशकुन होता है।" [22] आनंदी आंटी हिजड़ों के प्रति काफी स्नेह रकती है । इसके पीछे उसकी बेटी भी हिजड़ा पैदा हुई थी। इसी कारण उसे स्कूल में दाखिला नहीं मिला था, फिर भी उसे प्राइवेट परीक्षा देकर आठवीं कक्षा तक पढ़ाया था। निकिता में हिजड़ों के गुण दिखने के कर समाज में उसे उपेक्षित नजरों से देखा गया। इसी कारण उसे हिजड़ों को सौंपा जाता है। अंत में वह मर जाती है।

इसी तरह गौतम साहब के यहाँ थर्ड जेंडर बच्चा पैदा होता है। वह भी उसे समाज के डर से छिपाकर रखते हैं किन्तु विनीत को लड़कियों जैसा रहना पसंद था इसी कारण वह समाज में अपने पिता की बदनामी न होने के कारण भाग जाता है। यहाँ लेखक उनकी मानसिकता को दर्शाते है। गौतम साहब परेशान रहते हैं। वे अपने बेटे में स्त्रियों के गुण और उसका पुरुषांक न बढ़ाने के कारण उसे समाज से छिपाते हैं। विनीत से वह विनीता बन जाती है। वह ब्यूटि पार्लर खोलती है। विनीता के पास सब कुछ होने के कारण भी वह अकेली रह जाती है। उसके माता- पिता से वह संबंध तोड़ती है, "पुराना घर नए रिश्तों के बावजूद उसे याद आता था। इसीलिए उसने उस याद को तिलांजलि देने की निमित्त अपने जीवित माता-पिता की तेरहवीं करने का मन बनाया था।"[23] इस कथन से हिजड़ों का अपने परिवार के प्रति लिया गया प्रतिशोध विनीता के माध्यम से देखने मिलता है।

यास्मिन और ज़ुलेखा , 'लेस्बियन' होने के कारण पुरुषों से घृणा को दिखाया है और सुविमल और अनील के 'गे' होने के कारण सुविमल अपनी पत्नी के पास ही नहीं जाता है। इसी समलैंगिकता को स्वीकृति प्राप्त करने की क्षमता लेखक इन पात्रों के माध्यम से रेखांकित करते हैं। सुधीर जैसे मासूम लड़के का पहलवान द्वारा जेल में बलात्कार किए जाता हैं। इस के बाद जब जमादार उससे जबर्दस्ती करता है। तब एक हिजड़े का उसके प्रति संवेदना और करुणा को दिखाया है। अन्ना मौसी कहती है -"बेचारे की तबीयत खराब होगी। ज़ोर-जबर्दस्ती मत करो। उसकी नाड़ी देखो, कहीं उसे बुखार तो नहीं हुआ है।"[24] इस संवाद से अन्ना मौसी का उस बच्चे के प्रति संवेदना प्रकट करती है। यहाँ थर्ड जेंडर लोगों की मानवी संवेदना के बारे में पता चलता है।

विनीता भी अपने करियर में ऐसे कहीं स्वार्थी काम करती है। जिससे सामान्य पुरुषों को उलझाकर गे बनाकर काम पर रखती है। ऐसी स्वार्थी वृत्ति फोटोग्राफर विजय की भी दिखाई देती है। वह हिजड़ों की तस्वीर मगज़ीन में छपाना चाहता था इसलिए वह मंजु को झूठे प्यार का दिलासा दिलाकर उसका इस्तेमाल करता है। अंत में विजय मंजू को ठुकराता है " मैं तुम्हारे निर्मल व पारदर्शी हृदय का सम्पूर्ण स्वीकार कर ही नहीं सकता। तुम मुकम्मल औरत जरूर हो, पर मैं मुकम्मल पुरुष नहीं हूँ... मैं एक हिजड़ा हूँ! हिजड़ा..., हिजड़ा···, हिजड़ा···.."[25] विजय के द्वारा एक हिजड़े को न स्वीकारने के कारण समाज के उन सभी पुरुषों पर व्यंग्य करते हुए वह उन्हें हिजड़ा कहता है।

अतः ऐसे संवादों से ही उपन्यास के पात्रों के स्वभाव और मनस्थिति, संवेदना, करुणा, स्वार्थी भाव, द्वेष आदि को चित्रित किया गया है।

उपन्यास में दिल्ली शहर के चित्रण के साथ ही बेरसराय गाँव का चित्रण भी किया गया है। इन दोनों परिवेशों में उपन्यास की कहानी चलती है। भलेही वहाँ के पात्र अन्य देशों से आयें हो किन्तु उनके रहन सहन में कोई बदलाव नहीं दिखाई देता है। यहाँ कॉलगर्ल्स रैकेट के

कारण अप्राकृतिक यौन का चित्रण किया है। फिल्मी दुनिया के साथ ही बड़े लोगों का विनीता के पार्लर में आने से हिजड़ा होते हुए समाज में प्रसिद्धि मिलती है। धार्मिक परिवेश में जाकर यह कहानी समाप्त होती है। कुवागम मेले के वातावरण का चित्रण काफ़ी सुलभता से किया है। अंततः यह कहाँ जा सकता है कि लेखक ने सभी कहानियों में अलग अलग परिवेशों के माध्यम से अलग अलग वातावरण में घटनाओं का चित्रण किया है। इस उपन्यास के शीर्षक पर विचार करना भी बेहद ज़रूरी है।

प्रदीप सौरभ ने 'तीसरी ताली' इस शीर्षक के चुनाव के पीछे सच्चाई को दर्शाया है। वे उस समुदाय की बात करते हैं, जिनकी प्रशंसा कभी समाज के मुख्यधारा के लोगों द्वारा नहीं की जाती है। समाज के मुख्यधारा के लोगों को उनकी अच्छे कार्य करने पर तालियाँ बजाकर प्रोत्साहित किया जाता है। तृतीय लिंगी समुदाय के लोगों की ताली वह ताली मानी जाती है जिसे कभी समाज द्वारा नहीं अपनाया गया है। मुख्यतः देखा जाए तो इस उपन्यास में केवल किन्नर ही नहीं बल्कि समलैंगिक अन्य पात्रों की भी दशा इस शीर्षक के अंतर्गत आती है जो अपनी पहचान बनाने के लिए कोर्ट कचहरी तक जाते हैं।

यह समाज हमेशा से ही वंचित रहा है और वे अपनी अस्मिता को बनाए रखने की कोशिश करते हैं। इस उपन्यास के शीर्षक को सार्थक माना जा सकता है क्योंकि हाशियेपरक इस समुदाय का समाज में स्थान को यह शीर्षक दर्शाता है। उपन्यास के शीर्षक की तरह उपन्यास की भाषा भी रोचक है।

प्रदीप सौरभ ने सरल एवं स्पष्ट भाषा का प्रयोग अपने उपन्यास में किया है। यहाँ लेखक ने अंग्रेजी, फ़ारसी, अरबी भाषा के शब्दों का इस्तेमाल किया है। उनकी भाषा पढ़ते वक्त अलंकृत भाषा महसूस होती है। उन्होंने अपनी भाषा में मुहावरों एवं कहावतों का उपयोग किया है। उन्होंने इस मुहावरें का इस्तेमाल किया हैं 'जिसकी लाठी उसकी भैस', 'दाल नहीं

गलना' आदि। फ़ारसी शब्दों का उपयोग किया है जैसे-दुकान, मर्द आदि। अरबी शब्द जैसे-गरीब , अंग्रेजी शब्द जैसे- ट्रेन, स्टेशन, फक्ट्री, पार्लर, ब्युटिशन आदि।

समलैंगिक समुदाय के नाम 'गे' (पुरुष-पुरुष का संबंध रखने वाला), 'लेस्बियन' (स्त्री-स्त्री से संबंध रखने वाली), हरमोफ्रोडाइटस (स्त्री-पुरुष के लक्षणों वाले) 'गिरिया'(हिजड़ों द्वारा माने गए पति) यह हिजड़ों का पारंपरिक शब्द है। 'लौंडे' (पुरुष लड़कियों जैसे बनाते हैं) ऐसे अन्य कही सारे तत्सम एवं तद्भव शब्दों का इस्तेमाल किया है।

उपन्यास में पूर्व दीप्ति शैली का उपयोग किया है जब आनंदी आंटी अपनी बेटी निकिता के बारे में सोचती है।

प्रदीप सौरभ के 'तीसरी ताली' उपन्यास के लिखने के पीछे का मुख्य उद्देश्य हाशिए पर रखे उन सभी लोगों को मुख्यधारा में शामिल करना है । बस इतना ही नहीं बल्कि हिजड़ों के सभी रीति-रिवाजों को उन्होंने स्पष्ट किया है। जैसे की किन्नरों के अंतिम संस्कार के बारे में बताया है। इसी संदर्भ में नीरजा माधव कहती है कि 'तृतीय लिंगी समुदाय में किसी का इंतकाल होने पर उसकी शव को जूतों से मारा जाता है, क्योंकि वे अगले जन्म में फिर हिजड़ा बनकर न जन्मे। वे उसे अपने साथ ही लेकर जाते हैं पर किसी सामान्य लोगों के कब्र या शमशान में न गाड़कर अपने इलाके में दफनाते हैं और ऊपर थूकते हैं, जिससे उसका दुबारा इस योनि में जन्म न हो।' [25] इसी बात से यह स्पष्ट होता है कि अलग-अलग लोग अपने भ्रामक बातों को सभी तक पहुँचता है। किन्तु थर्ड जेंडरों ने इस बात को गलत साबित किया है। उभयलिंगी समुदाय के लोगों के संवैधानिक तौर से समाज में स्वीकृति लाने का प्रयास यहाँ किया गया है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रदीप सौरभ ने तृतीय लिंगी समुदाय के साथ समलैंगिक समुदाय के भी संघर्ष का चित्रण अपने इस उपन्यास में किया है। समाज के मुख्यधारा के लोगों द्वारा उनका सिर्फ़ शोषण ही किया जाता है। इतना ही नहीं बल्कि हिजड़ों की गुरु

डिम्पल द्वारा एक सामान्य पुरुष का जननांग काटकर उसे हिजड़ा बनाने का कुकर्म भी यहाँ बताया है। संत आशाबाई जैसी गुरु द्वारा जो भी समाज में उनके प्रति गलत धारणा बनाई जाती है उसको तोड़ने का कार्य किया है। इस उपन्यास की यह विशेषता है कि यहाँ लेखक ने उभयलिंगी समुदाय के संघर्ष को ही नहीं बल्कि उनके सभी रीति-रिवाज,इष्ट देवता, धार्मिक स्थान आदि रस्मों के माध्यम से हिजड़ों के पूरे अनकही और अनसुनी बातों को इस उपन्यास में चित्रित किया है। समलैंगिक लोगों को संविधान द्वारा दिये धारा 377 को हटाकर उनके समलैंगिक सम्बन्धों को स्वीकृति प्राप्त कारवाई है। इसी के माध्यम से वे समाज में हाशिए पर रहे इस समुदाय को समाज के मुख्यधारा में स्थान देने का कार्य करते हैं।

संदर्भ सूची

1) माधव नीरजा, किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय. ए.बी.एस. पब्लिकेशन-वाराणसी, प्र. सं-2019, पृ.सं-87
2) माधव नीरजा, यमदीप.सुनील साहित्य सदन, प्र.सं-2018, पृ.सं-10
3) मुराडिया निर्मल, गुलाम मंडी. सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, (2016), पृ-69
4) माधव नीरजा, किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय. ए.बी.एस. पब्लिकेशन-वाराणसी, प्र. सं-2019, पृ.सं-87-88
5) सं. खान. (डॉ). एम.फिरोज, थर्ड जेंडर पर केन्द्रित हिन्दी का प्रथम उपन्यास यमदीप। विकास प्रकाशन, प्र-सं-2018, पृ.सं-18
6) माधव नीरजा, यमदीप.सुनील साहित्य सदन, प्र.सं-2018, पृ.सं-12
7) वही, पृ. -16
8) वही, पृ. -18
9) वही, पृ.-22
10) वही, पृ. -27

11) वही, पृ.-29

12)वही, पृ.-51

13) वही, पृ. -196

14) वही, पृ. -269

15) वही, पृ. -284

16) वही, पृ. -288

17)सौरभ प्रदीप, तीसरी ताली. वाणी प्रकाशन, (2018), मन्तव्य

18) -वहीं -

19) सौरभ प्रदीप, तीसरी ताली. वाणी प्रकाशन,(2018), पृ.सं-11

20) वही, पृ.-14

21) वही, पृ. -30

22) वही, पृ. -13

23) वही, पृ. -155

24) वही, पृ. -145

25) वही, पृ. -194

26) माधव नीरजा, किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय. ए.बी.एस. पब्लिकेशन-वाराणसी,   प्र. सं- 2019, पृ.सं-54

चतुर्थ अध्याय

21 वीं सदी के चुनिंदा उपन्यासों में किन्नर चेतना

चतुर्थ अध्याय

21 वीं सदी के चुनिंदा उपन्यासों में किन्नर चेतना

4. परिचय

मानव चेतन की बात करे तो इसकी उत्पत्ति अरबों सालों से मानी जाती है। इसी के संदर्भ में अमेरिका के प्रसिद्ध मनोविज्ञानी आर्थर रेबर ने अपने किताब में तर्क दिया है "बेक्टीरिया सचेत होते हैं और मन की उत्पत्ति सबसे सरल, एकल–कोशिका वाले जीवों में पायी जाती है जो अरबों साल पहले पैदा हुई थे।"[1] इन्होंने एकल-कोशिका जीव याने नेमैटोड, अमीबा जैसे जीवों में चेतना की शुरुआत की बात को बताया है। इसी के उपरांत आदिम लोगों में चेतना पायी जाने लगी जैसे आग की उत्पत्ति, खाना बनाना, घर बाँधना आदि। इससे यह स्पष्ट होता है कि चेतना हमें हमारे पूर्वजों से प्राप्त हुई है। जब मानव में चेतना बनने लगी तब वह पत्थरों एवं पत्तों आदि पर चित्र बनाने लगे जिससे अपने विचारों को आगे बढ़ाने का कार्य करने लगे।

इसी से प्रेरणा लेते हुए साहित्य का निर्माण हुआ जिसमें भी चेतना के द्वारा ही ज्ञान को अर्जित कर उसे समाज तक पहुँचाने का काम हुआ। हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल में विमर्शों के द्वारा स्त्री चेतना, दलित चेतना एवं आदिवासी चेतना की शुरुआत दिखाई देती है। इन सभी हाशिया परक समुदाय का एक समुदाय किन्नर जिसे कभी समाज में अपनाया नहीं गया। इस समुदाय की चेतना को इस अध्याय में ढूंढा जाएगा। हाशिया परक समुदाय पर प्रकाश डालने वाले उपन्यासकार नीरजा माधव और प्रदीप सौरभ द्वारा कृत उपन्यास 'यमदीप' और 'तीसरी ताली' में किस प्रकार तृतीय प्रकृति के लोगों में चेतना को निर्माण किया गया है वह यहाँ स्पष्ट किया जाएगा।

4.1 'यमदीप' उपन्यास में किन्नर चेतना

हिजड़ा समुदाय को समाज के सामने लाने का प्रथम प्रयास नीरजा माधव ने अपने उपन्यास 'यमदीप' के माध्यम से किया है। इसमें उन्होंने हर एक पंक्ति में पाठकों को जोड़े रखा है। नीरजा माधव ने अपने साक्षात्कार में कुछ बड़े लेखक एवं समीक्षकों के नाम जैसे डॉ. त्रिभुवन सिंह, डॉ. शुकदेव जी और पं. विद्यानिवास मिश्र का उल्लेख किया है। उनकी राय को इस प्रकार बताया है कि "नीरजा के साहित्य में अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव दिखाता है और लगता है कि अगर एक वाक्य भी इनके उपन्यास का या कहानी का छोड़ दिया जाए तो कहीं न कहीं कथा सूत्र ही हाथ से छूट जाएगा।"[2] इस कथन से विद्वानों ने उनके साहित्य पर अंग्रेजी प्रभाव को देखते हुए उनके हर एक वाक्य को महत्वपूर्ण साबित किया है। वे हमेशा से अपने मातृ भाषा में ही लिखना चाहती थी क्योंकि वह भलेही अंग्रेजी पढ़ी थी किन्तु उन्हें सेकंड रेट में नहीं रहना था। इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि उनकी इसी सोच का वे तृतीय लिंगी समुदाय के लोगों को आगे लाने का कार्य करती है।

उपन्यास की मुख्य पात्र नाज़बीबी उन सभी बातों पर खरी उतरती है जिससे हिजड़ा समुदाय को समाज में देखने का नज़रिया बदल जाता है। नाज़बीबी एवं मानवी इन दोनों की कथा समांतर रूप से बिल्कुल स्थिर चलती है। मानवी का जिक्र हमें उपन्यास के भूमिका में लेखिका स्पष्ट करती है कि " मानवी का पूरा का पूरा स्त्री विमर्श है। अपनी अस्मिता और स्वीकार के लिए एक अंतहीन जिजीविषा लिए। आदर्श भारतीय स्त्रीत्व-गरिमा से एक पग भी लड़खड़ाए बिना। पितृ सत्ता के सह-अस्तित्व को बिना नकारे, अपने अस्तित्व के लिए पूर्णतया चैतन्य।"[3] इस कथन से मानवी स्त्री के अस्तित्व के लिए आवाज़ उठाती है और और अपने भी जीवन में आई उन सभी कठिनाईओं का सामना बड़े साहसता पूर्ण करती है। इस तरह नाज़बीबी एक किन्नर होकर भी समाज के मुख्यधार के लोगों के समान ही संवेदनशील काम करती है।

4.1.1 किन्नर समुदाय में उत्पन्न चेतना

पितृसत्तात्मक समाज में पुरुष द्वारा किए गए शोषण को समाज में अपनाया जाता है। एक पागल औरत को उसके प्रसव पीड़ा के वक्त समाज के लोग केवल उसे तड़पते देख हसते हैं, किन्तु समाज से जिस हाशिए पर रहे समुदाय को नहीं अपनाया जाता है उसकी संवेदना को लेखिका उपन्यास में दर्शाती है। नाज़बीबी अपने साथियों द्वारा गाना गाने पर उन्हें डांट लगती है "चुप! बिलकुल अंधे हो गए हो क्या छिबरी के औलाद ? और देख नहीं रहे हो बेचारी कैसे दर्द से चटपटा रही है, और तुमको गाना बजाना सूज रहा है। ... अरे ओ भइया... जरा अपनी अम्मा और चाची को भेजो। बेचारी की मदद कर दें।" [4] इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि नाज़बीबी हिजड़ा होते हुए समाज के लोगों को उस पागल औरत कि मदद करने बुलाती है किन्तु वे सब अपना मुँह मोड़ लेते हैं।

नाज़बीबी अपने आप में इस चेतना का निर्माण करती है कि वह उस पगली की मदद कर उसे इस पीड़ा से मुक्त करती है, वह अपने सभी साथियों के साथ उसे प्रसव पीड़ा से मुक्त करती है। वह अपने आप को हिजड़ा कहकर ही संबोधित करते हैं क्योंकि वे इनसान नहीं बनाना चाहते हैं। वह उस नवजात शिशु को लेकर सभी के द्वार जाते हैं किन्तु कोई भी उस बच्चे को नहीं अपनाता है। किसी हिजड़े के पास बच्चे को देखने पर पुलिस उनसे पूछताछ करने के डर से मंजू नाज़बीबी को वह से जाने कहती है। नाज़बीबी की आंतरिक चेतना के कारण ही वह उस बच्ची को अपने साथ उनके बस्ती में ले जाने का निर्णय करती है। बच्चे की परवरिश करने में वह कोई कसर नहीं छोड़ती। इसी से यह ज्ञात होता है कि केवल स्त्री ही किसी बच्चे का पालन नहीं कर सकती है बल्कि थर्डजेंडर भी बच्चे पालने में सक्षम होते हैं वह नाज़बीबी के माध्यम से स्पष्ट होता है।

समाज एवं अपने परिवार से दूर होने के पश्चात् हिजड़ा अपने गुरु के शरण में आ जाता है। यहाँ इनमें गुरु शिष्य परंपरा को महत्वपूर्ण माना जाता हैं। महताब गुरु सभी हिजड़ों के गुरु

थे, जिसे सभी हिजड़े आदर देते हैं। गुरु को उन सभी बातों का ज्ञात होता है जिससे उनके किसी शिष्यों पर कोई संकट आन पड़ता है तो उसे संभालकर उस परेशानी का हल ढूँढना ही उनका कार्य होता है। इसी गुरु शिष्य परंपरा के संदर्भ में माई मनीषा महंत (थर्ड जेंडर) साक्षात्कार में कहती है " मुझे यह बताते हुए बिल्कुल गर्व होता है कि किन्नर समाज में गुरु-शिष्य परंपरा आज भी जीवित है और आज भी इसका वैसे ही पालन भी होता है।

किन्नर समाज में शिष्य बनाने के लिए और शिष्य बनने वाले पात्र उस डेरे(किन्नरों का घर) के नियमों का पालन करने में सक्षम हो तो कुछ रीति-रिवाजों के साथ उसे शिष्य मान लिया जाता है। जैसे किसी शिष्य को बनाने से पहले उसे नई दुल्हन की तरह साथ दिन तक हल्दी यानी उबटन लगाई जाती है। फिर उसे तैयार करके अपने शहर भर के मंदिरों में पूजा के लिए ले जाते हैं और गुरु भी कुछ उपहार देकर उसे शिष्य अपनाते हैं।"[5] इसी कथन से यह साबित होता है कि महताब गुरु नाज़बीबी को उसके निर्णय को स्वीकारता है और हमेशा अपने समुदाय के लोगों को सत्य का मार्ग अपनाने की शिक्षा प्रदान करते हैं।

महताब गुरु नाज़बीबी को स्वाभिमानी और नेक मार्ग पर जाने के लिए प्रोत्साहित करता है। उनकी बिरादरी में भलेही धंधा मंदा हो किन्तु उनके समुदाय में ट्रेनों में भीख माँगना या चोरी करना ऐसे सभी काम करने पर उन्हें गुरु द्वारा दंड मिलता था।

अलैंगिक समुदाय में गिरिया रखने की प्रथा भलेही गलत है किन्तु यहाँ गुरु नाज़बीबी को एक नेक काम के लिए गिरिया रखने की परवानगी देता है। उनका मानना है कि एक ही पुरुष के साथ संबंध बनाए रखे तो ऐसे जानलेवा रोग से तो बच जाएगी। इसी चेतना के कारण नाज़बीबी सोना की परवरिश अच्छे से कर पाती है। नाज़बीबी भलेही मज़बूरन आठवीं कक्षा तक पढ़ी थी किन्तु वह सोना को पढ़ाना चाहती थी, इसी कारण वह खैर गल्ले (हिजड़ों के बटे क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश करके नाच-गाने वाले) करती है इसी कारण उसे मारा जाता है। इसी डर से वह गुरु से सोना की पढ़ाई को थोड़े महीनों बाद करवाने की बात करती है। इसी

बात पर गुरु के यह बोल उसमें एक साहस लाती है "दो दिन का खेल है क्या पढ़ाई, जो आज नहीं, दो दिन बाद खेलेंगे? सोना पढ़ेगी और इसी साल पढ़ेगी। बेसरा माता के लिए जो हिस्सा रखा है, उसमें से कल मैं तुम्हें दूंगी। कमाई होने पर उसमें फिर दाल देंगे उतना।"[6] गुरु के इस कथन से उनके अंदर की नैतिकता को देख सकते हैं। वह स्कूल में जाकर उसका दाखिला स्कूल में करवाती है। इस निर्णय के पीछे महताब गुरु का बहुत बड़ा महत्व है क्योंकि उनके इस परवानगी के बिना यह करना संभव नहीं था। हिजड़ा समुदाय में किसी भी चीज को करने के पीछे गुरु द्वारा उत्पन्न चेतना के कारण ही सभी संभव होने के बारे में इस उपन्यास में देखने मिलता है। इसी तरह समाज में स्त्रियों की चेतना भी इस उपन्यास में देखने मिलती है।

अलिंगी समुदाय के लोगों के परिवार न होने के कारण वे जनता की भलाई के लिए काम कर सकते हैं। इसी बात पर नाज़बीबी मानवी से कहती है कि "अरे, मेम साहब की बात? मेरे आगे-पीछे कौन रोने वाला है जो हार मन लाऊँगी। अरे, बस एक बार मौका मिल-भर जाए तो इन भ्रष्टाचारियों को गिन-गिनकर जूते लगवाऊंगी चौराहे पर और मुंह में कालिख पोतवाकर गली-गली घुमाऊंगी। हमें किस बात का डर है? डरें वो जो सफेद कुरते के नीचे कीचड़ लपेटे खड़े हैं।"[7] इस कथन से लेखिका ने अलैंगिक लोगों के अंदर किस तरह समाज में भी भ्रष्टाचार को मिटाया जा सकता है। नाज़बीबी के माध्यम से आज के राजनैतिक व्यवस्था पर करारा व्यंग करते हुए नाज़बीबी में समाज को बदलने की चेतना को उत्पन्न किया है।

नाज़बीबी मेजर की लड़की होने के कारण उसमें वह पूरा जज्बा था कि वह अपने जो देश में भ्रष्टाचार फैला है उसे मिटाने की पूरी कोशिश करती है। वह अपने हिंदुस्तान के लिए लड़ते-लड़ते जान भी देने के लिए तैयार थी । हिजड़ा पैदा होने पर भी वे अपने देश के प्रति प्रेम रखते हैं। यहाँ वे अपने धर्म के उपर लड़ाई नहीं करते हैं इसी सोच के माध्यम से हिजड़ा समुदाय का हिंदुस्तान के प्रति प्रेम को दर्शाया है।

नाज़बीबी हिजड़ा होते हुए भी किसी की जान बचाने के लिए आगे पीछे नहीं सोचती है। वह छैलू को मारते समय उन बदमाश लड़कों से बचाती है। छैलू भी हिजड़ा था किन्तु वह लड़की को छेड़ते देख चुप नहीं रहता है और वह उन लड़कों को डांटने जाता है तो वे उसे मारते हैं। इसी दृष्टिकोण को हिजड़ों के अंदर जगाकर समाज में फैले कुरीतियों को बंद किया जा सकता है। तृतीय लिंगी समुदाय में इसी चेतना के निर्माण के कारण समाज में बदलाव लाने का संदेश दिया गया है।

4.1.2 पात्र मानवी द्वारा उत्पन्न चेतना

मानवी स्त्री के भीतर चेतना निर्माण करने का ही नहीं बल्कि अंत में वह नाज़बीबी में भी चेतना निर्माण करने का कार्य करती है। मानवी पितृसत्तात्मक समाज में अपनी खुद की पहचान बनाने का कार्य करती है। मानवी के ऑफिस के चौकीदार की साहसता का चित्रण यहाँ किया गया है। वह विद्यालय में चपरासी के पद रिटायर होकर केवल अपने पक्ष घात हुए पत्नी के लिए काम करने की चेतना को उत्पन्न करता है। उसका बेटा उन्हें देखने भी नहीं आता है फिर भी अपने आप और अपने पत्नी को पालने का साहस उस बूढ़े तारक के माध्यम से देखने मिलता है।

इसी के विपरीत 'उद्धार गृह' की लड़कियों की दशा है। यहाँ मानवी उनसे बात कर उनके माता-पिता से उनको अपनाने को कहती है किन्तु वे उनके अस्तित्व को ही नहीं स्वीकारते हैं। मानवी के साथ हरीन्द्र ने ज़बरदस्ती की थी जिसका उसने मुँह तोड़ जवाब देकर वह उसे ज़ोर का धक्का देकर भागती है। मानवी में इतनी हिम्मत थी कि वह हरीन्द्र को अपने केबिन से जाने का आदेश देती है। मानवी अपने माता-पिता की परवरिश करने में अपनी पूरी मेहनत लुटाती है। उसकी सहेली फातिमा द्वारा भी उसे प्रोत्साहन मिलता है। वह उसको पुरुषों के खिलाफ आंदोलन की बात करती है। पुरुषों के स्त्रियों पर हुए अत्याचार पर आवाज उठाने के लिए फातिमा मानवी से कहती है।

फातिमा मानवी को सोचने के लिए मजबूर करती है कि पुरुषों द्वारा ही स्त्रियों पर नियंत्रण रखा जाता है, वह कहती है कि "पर ये सारे नियम और मानक तो पुरुषों ने ही बनाए- नारियों पर शासन करने के लिए। हमें उस दुराग्रह और पूर्वाग्रह से मुक्त होना है।"[8] इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि फातिमा समाज में जो भी सदियों से परंपरागत रूप से चली आयी रीतियाँ है उसे ठुकराकर स्त्री को मुक्त होने का संदेश देती है।

मानवी को उसका भाई कोसता था कि उसी की गलती के कारण उसका छोटा भाई मधुकर जेल में था। उसका यह कहना था कि जब तक उसका छोटा भाई जेल से छूटकर सामान्य जिंदगी नहीं जीता तब तक वह अपनी माता -पिता को लड़की होने का अहसास नहीं दिलाती है। वह एक लड़के के तरह अपने माँ-बाबा का खयाल रखती है। उसको उसी के अंगरक्षक से असावधानी महसूस होने के कारण वह उसे उस पद से नियुक्त करने कहती है और अपने दम पर सभी समस्याओं का समाधान ढूंढती है। मानवी केवल नारी मुक्ति पर ही ज़ोर नहीं देती है बल्कि वह समाज के तृतीय लिंगी समुदाय में भी चेतना निर्माण करने का कार्य करती है।

मानवी 'उद्धारगृह' की लड़कियों पर हुए अत्याचारों से मुक्त करती है और साथ ही सोना को जब पुलिस द्वारा वहाँ भेजा जाता है तब वह नाज़बीबी की मदद करती है। वहाँ के एक लड़की के भागने की खबर को छिपाने की कोशिश की जा रही थी , इसी का पर्दा फ़ाश करने वह वहाँ गयी थी किन्तु वहाँ उसपर हमला हुआ। मानवी की जान स्वयं हिजड़ों ने बचाई थी। छैलू को गोली लगी थी फिर भी नाज़बीबी ने अपनी हिम्मत नहीं हारी और उन दोनों को वहाँ से सुख रूप अस्पताल पहुँचाया। मानवी द्वारा नाजबीबी में चेतना का निर्माण करते हुए यह कहती है कि "इन भ्रष्ट लोगों का यही तिलिस्म अब टूटना चाहिए, और इसके लिए अब तुम्हें आगे आना होगा, तुम्हारी बिरादरी के लोगों को सचेत होना होगा। शायद तुमसे भयभीत होकर इस तरह के भ्रष्ट लोग सुधर जाएं।"[9] यह कथन उपन्यास में बहुत महत्वपूर्ण साबित होता

है, क्योंकि समाज के मुख्यधारा के जो भी लोग है वह अपने ही स्वार्थ के बारे में सोचते हैं किन्तु हिजड़ा अपने स्वार्थ के बारे में नहीं सोचता है।

अतः नीरजा माधव ने इस उपन्यास के द्वारा हिजड़ा समुदाय के तथ्य है उसे पाठकों तक पहुंचाया है। वे मानवी के माध्यम से स्त्रियों पर हुए शोषण पर भी प्रकाश डालती है और हिजड़ों के सभी जीवन के तथ्यों को समाज के आईने में लाने का कार्य करती है। हिजड़ा समुदाय के लोगों में भी चेतना पैदा होती है और इसी के सहारे वे अपना जीवन जीते हैं। मानवी के किरदार को महत्वपूर्ण मानना चाहिए क्योंकि समाज में जो भी तृतीय लिंगी समुदाय के लोगों पर सवाल उठाएँ जाते हैं वह उसी के माध्यम से स्पष्ट किए हैं। वह अंत में नाज़बीबी को राजनीति में अपना स्थान बनाने के लिए प्रेरित करती है। इसी चेतना का निर्माण इस उपन्यास के कई पात्रों में देखने मिलता है।

4.2 'तीसरी ताली' उपन्यास में किन्नर चेतना

प्रदीप सौरभ ने अपने उपन्यास 'तीसरी ताली' में केवल किन्नरों की व्यथा को ही नहीं दर्शाया बल्कि समलैंगिक समुदाय पर भी प्रकाश डाला है। समाज में इन समुदायों को हाशिए पर रखा जाता है इसी मानसिकता को बदलने का कार्य वे इस उपन्यास में कराते हैं। वे इस हाशिए पर समुदाय की चेतना को अनेक पात्रों के माध्यम से उजागर करते हैं। इस उपन्यास में केवल जन्मजात बने तृतीय लिंगी समुदाय का जिक्र नहीं है बल्कि जो भी मजबूरन अपने लिंग का परिवर्तन करते हैं उसका भी जिक्र यहाँ किया गया है। इसी संदर्भ में डॉ. सुनील कुमार त्रिवेदी ने कहा है "यदि हिजड़ो के समुदाय को गौर से देखा जाए तो हम पाते हैं कि इनके समाज में कई प्रभाग एवं अनुभाग हैं। कुछ उनमें ऐसे हैं जो जन्म से ही तृतीय लिंग के हिसाब से पैदा होते हैं, तो कुछ ऐसे हैं जो शल्य चिकित्सा अर्थात बधिया प्रक्रिया के द्वारा हिजड़ा बन जाते हैं, कुछ ऐसे हैं जो शारीरिक तौर पर नर या मादा होते हैं परंतु मानसिक तौर पर अपने को उस लिंग से संपृक्त नहीं कर पाते हैं, जिस लिंग के साथ वे पैदा होते हैं।"

[10] ऐसे ही उपन्यास में अनेक तरह के हिजड़ों का उल्लेख है जो जन्मजात ही हिजड़े थे और थोड़े जो की अपने स्वार्थ एवं आर्थिक समस्या के कारण हिजड़े बने हैं।

4.2.1 हिजड़ा समुदाय की चेतना

इस उपन्यास में केवल एक ही हिजड़े के जीवन पर आधारित कहानी को लिखा नहीं है बल्कि इसी के समांतर कई सारे कहानियों में अलैंगिक लोगों में उत्पन्न चेतना को दर्शाया है। उपन्यास में मुख्य पात्र डिम्पल है जो हिजड़ा समुदाय की गुरु है। हिजड़ों में चेतना निर्माण करने का श्रेय डिम्पल को जाता है। जब सुनयना गौतम के दरवाजे कर मूतने की बात करती है तब वह उसे ऐसे करने की इजाज़त नहीं देती है। वह अपने मंडली के सभी हिजड़ों को स्वाभिमानी बनने कहती है। वह गलत रास्ते पर गए हिजड़ों को नहीं अपनाती है जैसे कि पींकी सेक्स रेकेट की अधिकारी रेखा चितकबरी से जुड़ती है तब वह उसे नहीं अपनाती है। वह अपने शिष्यों को भगवान राम के बताएं मार्ग पर चलने कहती है और भीख माँगने से उन्हें रोकती है। वह हिजड़ों में इसी चेतना के साथ आगे बढ़ने का संदेश देती है। शिक्षा के अभाव एवं आर्थिक कमी के कारण भी हिजड़े यौन संबंध बनाते हैं।

हिजड़ा समुदाय के लोगों के यौन शोषण के बारे में प्रसिद्ध लेखक महेंद्र भीष्म कहते हैं कि "शिक्षा की कमी, अन्य व्यवसाय में जुड़ने के सीमित अवसर, आर्थिक तंगी व परिवार का भावनात्मक लगाव ना होना ही अधिकांश किन्नरों को यौन कर्म की ओर ले जाता है। लोगों की सोच में यह रचा बसा है कि सारे किन्नर यौन कर्मी हैं, जो गलत है। इसी कारण इन्हें सामाजिक सम्मान नहीं मिल पा रहा है। इसी कारण इन्हें समाज में अवांछित माना जाता है।"[11] इस कथन से उनके अशिक्षित होने के कारण और परिवार से ही धिक्कारने के कारण उन्हें समाज में कोई स्थान नहीं दिया जाता है, और समाज में उनके प्रति कई गलत धारणाएँ पैदा की गयी है।

सभ्य समाज के लोगों को भी मजबूरन ऐसे हिजड़ा बनाना पड़ता है जैसे राज उर्फ रानी के एक गलती के कारण हिजड़ा बनाया जाता है। वह आर्थिक रूप से सक्षम न होने के कारण

अनेक काम करता है। वह राजू महाराज के पास से कथक नृत्य सिखता है और कुशल नर्तक बन जाता है। उसके माता-पिता की असमय मृत्यु के कारण उसकी रोजी रोटी बंध हो गयी। वह इसी अपने धाड़स पर खरा उतरता है और बैंड पार्टी के ग्रुप में डांस करता है। वहाँ हर दिन काम न होने के कारण उसके पैसे खत्म हो गए जिसके कारण वह डिम्पल के डेरे पर आता है। अपने पेट के लिये वहाँ नाच-गाकर पैसे कमाता है। अपने अंदर की इसी चेतना के कारण ही वह अपने आप की जिंदगी सँवारता है। ऐसे भी परिवार थे जिसमें बच्चों का लिंग स्पष्ट न होने के कारण वे घर से निकाले गए थे या तो फिर भाग गए थे।

उपन्यास में गौतम साहब और आनंदी आंटी के घर में अलैंगिक बच्चे पैदा हुए थे। आनंदी आंटी की बेटी निकिता में हिजड़ों के गुण आने लगे थे। आनंदी आंटी की लड़की निकिता को नीलिमा को सौंपा जाता हैं। उसे हिजड़े द्वारा पढ़ाया जाता हैं किन्तु वह अपना पेट पालने के लिए नाच-गाना नहीं करना चाहती है। वह गिरिया रखने की प्रथा से भी ना खुश थी। वह अन्य हिजड़ों की तरह पढ़-लिखकर, काम कर और ब्यूटि पार्लर जैसे ही अन्य अच्छे धंधे में अपना मन बनाने की प्रेरणा रखती है। वह हिजड़ों की चुनरी प्रथा का विरोध करना चाहती है किन्तु वह यह सब देख अपना संतुलन खो देती है और जहर पीकर अपनी जान दे देती है। निकिता अपने आप को बदलने की चेतना को उत्पन्न करना चाहती थी किन्तु उसकी आयु कम होने के कारण वह अपनी जान गवाती है।

गौतम साहब का बेटा विनीत भलेही छोटी उम्र में घर छोड़ता है किन्तु वह अपने पापा द्वारा सिखाएँ ब्युटिशन कोर्स का अच्छे से फायदा उठता है। उसके घर से उसे लड़के की तरह रहने के लिए कहा जाता है किन्तु वह उसे पसंद न होने के कारण वह अपना घर छोड़ देता है। अपने मर्जी से वह अपने परिवार की इज्जत रखने के लिए भाग जाता है। उसके रास्ते में कई सारे काँटे आते है किन्तु वह उसे पार कर अपने भविष्य को उज्वल बनाता है। वह अपना नाम विनीत से विनीता रख देता है। वह पहले गलत मार्ग में फंस जाती है किन्तु उसके इस मार्ग को वह नहीं अपनाती और जब कांस्टेबल चौधरी उसे अपने घर रहने ले जाते हैं तब वह

उनमें अपने पिता को महसूस करती है। वह कहती है, "बाबूजी, मैंने ब्यूटीशियन का कोर्स किया है। कई शादी-ब्याहों में भी दूल्हे-दुल्हन के मेकअप का अनुभव है मुझे। आप किसी ब्यूटि पार्लर में मुझे काम पर लगवा दें तो थोड़े दिनों में मैं अलग कमरा लेकर रहने लगूँगी।"[11] यहाँ विनीता बिना किसी के सहारे रहना चाहती है। इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि भलेही उसे न अपनाया गया हो किन्तु वह अपने कमाई पर जीना चाहती है। यहाँ उसके साहस के कारण वह यह सब करती है।

विनीता मनचन्दा के फ्री लांसिंग इंस्टीट्यूड में नौकरी के बाद वह 'गे वर्ल्ड' पार्लर खोलती है। इसमें केवल हिजड़ों एवं समलैंगिक समुदाय को ही एंट्री थी। यह समलैंगिक पार्लर दिल्ली में नहीं था इसी लिए सभी समलैंगिक इसी पार्लर में आते थे। उसकी इतनी तारीफ होती है कि उसमें फिल्म इंडस्ट्री के हीरो- हीरोइन और मॉडल आते हैं। उसके कई ब्रांच खोलने के कारण उसमें काम करने वाले गे मिलना मुश्किल हो जाता है। इसी मजबूरी के कारण सामान्य पुरुष गे बनने के लिए तैयार हो जाते हैं। विनीता अपने आप को आत्मनिर्भर बनने की चेतना को इसी तरह पैदा करती है। गरीबी के कारण दलित लोग जमींदारों के लौंडे बन जाते हैं।

ज्योति गरीबी के कारण बाबू श्यामसुंदर सिंह का लौंडा बन जाता है किन्तु उसमें भी आत्मनिर्भर होने की चेतना होती है। वह चाय की दुकान खोलना चाहता है किन्तु उसकी निम्न जाति के कारण उसे पीछे हटना पड़ता है। वह किसी भी हालत में अपने माँ-बाप का पालन करना चाहता था। वह बलिया की हिजड़ा गुरु सोनम के टोली में उसे एक हिजड़ा बनाने के लिए कहता है। यहाँ उसके लौंडे बाजी के बारे में सब लोगों को पता होते हुए भी वह अपने हिम्मत से आगे बढ़ता है। वह एक अच्छा डांस कर सकता है जिसके दम पर वह आगे बढ़ता हैं।

कुछ स्वार्थी लोग भी हिजड़ा बन जाते हैं। गोपाल उर्फ बिंदू जैसे स्वार्थी लोग गद्दी पर अपना कब्ज़ा करने के लिए हिजड़ा गुरु बनने के लिए ऑपरेशन द्वारा अपने लिंग परिवर्तन कर हिजड़ा बन जाते हैं। ऐसे लोगों को गुरु न मानने की चेतना अन्ना मौसी और अन्य बुजुर्ग हिजड़ों में पैदा होती है। इसी कारण वे उसे जिंदा मार देते हैं। अलैंगिक समुदाय अपने बिरादरी में पुरुषों का कब्ज़ा नहीं होने देते हैं।

4.2.2 समलैंगिक समुदाय की चेतना

उपन्यास में समलैंगिक लोगों का भी उल्लेख किया है जिसमें गे और लेस्बियन दोनों के सम्बन्धों का चित्रण किया है। इसी संदर्भ में हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका सुधा अरोड़ा कहती हैं कि "भारत में हम ऐसे किसी सामूहिक दृश्य की कल्पना भी नहीं कर सकते। भारत में आज भी इसे एक ग्रंथि, एक टैबू के रूप में देखा जाता है। यह कितना बड़ा पाखंड है कि माता - पिता यह जानते हुए भी कि उनका बेटा समलैंगिक है, उसके जीवन की यह सच्चाई छिपाते हुए, उसके लिए आर्थिक रूप से अपनी से नीची हैसियत वाले परिवार की बेटी को बहू बना कर ले आते हैं और वह लड़की भी ताउम्र इस राज को अपने भीतर दफन कर पतिव्रता स्त्री का रोल निभाती चली जाती है। इसके पीछे सामाजिक स्वीकृति का ना होना ही एक प्रमुख कारण है।"[13] इस कथन से यह कहाँ जा सकता है कि समाज के डर से खुद परिवार वाले अपने बच्चों के समलैंगिकता को छिपाकर किसी निर्दोष लड़की की जिंदगी को दांव पर लगाते हैं।

सुविमल भाई 'गे' होते हुए भी रति से समाज के डर से शादी करता है, परंतु उसको स्त्रियों की गंध से ही नफ़रत थी। वह अपनी रुचि मर्दों में रखता है। वह कई सारे आंदोलनों में अपना योगदान देते हैं जैसे दिल्ली के 'टिहरी बाँध के विरोध में आंदोलन', 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' ऐसे कही सारे आंदोलनों में वे सहभागी थे। उन्हें 'जनांदोलनों का राष्ट्रीय समन्वय' संगठन में अपने नाम का उल्लेख किया। यहाँ वे अपनी समाज में एक पहचान बनाते हैं।

यास्मिन और जिलेखा 'लेस्बियन' (स्त्री का स्त्री के साथ संबंध) है। सुविमल भाई की तरह इन्हें पुरुषों से घिन आती है। यास्मिन के साथ उसके ममेरे भाई द्वारा किए जबर्दस्ती को वह नहीं सहती और उसपर हमला कर वहाँ से भाग जाती है। इसी चेतना के कारण वह अपने हक को पाने के लिए दिल्ली के हाईकोर्ट तक पहुंचती है। हाई कोर्ट की इमारत के बाहर हिजड़े, समलैंगिक पुरुष और स्त्रियाँ भी मौजूद थे। यहाँ सुविमल भाई और अनिल अपने गे होने का सभी समाज के सामने स्वीकार करते हैं और अपने हक के लिए लड़ते हैं।

समलैंगिक लोगों के हक 'नाज फ़ाउंडेशन' के मुकदमे के द्वारा धारा 377 को हटवाने के लिए वकील ने कई विदेशी देशों के उदाहरणों से समलैंगिकता को अपराध न मानने की बात का समर्थन किया था। यहाँ वे उनके विवाह की माँग करते हैं। सरकार इसकी मान्यता नहीं देना चाहते हैं क्योंकि मानव सभ्यता नष्ट होने का डर था। उन्हें अंत में अदालत द्वारा उस धारा को अवैध घोषित किया जाता हैं। इसी बात से उनके अंदर के साहस के द्वारा वे इस मुकाम तक पहुँच जाते हैं, और सुविमल भाई और अनिल अपने धारा 377 के विरोधी को चिढ़ाने के लिए कोर्ट में जाकर शादी करते हैं।

यास्मिन और ज़ुलेखा भी अपने परिवार को छोड़कर जयपुर के वर्किंग वुमेन हॉस्टल में पति-पत्नी की तरह रहते हैं। इसी तरह वे बाद में सिविल लाइंस में फ्लैट किराए पर लेते हैं और कानूनी शादी कर समाज में अपनी पहचान बनाने की चेतना को उजागर करती है। जब उन्हें भोपाल के कोर्ट से मान्यता मिल जाती है, तब उनके पिता उनकी शादी बड़े धूम धाम से करते हैं। सुविमल भाई और अनिल आर्य समाज रीति से शादी करते हैं।

अंततः यहाँ कहा जा सकता है कि हिजड़ों को शादी करने का आयोजन पहले से ही स्वीकार किया गायन था किन्तु समलैंगिक लोगों के इसी चेतना के निर्माण के कारण उनकी भी शादी करवाने की इजाजत मंजूर की गयी थी।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि नीरजा माधव और प्रदीप सौरभ के इन उपन्यासों में अलैंगिक समुदाय की चेतना दिखाई देती है साथ ही समलैंगिक एवं मानवी द्वारा स्त्री चेतना भी देखने मिलती हैं। हिजड़ा समुदाय में अपने आप को आत्मनिर्भर एवं अपने जीवन में स्वाभिमान पूर्वक जीने का साहस को निर्माण किया गाया है। तृतीय लिंगी समुदाय ने भलेही अपने जगह समाज में बनने की कोशिश को स्वीकृति को न्यायालय द्वारा प्राप्त करवाया है, किन्तु समलैंगिक लोगों ने भी अपनी लड़ाई लड़कर समाज में अपना स्थान बनाया है। अलैंगिक एवं समलैंगिक लोगों में उत्पन्न चेतना के कारण ही वे अपने आप को समाज में लाने के लिए सक्षम हो पाए। नीरजा माधव 'यमदीप' उपन्यास और प्रदीप सौरभ 'तीसरी ताली' उपन्यास के द्वारा इन सभी बातों को समाज के सामने लाने का कार्य करते हैं।

संदर्भ सूची

1) Thagard (Ph.d) paul, When dose consciousness begin?, Psychology today, January 11, (2019)
2) माधव नीरजा, किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय. ए.बी.एस. पब्लिकेशन- वाराणसी , प्र.सं-2019, पृ.सं-93
3) माधव नीरजा, यमदीप.सुनील साहित्य सदन, प्र.सं-2018, पृ.सं-6
4) वहीं, पृ.10
5) माई मनीषा.महंत और मिलन बिश्नोई की बातचीत, milanbishnoi.blogspot.com, 23 sep. (2019)
6) माधव नीरजा, यमदीप.सुनील साहित्य सदन, प्र.सं-2018, पृ.सं-47
7) वहीं, पृ. -287
8) वहीं, पृ.-150
9) वहीं, पृ.- 287-288

10)त्रिवेदी (डॉ) सुनील कुमार, भारतीय वङ्ग्मय और हिजड़ा समुदाय. जनकृति अंतराष्ट्रीय पत्रिका, थर्ड जेंडर विशेषांक, अगस्त-2016

11)भीष्म महेंद्र, किन्नर भी इंसान है! थर्ड जेंडर विमर्श, सं-शरद सिंह. भारतीय पुस्तक परिषद, नई दिल्ली, (2019), पृ.सं-45

12)सौरभ प्रदीप, तीसरी ताली. वाणी प्रकाशन, प्र.सं-2018, पृ. सं-96

13)अरोड़ा सुधा, समलैंगिक और थर्ड जेंडर सहानुभूति के साथ स्वीकृति की जरूरत, थर्ड जेंडर विमर्श, सं-सिंह शरद. भारतीय पुस्तक परिषद, नई दिल्ली, (2019), पृ.सं-100

उपसंहार

साहित्य के द्‌वारा समाज में घटित उन सभी पक्षों का चित्रण किया जाता है। समाज में पितृसत्तात्मक समाज को वर्तमान समय में भी उतना ही महत्वपूर्ण माना जाता है जितना की पुरातन काल में माना जाता था। प्राचीन काल के इतिहास से ही स्त्री एवं पुरुष के उत्पत्ति का पता चलता है। पुरुष अपनी वंश को बढ़ाने के लिए यौन संबंध बनाने लगा। स्त्री को अगर पुत्र हुआ तो उसे अच्छा सम्मान दिया जाता है और अगर किसी स्त्री ने पुत्री को जन्म दिया तो उसे कमजोर माना जाता था। इसी के विपरीत लिंग अस्पष्ट होने वाले नपुंसक बच्चों को कभी समाज में उतना सम्मान नहीं दिया गया था।

हमारे प्राचीन इतिहास में किन्नर समुदाय के बारे में ग्रन्थों में लिखा गया है, जैसे पुराणों में उनका उल्लेख ‘दैवी गायक’ माना जाता था। उनको वैदिक ऋषि कश्यप की संतान माना जाता था जो ऋग्वेद के सप्तर्षियों से एक माने जाते थे। उनको हिमाचल के निवासी माना जाता था। इसी तरह वायु पुराण में उन्हें अश्व मुखों के पुत्र माना गया था। इसी से उनके प्राचीन काल में उल्लेख मिलता है और साथ ही ‘महाभारत’ एवं ‘रामायण’ जैसे धार्मिक ग्रन्थों में उनका काफी अच्छा स्थान देखने मिलता है। इसके उपरांत मुगलकाल एवं ब्रिटिश काल में उनका चित्रण मिलता है। इन कालों में इस समुदाय के लोगों को सम्मान दिया जाता था और उनपर मुगल शासकों द्‌वारा अपने रानी के सेवा के लिए रखा जाता था, किन्तु वर्तमान समय में उनकी हालत बदत्तर बन गई है।

21 वीं सदी के प्रारम्भ में ऐसे हाशिया परक समुदाय के अस्तित्व के लिए आवाज उठाने के लिए विमर्शों की शुरुआत की गयी, जैसे की स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, दिव्यांग विमर्श, वृद्‌ध विमर्श, पर्यावरण विमर्श और किन्नर विमर्श आदि। ‘किन्नर विमर्श’ की शुरुआत भी इन्हीं विमर्शों के साथ हुई थी। साहित्य के क्षेत्र में इस हाशियाकृत समुदाय पर उपन्यास विधा में कई सारे लेखकों ने अपना योगदान दिया है,

जैसे नीरजा माधव द्वारा कृत 'यमदीप' , महेंद्र भीष्म द्वारा कृत 'मैं पायल' और 'किन्नर कथा', अनुसुइया त्यागी का 'मैं भी औरत हूँ' , प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली', निर्मला मुराडिया कृत 'गुलाम मंडी', चित्रा मुद्गल कृत 'नाला सोपारा पोस्ट बॉक्स नं.203', भगवंत अनमोल कृत 'जिंदगी 50-50' आदि। इन उपन्यासों में थर्ड जेंडर लोगों के प्रति संवेदना, नैतिकता, करुणा, मातृत्व, स्वाभिमान आदि भावों का चित्रण किया है। उन्हें संवैधानिक अधिकार प्राप्त करवाए हैं।

विश्व भर में थर्ड जेंडर को LGBTQ के अंतर्गत रखा जाता है। थर्ड जेंडर पर रचे गए साहित्य में उनके संविधान द्वारा न्यायालय में दिये गए हक को समाज के लोगों को अवगत कराया गया है। थर्ड जेंडर के साथ समलैंगिक समुदाय के लोगों के हित के बारे में भी इन उपन्यासों में प्रकाश डाला है। सबसे पहले हिजड़ा समुदाय पर उपन्यास लिखने वाली लेखिका नीरजा माधव है, जिन्होंने किन्नरों के प्रति समाज में संवेदना जगाने का कार्य किया है। वे 'यमदीप' उपन्यास के माध्यम से समाज में हिजड़ा समुदाय के असली चेहरे को सामने लाती है और समाज में उनकी पहचान बनाने की कोशिश करती है। इसी के नौ-दस साल बाद प्रदीप सौरभ ने अपने 'तीसरी ताली' में उनके सत्य को तथ्यों के साथ समाज में उनकी सच्चाई बताते हैं। इन दोनों उपन्यासों में 'किन्नर चेतना' को रचनाकारों ने समाज के सामने लाया है।

'यमदीप' (2002) उपन्यास में नीरजा माधव ने नाज़बीबी के माध्यम से हिजड़ा समुदाय के धंधे का चित्रण किया है। किन्नर समुदाय की नाज़बीबी और छैल बिहारी (छैलू) पढ़े-लिखे होते हुए भी उन्हें अपने परिवार को त्यागना पढ़ता है। उनमें पैदा राष्ट्रीय चेतना देखने मिलती हैं जहाँ वे हिजड़ा होते हुए भी पगली के बच्चे को पूरे निष्ठा और नैतिकता के द्वारा अपनाते हैं। वहीं नाज़बीबी अपने आप को एक जागरूक नागरिक होने का जज्बा रखती है और वह राजनैतिक क्षेत्र में जाकर समाज में बदलाव लाने की चेतना को अपने अंदर निर्माण करती है। वहीं अपने स्वार्थ की चिंता न करते हुए वह पगली की बेटी सोना की परवरिश अच्छे से

कर उसे पढ़ाने तक का साहस अपने आप में पैदा करती हैं। साथ ही थर्ड जेंडर के लोगों की गुरु शिष्य-परंपरा का भी चित्रण किया है। उनके गुरु द्वारा सिखाये गये अनुशासन को समाज में पहुंचाया जाता है। उनकी संस्कृति की भी झलक इन उपन्यासों द्वारा वर्णित की है।

प्रदीप सौरभ एक पत्रकार होने के नाते तृतीय लिंगी समुदाय से उनका हू-ब-हू संबंध बना था। उन्होंने इस समुदाय को करीब से जाना है। इसी के सहारे उन्होंने अपने दूसरे उपन्यास 'तीसरी ताली' में हिजड़ा समुदाय के विभिन्न समस्याओं को समाज के सामने लाया है और साथ ही उनका मुख्य उद्देश्य उन्होंने अलैंगिक समुदाय के रीति-रिवाजों एवं उनकी संस्कृति को बड़े अच्छे से चित्रित किया है। वे गौतम साहब एवं आनंदी आंटी के द्वारा एक अलिंगी बच्चा पैदा होने पर माता-पिता पर गुजरी परेशानी को स्पष्ट करते हैं। उन्होंने विनीत उर्फ़ विनीता के द्वारा घर से बेदखल होते हुए भी समाज में नाम बनाने की चेतना को उत्पन्न करते हैं। वे इस समुदाय के अधिकारों की बात करते हैं। समलैंगिक समुदाय के लोगों द्वारा अपने अस्तित्व को समाज में अपनाने की चेतना को भी यहाँ दिखाया है। हिजड़ा समुदाय के लोगों के प्रेम संबंध एवं उनके द्वारा अपने परंपरा को जारी रखने की चेतना का भी चित्रण किया है।

संदर्भ सूची

- **आधार ग्रंथ**

1. माधव, नीरजा. यमदीप. सुनील साहित्य सदन,नई दिल्ली, (2018)
2. सौरभ, प्रदीप. तीसरी ताली. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. संस्करण. 2018.
3. भीष्म, महेंद्र. किन्नर कथा. अमन प्रकाशन,कानपुर, च. संस्करण. 2020.
4. भीष्म, महेंद्र. मैं पायल. अमन प्रकाशन, कानपुर, (2016)
5. त्यागी,अनुसूया. मैं भी औरत हूँ. मनोज प्रकाशन, (2019)
6. मुद्गल, चित्रा. पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा सामयिक पेपरबैक्स,नई दिल्ली, (2018)

- **सहायक ग्रंथ**

1. माधव, नीरजा. किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय. ए.बी.एस.पब्लिकेशन, वाराणसी, प्र. संस्करण.2019
2. बिश्नोई, मिलन.'मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी' में किन्नर-विमर्श. विद्या प्रकाशन,कानपुर, (2018)
3. प्र.सं. चौहान (डॉ.) बिन्द कुमार. किन्नर विमर्श शिक्षा¥, समाज और साहित्य. संपादक. पासी ,संगीता कुमारी, चौहान,जैनेन्द्र. हंस प्रकाशन,नई दिल्ली, (2022)
4. नारायण,प्रियंका. किन्नर सेक्स और सामाजिक स्वीकार्यता. वाणी प्रकाशन, प्र. संस्करण.2021
5. सं.मेहरा,(डॉ.) दिलीप. हिन्दी साहित्य में किन्नर जीवन. वाणी प्रकाशन, (2019)
6. गुप्ता,(डॉ.) कुमार आशीष, प्रकाश, (डॉ.) चंद्र, गुप्ता,(डॉ.) कुमार बृजेश. किन्नर हाशिए का जीवन. सन्मति प्रकाशन, प्र. संस्करण.2020
7. मिश्र, शम्भू नाथ. उपन्यास और हिन्दी आलोचना. के.के. पब्लिकेशन्स, (2022)

8. मिश्र, रामदरश. हिन्दी उपन्यास एक अंतर्यात्रा. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 1968, दू.आ, 2008
9. कुमारी,पार्वती. 'तीसरी ताली': किन्नर समाज. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. संस्करण. 2019
10. वर्मा, भगवतीचरण. साहित्य के सिद्धान्त तथा रूप. राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, प्र. संस्करण.1976, आ.(1998)
11. गुलाबराय, बाबू. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास. सं. विश्वंभर (प्रो.)'अरुण'. प्रकाशन लक्ष्मीनारायण अग्रवाल- आगरा, चौ. संस्करण.2009
12. झाल्टे (डॉ.) दंगल. उपन्यास समीक्षा के नए प्रतिमान. वाणी प्रकाशन, प्र. संस्करण.1987
13. Edit. Cornwell, John. Consciousness and Human Identity. Oxford university press(1998)
14. Second edition. Connell, Raewyn. Gender in world perspective. Polity press(2009)
15. नेगी, डी. एम. गोलदार, किन्नौर आदिवासी संस्कृति के आर्थिक आधार। सतलुज प्रकाशन, प्र. संस्करण. 2014

- **शब्दकोश**

1. मु. लेखक:आपटे, वा. गो. , वि.भावे. ह. आ. विस्तारित शब्दरत्नाकर, वरदा प्रकाशन,(April 2014)
2. Bhide, D. Prabhakar, Konkani-English illustrated Dictionary. Rajhauns vitaran, publication:1999

3. Oxford English Mini Dictionary, Oxford University Press, seventh edition.
4. सं. बाहरी, (डॉ॰) हरदेव. राजपाल हिन्दी शब्दकोश, राजपाल एंड संज, दिल्ली, (2009)

- **यूट्यूब**

1. https://youtu.be/UNFWQshw52U?si=5oap3ncBfj8V_dPE (नीरजा माधव का साक्षात्कार)
2. https://youtu.be/ISS5Dc2fGLs?si=8YROaO80dVD4Eple (प्रदीप सौरभ का साक्षात्कार)

<u>परिशिष्ट</u>

साक्षात्कार- डॉ. मिलन बिश्नोई

1. किन्नरों का समाज में क्या स्थान है? उन्हें जो प्राचीन काल में जो सम्मान मिलता था क्या वह उन्हें फिर से प्राप्त होगा?

जवाब: यदि एक क्षण के लिए केवल मुझसे पूछेंगे तो मैं कहूँगी कि उनका स्थान भी मेरी तरह सामान्य इंसान की भाँति है । जबकि आप समाज के विस्तृत फलक पर किन्नरों का समाज में शैक्षणिक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक सुविधाओं के दृष्टिकोण से पूछेंगे तो मैं कहूँगी किन्नरों का स्थान आज भी मानवीय दृष्टिकोण से अत्यधिक पिछड़ा हुआ है। इसके पीछे कई कारण छिपे हुए है। जिनकी वजह से निर्दोष किन्नर समुदाय के लोग पिछड़ेपन का दंश झेल रहे हैं । बात प्राचीन काल की करें यानी आदिम काल से लेकर जब तक मातृशक्ति कर्ता-धर्ता थी तब तक हम किसी महिला, पुरुष या किन्नर के साथ अन्याय होते हुए नहीं देखते ।

जैसे-जैसे कृषि और उद्योग धंधों का प्रचलन अधिक बढ़ा था, वैसे-वैसे मातृशक्ति को शारीरिक कमजोरी का दर्जा देते हुए भारी-भरकम काम धंधों से लेकर बाहरी जिम्मेदारियां को पुरुषों ने निभानी शुरु कर दी थी । महिलाओं को घरेलु जिम्मेदारियाँ सौंपकर उसे अबला बना दिया गया था । क्रमशः भारत में अनेकानेक

प्रकार के आक्रमणकरने वाली बाहरी शक्तियों ने भारतीय संस्कृति और भारतीय पारिवारिक संगठनों को भी पंगु बनाते हुए किन्नरों को नकारा घोषित करवाया है । किंतु वक्त का पहिया ठहरता नहीं है, आज भारतीय किन्नरों ने अपनी आंतरिक शक्तिस्वरूपा के बल पर समाज में अस्तित्व की लड़ाई जारी करके सम्मान हासिल करने का बेहतरीन प्रयास किया है । मैं समझती हूँ प्राचीन और पौराणिक काल में जो उन्हें मानवीय सम्मान मिलता था वैसा ही सम्मान यह समुदाय अपनी अच्छाईयों के बलबुते पर प्राप्त करेंगे ।

2. किन्नरों के व्यवसाय के बारे में आपका क्या कहना है?

जवाब: किन्नरों के पास व्यवसाय या जमीन जायदाद होती तो शायद हमें इस विषय पर बात करने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी । किन्नर समुदाय ने निस्वार्थ भाव से केवल आशीर्वाद और बधाई देने का काम किया है । इसे आप चाहे तो इनका मुख्य पेशा या व्यवसाय कह सकती है। और इसके बदले में सोकॉल्ड सभ्य ने उन्हें असभ्य भाषा में तिरस्कार ही किया है। समाज के लोग बच्चों के जन्मोंत्सव या मंगल कार्य के शुभ दिन पर कुछ पैसा , अनाज और कपड़े देकर इन्हें जाने के संकेत देते हैं। आजादी के अमृत महोत्सव में किन्नर समुदाय कुछ जागरूक किन्नर समुदाय के लोग मेक इन इंडिया की तर्ज पर अपना-अपना स्टार्टअप कर रहे है किंतु ध्यान रहे इनकी संख्या गिनती की है । मैं तो कहना चाहूँगी कि बड़ी शिद्दत के साथ इनको आगे शिक्षा और व्यवसाय में आगे बढ़ना चाहिए । बधाई और

आशीर्वाद इनका सांस्कृतिक पेशा है इसे करने में कोई बुराई नहीं है किंतु आज के इस बाजारीकरण के दौर में इन्हें आगे बढ़ना होगा ।

3. किन्नर समुदाय को प्राचीन काल में शिक्षा प्राप्त करने का कोई हक नहीं था तो क्या आधुनिक काल में किन्नर शिक्षा प्राप्त करने के लिए सक्षम है?

जवाब- आधुनिक काल में किन्नर शिक्षा प्राप्त करने में बेशक सक्षम है। किंतु समाज और सरकार अक्षम है इसलिए आज भी अधिकांश किन्नर शिक्षा और मानवीय मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित है । वर्तमान समय में यदि आप देखें तो शैक्षणिक, राजनैतिक, सामाजिक पदों पर किन्नर समुदाय के लोग सुशोभित हो रहे हैं तो उनकी सक्षमता पर कोई ही शक नहीं है । मेरे ऐसे कई परिचित किन्नर युवा है जो घर-परिवार से निकाल दिए गए है किंतु उन्होंने स्वयं अपने अस्तित्व को स्थापित किया है और अपने समाज को जागरूक कर रहे हैं । वर्तमान समय में समाज को मानसिक रूप से सक्षम होने की अति आवश्यकता है । यदि वे अपने अलैंगिक बच्चों अपना लेंगे और अच्छी शिक्षा देंगे तो सक्षमता का सवाल ही नहीं रहेगा।

4. किसी परिवार में अगर कोई किन्नर बच्चा पैदा होता है तो उसके माता-पिता द्वारा उसे क्यों नहीं अपनाया जाता है?

जवाब: मुझे ऐसा लगता है कि सामाजिक दबाव और मानसिक कमजोरी के कारण अपनाने में हिचकिचाते हैं | यदि आप अधिकांश ऐसे बच्चों के केस में देखे तो माता अपने अलैंगिक बच्चे को बचाने का बहुत प्रयास करती है क्योंकि वह मानसिक रूप से अधिक सक्षम है| परन्तु पिता सामाजिक रूप से जिम्मेदार मानते हैं इसलिए ऐसे बच्चों के साथ बहुत अधिक रूढ़ व्यवहार करते हुए उसे प्रताड़ित करते हैं | सरकारें जिस प्रकार बेटी बचाओ, मतदान जागरूकता जैसी योजना चलाती है, तो मुझे लगता है सरकार को समाज में लैंगिक जागरूकता को बढ़ावा भी देना चाहिए | माता-पिता बनने से पहले प्रत्येक दाम्पत्य जोड़ी और सामुदायिक परिवार को कांउसलिंग देनी चाहिए | जबकि हमारे यहां तो सामाजिक दबाव इतना है कि शादी के एक साल के अंदर समाज को खुश-खबरी देनी पड़ती है वरना परिवार के लोग कहते हैं समाज क्या कहेगा ....उसमें भी लड़की हो जाती है तो भी निराश हो जाते हैं तो किन्नर बच्चों को अपनाने के लिए तो सुदृढ़ मानसिकता की आवश्यकता है|

5. अगर आपने किसी किन्नर को देखा है तो आपकी इसके प्रति क्या मानसिकता रही थी?

जवाब: अभी मेरी मानसिकता किन्नर के प्रति वैसी ही है जैसी मेरे भाई-बहनों के प्रति है | हाँ, जब छोटी या नासमझ थी, तब शायद मन में थोड़ा भय था क्योंकि मैंने उनके प्रति समाज के लोगों से केवल उनकी नकारात्मक कहानियां ही सुनी थी | जब में विश्वविद्यालय में थी और उनके बारे में पढ़ना और समझना प्रारम्भ

किया तब से मैं इनके प्रति अत्यधिक सकारात्मक और संवेदनशील हो गई । उसके बाद मैंने इन पर शोध किया और कई शोध आलेख लिखें । आपको सच कहूँ तो मेरे शोध के पश्चात् मेरे मित्र, मेरे परिवार और मेरे समाज के करीबी लोगों की मानसिकता में भी अत्यधिक बदलाव आय़ा है यानी वे लोग किन्नरों के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील भाव रखते हैं ।

6. आपने जो कृतियां पढ़ी उसमें किन्नरों की मुख्य समस्या कौन सी दिखी?

जवाब:मैंने सबसे अधिक 21 वीं सदी का कथा साहित्य पढ़ा है । उन सभी कृतियों में किन्नरों को पारिवारिक प्रताड़ना, सामाजिक तिरस्कार औऱ शारीरिक शोषण का सामना करना पड़ा है ।

7. सामान्य मनुष्य के तरह वे अपने समुदाय के लोगों का अंतिम संस्कार क्यों नहीं करते हैं?

जवाब: सच कहूँ तो मैंने किन्नरों को अंतिम संस्कार करते हुए कहीं नहीं देखा है । जबकि मैंने किन्नर आत्मकथाओं और किन्नर साहित्य में भी कुछ अलग पढ़ा है...जैसाकि आप उन तमाम भ्रांतियों को आप जानती है । किंतु मुझे लगता है कि इनका अपना श्मशान घाट नहीं है शायद इसलिए कुछ जगह ये लोग चोरी-छिपे शव को रात में दफनाने ले जाते होंगे । बाकी हर समाज में अपने-अपने विश्वास और अंधविश्वास है तो उसके अनरूप भी शायद इनके अपने अलग क्रिया-कर्म

होते होंगे । किंतु मैंने कुछ किन्नरों से साक्षात्कार लिया है तो उन्होंने इन तमाम भ्रांतियों को नकारा है ।

8. किन्नरों को समाज में हक मिले हैं, तो यह किस हद तक सफल साबित हुआ है?

जवाब: आज समय और समाज दोनों की जागरूकता में बदलाव देखने को मिल रहा हैं । परंतु यह बदलाव अभी भी बहुत सीमित दायरे में आप देखेंगे। जैसा की सरकार ने इनके लिए अधिकारिक रूप से नियम-कानूनों की रूपरेखा तो बना ली है किंतु वास्तविक रूप से सामाजिक धरातल पर उतनी सक्षमता के साथ लागू नहीं हुई है । समाज के लोग इन्हें केवल संवेदनात्मक दृष्टि से देखने लगे हैं किंतु समानता का हक आज भी नहीं दे रहे हैं । उदाहरण के रूप पासपोर्ट, आधार कार्ड, जन आधार, मतदान पत्र तथा अन्य रजिस्ट्रेशन कागजातों में मेल, फिमेल और अन्य का कॉलम तो देखने को मिल रहा है। किंतु कोई सहपाठी, भाई-बहन, व्यवसायिक मित्र के रूप व्यापक फलक पर स्वीकृति देते हुए दिखाई नहीं दे रहे हैं । यह सामाजिक असमानता की दूरियों का दायरा किन्नर समुदाय के लोगों को भी मिटाने के लिए अधिक मेहनत करने की आवश्यकता है और जिन परिवारों में ऐसे

बच्चे पैदा होते है, उन माता-पिता को भी अपने बच्चों को सामाजिक हक दिलाने के लिए निडरता के साथ आगे बढ़ना पड़ेगा ।

9. किन्नरों को अपना लिंग परिवर्तन करने पर सामान्य स्त्री की तरह दर्जा दिया जाता है? (स्पष्टीकरण दे)

जवाब:सबसे पहले किन्नर स्वयं अपने अंतर्मन के अनुरूप अपनी लैंगिकता को स्वीकार करें । दुनिया चाहे किसी भी नजर से देखें किंतु उसे स्वयं को मानसिक रूप से सुदृढ़ बने रहने की अत्यधिक आवश्यकता होती है ।

10. किन्नरों को समाज में स्थान मिलने के लिए साहित्य महत्वपूर्ण साबित हो सकता है?

जवाब:आपने बहुत अच्छा सवाल पूछा है, मैं समझती हूँ कि जितना अंधेरे को मिटाने के लिए दीपक का उजाला महत्वपूर्ण साबित होता है ।

ATMANIRBHAR BHARA
SWAYAMPURNA GOA

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय – ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 20
Tel : +91-866960904
Email : registrar@unigoa.ac.i
Website : www.unigoa.ac.i

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/235

Date: 3/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Ishita Pradeep Mayekar, a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 18 hours & 40 minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Ms. Sweta Prasad Govekar .

3/5/24

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY LIBRARY GOA

Harmal Panchakroshi Shikshan Mandal's

GANPAT PARSEKAR COLLEGE OF EDUCATION

Vidya Sankul, Bhom Plateau, Harmal, Pernem - Goa 403 524

(Affiliated to Goa University, Recognised by NCTE)

ganpatparsekareducation@hotmail.com w.w.w.ganpatparsekarcollegeofeducation.com 7498332462 (Principal), 8459145394 (Office)

Ref No :- GPCOE/2023-24/1566 . Date:- 03/05/2024

ATTENDANCE CERTIFICATE

This is to certify that, Ms. Ishita Pradeep Mayekar, Student of MA Part II(Hindi) from Shenoi Goembab School of Languages & Literature, Goa University has visited our college library to complete her internship to carry out dissertation work.

She has successfully completed total 10 hours 41 minutes in our college library for three saturdays as a part of her dissertation.

(Dr. Pandurang Pandit)
Officiating Principal